ओ३म्

# जन-ज्ञान (मासिक)

अगस्त 1996

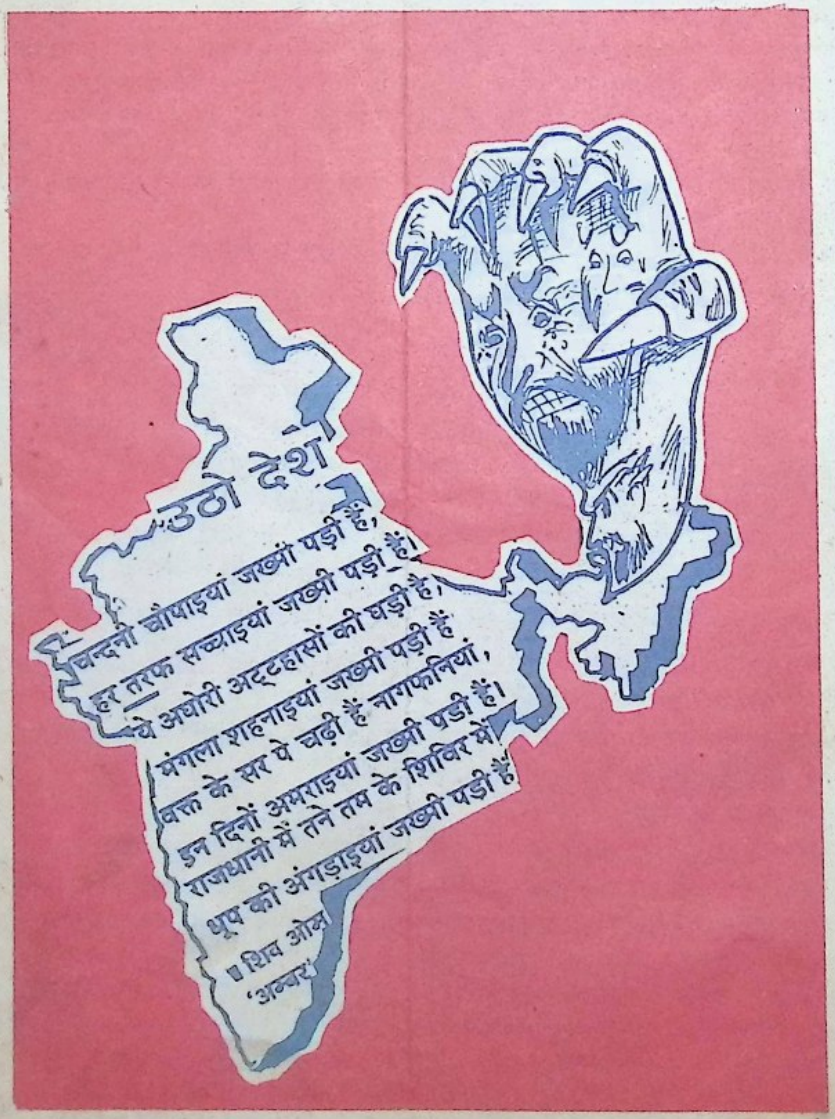

## दयानन्द संस्थान द्वारा संचालित महात्मा वेदभिक्षुः ग्रन्थमाला
## सस्ता साहित्य प्रचार योजना

हमें चाहिए ऐसे एक हजार सहयोगी जो एक बार एक हजार रुपया प्रदान करें। हमारी इच्छा है कि गीता प्रैस गोरखपुर के समान सस्ते सुलभ मूल्य पर वैदिक ग्रंथ और धर्मरक्षक साहित्य देश के हर ग्राम, नगर और घर-घर तक पहुंचे। आपके द्वारा प्रदान की गई राशि से हम अपनी इस योजना को सफलता के द्वार तक पहुंचा सकेंगे। इस प्रकाशन योजना के अन्तर्गत प्रकाशित हो सकेंगे ऐसी अनेक दुर्लभ पुस्तकें जो अब अप्राप्य हैं।

इस योजना का शुभारम्भ हम "जनज्ञान' के पांच सहयोगियों द्वारा प्रदत्त राशि से कर रहे हैं। आर्य जनता, हिन्दुत्वनिष्ठ श्रेष्ठिजन, सामाजिक कार्यकर्ता बन्धु और देव दयानन्द तथा अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द एवं स्वातन्त्र्य वीर सावरकर व देवता स्वरूप भाई परमानन्द के दर्शन और विचारों का प्रचार और प्रसार ही इस योजना की प्रेरणा है।

अमर हुतात्मा पं० लेखराम की शताब्दी के इस वर्ष में "जनज्ञान" उनके दिशा-निर्देश को व्यवहार में लेकर यह योजना प्रारम्भ कर रहा है।

आपका सहयोग मंहगाई के महारोग से रक्षा करने में योगदान देगा और आपको आज की मंहगाई के इस युग में भी सुलभ मूल्य पर सत् साहित्य प्राप्त हो सकेगा।

हमारा आपसे इस पावन उद्देश्य की पूर्ति हेतु योगदान का आह्वान है। विश्वास है आप ध्यान देंगे। स्वयं सहयोग करेंगे और अन्य समर्थ सहयोगियों को प्रेरित करेंगे।

**आपके एक हजार : करेंगे दुर्लभ साहित्य का उद्धार**

सहयोग राशि निम्न पते पर भिजवाइए

राकेश रानी, अध्यक्ष

*(वेदभिक्षुः ग्रन्थमाला सस्ता साहित्य प्रचार योजना)*

**दयानन्द संस्थान**

२२८६, आर्य समाज मार्ग, नई दिल्ली-११०००५, दूरभाष : ५७२४७४१

## "जन-ज्ञान" प्रसार अभियान में योगदान ऋषि भक्तों-हिन्दुत्वनिष्ठों से आह्वान

- 'जनज्ञान मासिक' मात्र एक पत्रिका ही नहीं अपितु आन्दोलन है।
- राष्ट्रद्रोही तत्वों के षड़यन्त्रों का भण्डाफोड़ और राष्ट्रभक्तों को सुस्पष्ट समर्थन ही हमारी नीति है।
- देव दयानन्द की विचारधार का प्रचार-प्रसार हमारा संकल्प है।
- "सत्य के अर्थ" का प्रकाश हमारा व्रत है।
- वैदिक संस्कृति और हिन्दुत्व की मानव कल्याणकारिणी विचारधारा के हम प्रसारक हैं।
- राष्ट्र की एकता और अखण्डता तथा सुरक्षा के लिए जन-जागरण ही हमारा कार्यक्रम है।
- "जनज्ञान" व्यवसायिक नहीं एक वैचारिक मासिक पत्रिका है। वार्षिक शुल्क ६० रुपये है। आजीवन ५०१ रु० है।
- अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन देकर हमारा सहयोग करें।

आपका सहयोग ही जनज्ञान का सम्बल है। हमारा आप सब कृपालु पाठकों से आह्वान है कि राष्ट्रनिर्माण के इस अनुष्ठान को गतिमान रखने के लिए अपने सहयोग का हाथ और बढ़ायें। जनज्ञान को घर-घर में पहुँचाकर वैदिक संस्कृति और हिंदुत्वनिष्ठा का प्रकाश फैलाएं।

**अपने नगर में जनज्ञान की एजन्सी स्थापित करें। नियम पत्र मंगाएं।**

२२८६ आर्य समाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली—११०००५

ओ३म्
# जनज्ञान
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
वेदो!
नई दिल्ली

हिन्दू राष्ट्र स्थापना हेतु संघर्ष करो

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

**कार्यालय**
2286 आर्य समाज मार्ग, करोल बाग,
नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 5724741

**प्रधान कार्यालय**
वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
लेखरामनगर (इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर
दिल्ली-36, दूरभाष : 7202249

**संस्थापक**
स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः

**सम्पादक**
**पंडिता राकेश रानी**
सह-सम्पादक, दिव्या आर्य
वार्षिक मूल्य - 60 रुपये
आजीवन - 501 रुपये
एक प्रति - 6 रुपये
विदेश में विमान से, 50 पौंड, 65 डालर
समुद्री डाक से 7 पौंड, 12 डालर
विदेश में आजीवन 5001 रुपये
अगस्त 1996 वर्ष 31 अंक 4

सम्पादकीय

## श्रावणी पर्व और रक्षा का बंधन

**भारत** पर्वों की धरती है और उत्सवधर्मी है भारतीय समाज। इन पर्वों में महत्त्वपूर्ण है श्रावणी का पर्व। सामाजिक ताने-बाने को दृढ़ता और अविभाज्यता प्रदान करने में महत्त्व है रक्षाबंधन का भी। श्रावणी पर्व पर वेद प्रचार भी आर्यजन का एक सुप्रतिष्ठित कार्य है। वेदज्ञान का प्रसारक है। ज्ञान अज्ञान का निवारक है। ज्ञान का प्रसार-प्रचार ही विद्वत्जन का सामान्य धर्म है। विद्वतजन को ही वैदिक वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मण के रूप में मान्यता प्रदान की है। इस वर्ग द्वारा ज्ञान का प्रचार ही मानव को वास्तविक अर्थों में मानव बनाता है। श्रावणी पर्व पर वेद प्रचार सप्ताह जैसे आयोजनों को मात्र वार्षिक औपचारिकता का निर्वाहन न बनाएं अपितु इसे अपनी दिनचर्या बनाइए यही अपेक्षा की थी आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने उन सबसे जो उनके पथ का पथिक बनने के दावेदार हैं। दयानन्द संस्थान ने चारों वेदों का हिन्दी भाष्य प्रकाशित कर महर्षि के आदेश को शिरोधार्य किया है। अब तक देश-विदेश में सहस्रों परिवारों के घर में पावन वेद ग्रंथों को पहुंचाने में आप सभी के सहयोग से हम सफल रहे हैं। अभावों, समस्याओं के घटाटोप भी हमारी राह रोक नहीं पाया है, क्योंकि हमारा कार्य हमारा ही नहीं आप सबका है। श्रावणी पर्व पर उन ग्रंथों को वेद की पावन ज्योति से आलोकित करने का संकल्प लीजिए जिनमें सत्य-ज्ञान की किरण अभी भी नहीं उमगाई है। रक्षा बंधन वह पावन पर्व है जब बहन द्वारा भाई की कलाई में राखी के धागे बंधते हैं। यह अवसर होता है बहन की रक्षा का व्रत लेने का। उसकी रक्षार्थ सर्वस्व समर्पण के सिद्धान्त का। राखी के पावन धागे अपने हाथों में बांधते समय हमें व्रत लेना होगा उस परम्परा की रक्षा का, जो मुंहबोली बहन को भी सहोदरा तुल्य समाद्धृत करने की प्रेरणा प्रदान करती है। व्रत लेना होगा उस पावन भारत वसुन्धरा का भी जिसमें यह परम्परा, यह संस्कृति उर्वरित हुई है। १५ अगस्त का स्वातन्त्र्य दिवस पर्व भी उसी भव्य भाव की स्मृति कराता है।

जन्माष्टमी का पावन पर्व भी आ रहा है। यह उस योगेश्वर श्रीकृष्ण की स्मृतियों से जुड़ा है, जिसने आदर्शों की रक्षा को जीवन का मर्म बताया था और कर्मयोग के महामंत्र को अग-जग में गूंजाया था। इन सभी दिवसों पर

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक : पंडिता राकेश रानी 2286 आर्य समाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-110005 द्वारा डीलक्स आफसेट प्रिन्टर्स 305/4 शहजादा बाग दिल्ली से मुद्रित एवं प्रकाशित

हम सब ज्ञान के प्रसार, राष्ट्रवाद के प्रचार, धर्म और स्वदेश की रक्षा और एकता तथा अखंडता एवं भगवान श्रीकृष्ण द्वारा प्रतिपादित आदर्शों के संरक्षण का सद् संकल्प ग्रहण करें और व्रत लें यही मेरी मंगलकामना है। प्रभु आपको धर्म संरक्षण की पावन भावना से प्रेरित करे और शक्ति प्रदान करे ताकि सफल हो आर्य जन के कोटि-कोटि कंठों से निनादित यह स्वर 'वेद की ज्योति जलती रहे।' 'दयानन्द संस्थान' और 'जनज्ञान' इस आह्वान के मुखर स्वर है। उनको आपका सम्बल मिले, वे वेद प्रचार और राष्ट्र जागरण का व्रत और अधिक तत्परता सहित निभाने में समर्थ हो सकेंगे यदि आपका सहयोग अर्थ के अभाव की व्याधि से उन्हें मुक्त रखने में भरपूर रहेगा।

## राष्ट्रभक्तों का टूटता सपना : कैसा बन रहा है भारत अपना?

एक वर्ष बाद स्वतंत्र भारत के इतिहास में वह पावन अवसर आएगा जब यह महान राष्ट्र स्वतंत्रता की वर्षगांठ मनाएगा। इस दृष्टि से इस वर्ष को स्वातन्त्र्य के स्वर्ण विहान स्वर्ण जयंती वर्ष का शुभारम्भ भी कहा जाएगा। इतिहास इस तथ्य को भी उजागर करता है कि अब से पचास वर्ष पूर्व ही सन् १९४६ में ब्रिटिश दासता के शासन काल का अंतिम आम चुनाव संपन्न हुआ था। उस चुनाव के लिए चले प्रचार अभियान के दौरान कांग्रेस के तत्कालीन नेता ने देखा कि एक से दूसरे छोर तक किए गए अपने प्रवास के दौरान अपने भाषणों में जनसाधारण को सुस्पष्ट शब्दों में एक आश्वासन यह भी प्रदान किया था कि एक बार जब सत्ता उनके और उनके दल के हाथ में आ जाएगी तो हर कालाबाजारी करने वाले को निकटतम स्थित बिजली के खम्भे पर लटका कर फांसी दे दी जाएगी।

कालचक्र की विचित्र विडम्बना है कि अब पचास वर्ष के उपरान्त जो दृश्य नजर आता है उसमें उसी कांग्रेस के सूत्रधार और उनके अन्य विश्वस्त जनों की नवल-धवल श्वेत चदरियां भ्रष्टाचार के आरोपों से सनी और प्रवंचना तक के इलजामों से चैनी है। स्वतंत्रता की अर्ध शताब्दी की जयंती अभी मनाई भी नहीं गई कि आज राष्ट्र मानस इस दृश्य परिदृश्य को निहार कर स्तम्भित है और आश्चर्यचकित है कि जनगण के भाग्य विधाताओं के क्रियाकलापों से यह राष्ट्र उस अवस्था में आ पहुंचा है कि जिसमें एकता और अखंडता तथा समरसता की राष्ट्र भक्तों द्वारा परिकल्पित धाराओं के स्वदेश में प्रवाहित होने के स्थान पर विघटन, विखंडन और कट्टरतावाद के त्रितापों से सारा राष्ट्र दग्ध है। लाल, बाल, पाल (लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चन्द्र पाल) ने विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा बंगभूमि के विभाजन के विरुद्ध प्रचंड जन आंदोलन को उभार कर एकता और अखंडता तथा समरसता की त्रिवेणी में इस देश को अवगाहन कराया था। पराधीनता के उस काल में ही यह धरा महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द और योगिराज अरविन्द सरीखे आध्यात्मिकता के साथ ही साथ राष्ट्रीयता का शंखनाद करने वाले पुण्यात्माओं के प्रेरक विचारों से प्रेरित हुई थी। उन्हीं के संदेशों ने जगाए थे पं० श्याम जी कृष्ण वर्मा, स्वातन्त्र्य वीर सावरकर और देवता स्वरूप भाई परमानन्द तथा लाला हरदयाल जैसे महान सपूतों में राष्ट्रभक्ति के भाव। उन्हीं की प्रेरणा से प्रेरित हुए थे रास बिहारी बोस, नेताजी सुभाष तथा आर्य पेशवा राजा महेन्द्र प्रताप जैसे वह क्रांतिदूत जिन्होंने विदेशों में जाकर भारतीय स्वातन्त्र्य समर को बल दिया था। राष्ट्र के प्रति अनन्य निष्ठा के भाव भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक और लाहिड़ी जैसे सपूतों को क्रांति पथ का पथिक बनाने में प्रेरक सिद्ध हुए थे। स्वतंत्रता को जीवन की साध मानने वाले मोहनदास करमचंद गांधी ने अनेक मोती और जवाहर चुने थे और उन्हें स्वातंत्र्य पथ का पथिक बनाया था। हम अपने देश में अपना राज, अपनी मान्यताओं से मंडित समाज देखेंगे, इसी आकांक्षा ने अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द तथा पं० मदन मोहन मालवीय और अनेक मनीषियों को आत्मोद्धार में संतोष मानने के स्थान पर भारत के हर इन्सान की पीड़ा को हरने हतु स्वातन्त्र्य समर में अवतरित होने और भारत माता को बंधन मुक्त कराने का बीड़ा उठाने को प्रेरित किया था। किन्तु आज राष्ट्र अलगाव और बिखराव की जिन प्रवृत्तियों से आप्लावित है, उनकी कल्पना तो उन्होंने कदाचित स्वप्न में भी नहीं की होगी।

विद्यमान स्थिति पर दृष्टिपात करते ही एक अद्भुत सा दर्दनाक नजारा दृष्टिगोचर होता है। सार्वभौम गणराज्य के सफल संचालन हेतु प्रभावी तंत्र का अभाव नजर आता है तो स्वस्थ राजनीतिक मूल्यों और मान्यताओं का खुलेआम उल्लंघन होता भी नजर आ रहा है। आतंक, हिंसा, लूट, बलात्कार और हठधर्मी तथा अपहरण जैसे कुकृत्य ही आज राष्ट्रीय जीवन का रोजनामचा बन गए हैं। 'हवाला प्रकरण' ने मेरूदंड विहीन राजनीतिज्ञों की आत्मा पर से पर्दा हटाया है तो भ्रष्टाचार में आकंठ डूबे राजनीतिक दलों की स्वार्थपरता से राष्ट्र के समक्ष सुरक्षा का संकट भी गहरा उठा है। घोटाले राजनीति का कंठहार बन रहे हैं। स्वदेश के संविधान में प्रस्तुत पंथ निरपेक्षता को कतिपय राजनीतिक दल मजहबी

## इस अंक में पढ़ें

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखकों की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णतः सहमत हो।)


श्रावणी पर्व और रक्षा का बन्धन १
*सम्पादकीय*
महात्मा वेदभिक्षु की अमर वाणी ४
सामयिक विचार
— मुलायम के सख्त तेवर ६
वैदिक चिन्तन ७
वैदिक भौतिकी : ऋत के परिप्रेक्ष्य में
*—डा० भारत भूषण विद्यालंकार*
यह देश स्वर्ग है मेरा ९
*—डा० एम०के० दुर्रानी*
क्रांतिकारियों के प्रेरणा स्रोत श्यामजी कृष्ण वर्मा १०
*—नरेन्द्र अवस्थी*
अमर हुतात्मा मदन लाल ढींगरा के अन्तिम क्षण १२
*—श्रीचन्द जैन*
विदेशी शासन का दम्भ चकनाचूर किया शहीद भगत सिंह ने १३
*—म०कु० आर्य*
विदेशों में "आजाद हिन्द सरकार" का गठन १६
*—मदन सिंह*
भारत माता के महान सपूत शीलभद्र यजी २०
*—डी०एन सिन्हा*
क्रांतिकारियों में राजकुमारी : प्रीतिलता २२
*—वचनेश त्रिपाठी 'साहित्येन्दु'*
गुरदास मल को बेटा का निशाना चूकने का अफसोस था २३
*—के०एल० जौहर*
क्रांति दूतों की नक्षत्र मालिका
*—दिव्या आर्या*
महान देश भक्त चन्द्रशेखर आजाद २९
*—मनमोहन कुमार आर्य*
गांधी के सपने और आज का भारत ३१
*—डा० सत्येन्द्र चतुर्वेदी*
मंथन : स्वतन्त्रता की स्वर्णजयन्ती के शुभारम्भ पर ३३
*—महेश महतो*
हास्य व्यंग—एक सरकार १४ भरतार ३५
*—मृदुला सिन्हा*
वैदिक धर्म की सनातन सार्वभौमिकता (२) ३७
*—डा० व०द०धवन*
चिन्तन मनन—अन्य कोई रास्ता नहीं? ४०
*—भगवान देव 'चैतन्य'*
पूजा किसकी और कैसे? ४३
*—जयप्रकाश शर्मा*
स्वास्थ्य चर्चा—गो मूत्र ने घातक रोगों से मुक्ति दिलाई ४४
*—मोहन लाल अग्रवाल 'बगड़िया'*
बाल जगत्—सौ, पांच और एक—सौ पांच ४५
*—तेग बहादुर गोतम*
समाचार दर्शन ४८


कट्टरतावाद के संरक्षण का पर्याय सिद्ध करने के अपने क्रियाकलापों के प्रदर्शन होड़ लगाते हुए प्रतीत हो रहे हैं। साम्प्रदायिकता का सर्वग्रासी अजगर चतुर्दिक अपनी फुंकारो में संलग्न है। मूल्य भ्रष्ट शासन, प्रशासन, विखंडनकारी, अराजकता की प्रेरक ताकतों के समक्ष साष्टांग दंडवत की कायरता दर्शा रहे हैं। चुनाव में वोट प्राप्ति की राजनीति नापाक गठजोड़ों और समझौतों के लिए राजनीतिक दलों को प्रवृत्त कर रही है। जातिं, मजहब, मत, पंथ और वर्ण तथा वर्ग के आधार पर बढ़ते वर्गीकरण को आरक्षण का 'फेवीकोल' अहर्निश-पुख्तगी प्रदान करने में महती भूमिका निभा रहा है। समाज और राष्ट्र जीवन को अप्रजातांत्रिक 'हल्ला बोल' और 'दूसरे तरीकों से निपट लेंगे' तथा 'सीधी कार्रवाई' जैसी धमकियों से आतंकित करने को राजनीतिक सफलता का महामंत्र जताने वाले राष्ट्र की रक्षा के पहरूए होने के मुखौटे धारण कर अपने 'सद्कर्मों' से कानून और व्यवस्था के मूल और चूल को ही हिला देने को आतुर हैं। भ्रष्टाचार में आकंठ डूबे अनेक जन प्रतिनिधि मर्यादा और शुद्धाचरण को गए बीत जमाने का लबादा बताकर चौराहे पर उतार फेंकने को आमादा हैं। समाज कंटक तत्त्व सारे देश को ही अपनी जागीर मानकर राष्ट्र के भविष्य की तस्वीर को विद्रूप करने में संलग्न हैं। अद्भुत सा दृश्य है। कभी सरकारें ठेकेदारों को विकास योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु दायित्व सौंपती थीं आज अनेक ठेकेदार ही सरकारों को भी ठेके पर चलाने जैसे भाव भंगिमा अपना रहे हैं। स्वतंत्रता के महायज्ञ में अपनी समिधा समर्पित करने वाले राष्ट्रभक्तों ने स्वदेशी, स्वसंस्कृति और स्वराज्य के साथ सुराज्य आने की कल्पना स्वतंत्र भारत के संबंध में अपने मन में सहेजी थी, किन्तु समाजवाद का अहर्निश शंखनाद करने वाले नरसिंहों ने भारत के बाजारों के सार्वभौमीकरण और बाजारीकरण की जो मन मोहिनी विद्या राष्ट्र को सौंपी, उस पर वे कर्णधार भी फिदा लगते हैं, जो कभी इन नीतियों को राष्ट्र के लिए विपदा बता रहे थे। जननीतियों का प्रतिफल उन्होंने राष्ट्र में बढ़ती निर्धनता और बेरोजगारी में खोजा था।

पचास वर्ष के इस कालखंड में राष्ट्र जीवन में आए ह्रास का चित्र विधायिका में अपने पूर्णाकार में 'शोभायमान' है। लोकतंत्र की सफलता हेतु संवैधानिक दायित्व के निर्वहन हेतु उत्तरदायित्वपूर्ण आचरण एक अनिवार्य विधा है, किन्तु वहां राष्ट्र की समस्याओं पर चिंतन और रचनात्मक सुझाव का अभाव दृष्टिगोचर होने लगा है। यह स्थिति लोकतंत्र

(शेष पृष्ठ ५ पर)

महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी

# मन : आह्वान : खोज : संतान की

मन बहुत चंचल है, निर्बल भी है और बली भी। उसके जीते जीत और हारे हार मिलती है। मन अनुपमेय है। वह अणु से अधिक सशक्त, विद्युत से अधिक वेगवान और धरती का निर्माता है। मेरा मन और आपका मन एक-दूसरे को बहुत शीघ्र पहचान लेते हैं। इसीलिये तो कहा है, मन चंगा तो कठौती में गंगा। इसी मन ने मुझे पागल बना दिया है। पता नहीं कहां क्या मिल गया है इसे कि यह जमीन पर नहीं रहता, आसमान की बातें करता है। असंभव को संभव करना चाहता है। युग के साथ चलने को तैयार नहीं, युग को बदलना चाहता है। मुझे इसकेकारण ही निरन्तर जागरूक रहना पड़ रहा है। यह मन मुझे ही नहीं उठा रहा औरों का भी आह्वान कर रहा है। जागरण के गीत गुंजाने के स्वर इसने छेड़ रखे हैं। इसकी शक्ति मुझे मथ रही है। यह सब सड़ा गला जर्जर मिटा देना चाहता है और करना चाहता है ऐसा निर्माण, जो इसके स्वप्नों के अनुरूप हो। आवाहन इसका स्वभाव है। कंपन इसका गीत है। प्रस्थान इसकी शक्ति और निरन्तर चिन्तन इसकी अभिव्यक्ति है। प्राणों के स्पंदन सुनने की सामर्थ्य सभी में उत्पन्न करने के लिए यह व्याकुल है। इसकी गति में निरन्तर तीव्रता आती जाती है और अबाध गति से अपने लक्ष्य के लिए इसका आवाहन गूंज रहा है। इस गूंज में खोज की भावना निहित है। खोज सत्य की, साधना की, जप की, उद्बोधन की और निरन्तर उभरते चरण में जय-वरदान की। शून्य में मोती खोज पाना आसान नहीं। जीवन में वरदान ढालना भी साधारण नहीं। फिर भी खोज सत्य विजय, जय के साधन की जारी है।

अपने मन के भाव पढ़ने में मैं भी तो असमर्थ रहा हूं। मैंने जब भी इसके साथ चलने का यत्न किया पिछड़ गया हूं। मेरा मन मुझसे बहुत आगे है। उसके सपने बहुत-बहुत ऊंचे हैं। एकता का स्वप्न, मानवता का स्वप्न, प्यार की मादक झंकृतियों का स्वप्न, युद्ध महानाश और घृणा-द्वेष की समाप्ति का स्वप्न, उसने देखा है और मुझे देखने के लिए झकझोरा है।

और अब तो मैं भी अपने मन के प्रभाव से ग्रस्त होकर उसका अनुचर बन गया हूं। मन मेरा मुझसे अधिक पवित्र है। इसलिए मैं उसकी भाषा से प्रभावग्रस्त हो अनेक व्यथाएं पाल चुका हूं। असम्भव कुछ भी वह मानता नहीं, झुकना उसे आता नहीं, बस विजय के लिए संघर्ष करना ही उसका स्वभाव है।

यह स्वभावलक्ष्य सिद्धि के लिए संतान चाहता है। संतान का अर्थ है—धारा—विस्तार, फैलाव, विचार-प्रवाह और एक ऐसा कल्पवृक्ष जिनके द्वारा मेरी चाह पूरी हो सके। लेकिन भाषा में संतान का अर्थ है पुत्र-पुत्री आदि। पर वस्तुतः संतान का अर्थ है वह शक्ति जो मेरे भावों को साकार करे। संतान नहीं, उत्तराधिकारी नहीं, मेरी कल्पनाओं को मूर्त रूप देने वाले व्यक्ति नहीं, इसलिए मैं घुट रहा हूं, रो रहा हूं, तड़प रहा हूं। सोचता हूं, इस जीवन से क्या लाभ? जब सपने ही अधूरे रह जाएं तो क्यों रहे यह देह।

मेरा आर्तनाद सुनने वाना कोई नहीं, मेरे मन तारों से निकले गीतों के अर्थ समझने वाला कहीं नहीं। अपने मन की बात सुनकर मैं पागल हो गया हूं और चाहता हूं, कि कोई मेरी बात सुने, समझे और मेरी संतान बनकर मेरी कल्पना का चित्र धरती को बनाए। भौतिक संगीत प्रबल है। मन के गीत दुर्बल, ऐसा मैं नहीं मानता, हां यह जानता हूं कि मेरे मन-गीत इस धरती पर सुनकर उनके भाव समझने की विद्या लुप्त है, सुप्त है। ज्ञान में अवरोध है भावना अबोध है। प्राण में अवमानना है और क्रिया निष्क्रिय है। गंगा की धारा में चांद की चांदनी की किरणें अगर अग्नि प्रज्वलित कर सकतीं तो आप आश्चर्य करेंगे पर मैं प्रसन्न हूंगा इसलिए कि यही सत्य है, यही तथ्य है, यही धर्म है, यही ज्ञान है। संतान चाहिए इसलिए कि मैं स्वप्न पूर्ति यज्ञ में उसकी आहुति दे सकूं। ४०० करोड़ जीवित आत्माएं मानव योनि में विचरण कर रही हैं। उनमें से एक दो भी मेरे मन की झंकृतियां सुन दौड़कर मेरे पास आ गयीं तो चिरनिन्द्रा में भी मैं जागरण के गीत गा सकूंगा। प्यार का अभिसार .. ....बलिदान का संकल्प मांग रहा है ... कौन भिक्षा देगा— प्रतीक्षा कर रहा हूं।

**भारतेन्द्र नाथ**

**(१२ दिसम्बर १९७६ साप्ताहिकजनज्ञान से उद्धृत)**

मान्य बन्धु!

सादर नमस्ते।

रक्षाबन्धन के पावन पर्व पर बहन की ओर से शुभकामनाएं। इस अवसर पर आपको अपने कर्त्तव्य का स्मरण करा आपका ध्यान "दयानन्द संस्थान" के कार्यों की ओर भी आकृष्ट करा रही हूं।

महात्मा वेदभिक्षुः द्वारा स्थापित दयानन्द संस्थान लगभग तीस वर्षों से संचालित वेद प्रचार अभियान और धर्म रक्षक साहित्य तथा "जनंज्ञान मासिक" के माध्यम से धर्म और हिन्दुत्व के जागरण में रत है। विरोधी पक्ष राष्ट्रवाद की धारा को अवरुद्ध करने में लगा है। हिन्दू स्वदेश में ही उपेक्षित और कई दृष्टियों से दूसरी श्रेणी का नागरिक बन कर रह गया है। पंथ निरपेक्षता का स्वस्थ विचार अल्पसंख्यक तुष्टिकरण का पर्याय बन गया है और मानव हित रक्षण के नाम पर विदेशी घुसपैठियों का समर्थन करने वाले 'उदारमना' हिन्दू समाज के उपेक्षित वर्गों के धर्मान्तरण पर मौन हैं।

इन जटिल परिस्थितियों में राष्ट्र जाग्रति के अभियान को सशक्त करने की आवश्यकता और अधिक बढ़ी है। "दयानन्द संस्थान" और "जनज्ञान मासिक" अपनी पूरी शक्ति से अभावों और अभियोगों की आन्धी झेलकर भी सतत संघर्षरत है। आपसे अनुरोध है कि रक्षा बन्धन के पुनीत पर्व पर अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर अपने इस संस्थान को सबल बनायें जिससे विदेशी आचरण, चिन्तन और सांस्कृतिक प्रदूषण से राष्ट्र को मुक्त कर वैदिक चिन्तन तथा प्राचीन सांस्कृतिक विचारधारा की सुरक्षा करने में हम सफल हो सकें।

विश्वास है कि रक्षाबन्धन के दिन अपनी कलाई में राखी के धागे को बांधते समय इस राष्ट्र रक्षा यज्ञ में मुक्तहस्त से अधिकाधिक आर्थिक सहयोग की समिधा समर्पित कर हमारा उत्साह बढ़ायेंगे। प्रभु समस्त परिवार पर सुख और ऐश्वर्य की वर्षा करें।

मंगल कामनाओं के साथ।

आपकी बहन।
राकेश रानी
अध्यक्ष

*(पृष्ठ ३ का शेष)*

भविष्य पर गहरी विषाद रेखाएं खींचती सी प्रतीत हो रही है। आज लोकतंत्र में लोक और लोकहित की उपेक्षा ही युगकर्म बन गयी है। कार्यपालिका भी कई बार कर्णधारों के उचित-अनुचित दबावों से आहत-मर्माहत सी दृष्टिगोचर होती है। इन्हीं परिस्थितियों का प्रतिदान है कि न्यायपालिका को अनेक बार हस्तक्षेप करने पर बाध्य होना पड़ रहा है। जब संवैधानिक संस्थाएं संविधान सम्मत दायित्वों के निर्वाह और निष्पादन में सकुचाती नजर आती हों, जब नागरिकों के अभाव-अभियोगों से जनहित के अनेक अलम्बरदार मुंह फेर लेने को ही 'सफल व्यवहार' का पर्याय मानने लगे हों, जब स्वार्थान्ध राजनेता, प्रशासक और समाज के हितरक्षक अपनी-अपनी सुख-सुविधाओं की सुरक्षा में ही राष्ट्र के विकास वरक्षा का आभास लेने लगें तो समस्याओं से संतप्त जन साधारण को न्याय की प्राप्ति हेतु न्याय मंदिरों के द्वार पर दस्तक देने का ही पथ अपनाना पड़ता है। उस स्थिति में न्यायपालिका की सक्रियता में वृद्धि ही सहज और स्वाभाविक नियति है। आज भारत के खंड-खंड होते हुए से लगते तंत्र में न्याय के मंदिरों की ओर राष्ट्रजन का निहारना अनेक सुधिजन को अखर रहा है। पांच दशक के स्वातन्त्र्य काल की उपलब्धियों के ग्राफ में अंकित हो रही हैं भग्न आशाएं, सलीब पर टंगने लगे हैं उन महान् हुतात्माओं के सपने जिन्होंने हंसते-हंसते वध स्तम्भों पर फांसी की रेशमी डोर चूमकर अपनी काया राष्ट्र यज्ञ में समर्पित की थी। कौन उबारेगा, इस निराशा के गहन तिमिर से इस राष्ट्र को। यह प्रश्न स्वातन्त्रता दिवस के इस पावन अवसर पर अनेक जन के मन को उद्विग्न कर रहा है। किन्तु उस उद्विग्नता में ही निहित है प्रकाश की वह किरण, जो इस समग्र राष्ट्र को अपने आलोक से आलोकित करेगी। हमारा यह विश्वास कपोल कल्पना नहीं अपितु अपने इतिहास के पृष्ठावलोकन का प्रतिफल है। क्योंकि ऐसे निराशा के अनेक दौर इस सहस्रों वर्षों के इतिहास में उभरे हैं। जिन्हें चुनौती देने वाले कालजयी बेटे भी इसी भारत भूमि में जन्मे हैं। **असतो मा सद्गमय** ही इस देश के कण-कण में निनादित शाश्वत स्वर है और उज्ज्वल भविष्य। ❑

सामयिक-विचार

# मुलायम के सख्त तेवर

विपक्ष के नेता अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा कि संयुक्त मोर्चा सरकार के अंतर्विरोध तेजी से बढ़ रहे हैं। अगर यह इसी तरह जारी रहा तो सरकार गिरने में ज्यादा देर नहीं लगेगी। संयुक्त मोर्चा सरकार के शुभचिंतकों को श्री वाजपेयी का बयान राजनैतिक लग सकता है। वे कह सकते हैं कि इस बयान में परिस्थितियों का मूल्यांकन कम और श्री वाजपेयी की दलीय इच्छा ज्यादा जाहिर हो रही है। लेकिन इसका क्या करेंगे जब संयुक्त मोर्चा सरकार के गृहमंत्री अपनी सरकार का आकलन करते हुए यह बयान देते हैं कि यह सरकार नितांत असंगठित है। ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो गृहमंत्री के इस चिंताजनक आकलन को उनकी निजी राय कह कर संयुक्त मोर्चा सरकार को सुव्यवस्थित और शक्तिशाली वता सकते हैं। लेकिन संयुक्त मोर्चा सरकार के आंतरिक कलह का जो विरूप सामने आ रहा है उससे तो यह बात सामने आ ही गई है कि सब कुछ सहज ढंग से नहीं चल रहा है। कम्युनिस्ट पार्टी के इन्द्रजीत गुप्त के साथ खुले तौर पर और समाजवादी पार्टी के मुलायम सिंह के साथ छिपे रूप में प्रधानमंत्री के संघर्ष के मुद्दे अब सर्वविदित हैं। संयुक्त मोर्चा सरकार और उसके घटक दलों के बीच तनाव का सबसे बड़ा मुद्दा यह है कि वे एक संयुक्त सरकार में रहते हुए अपने-अपने दलीय प्रभाव का विस्तार भी करना चाहते हैं। विडम्बना तो यह है कि कुछ घटक दल तो सत्ता के महल में एक साथ रहते हुए रणक्षेत्र में एक दूसरे के खिलाफ तलवार उठाने को उत्सुक हैं। उत्तर प्रदेश के विधान सभा चुनाव के प्रसंग में जनता दल और समाजवादी पार्टी के बीच चल रहे घमासान पर बड़ी मुश्किल से काबू पाया गया है। लेकिन समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सम्मेलन में मुलायम सिंह के तेवर से ऐसा नहीं लगता कि वे उत्तर प्रदेश में संयुक्त मोर्चा के एक घटक के रूप में चुनाव लड़ने जा रहे हैं। सम्मेलन के अपने समापन भाषण में उन्होंने जो वायदे किए वे एक भावी मुख्यमंत्री की घोषणाएं ज्यादा थीं। मुलायम सिंह अपने दल के इस राष्ट्रीय सम्मेलन में इतने उत्तेजित थे कि उन्होंने न तो चुनाव घोषणा का इंतजार किया और न ही १० अगस्त की उस तारीख का जब संयुक्त मोर्चा के घटकों की तरफ से प्रधानमंत्री विधिवत चुनाव अभियान शुरू करने वाले हैं। मुलायम सिंह के भाषण में सबसे ज्यादा खटकने वाली बात उनकी धमकी भरी भाषा थी। धमकाने के लहजे में उन्होंने जो कुछ कहा उससे चुनाव का माहौल बिगड़ेगा इसमें संदेह नहीं। मुलायम सिंह की सर्वाधिक चर्चित घोषणा यह थी कि वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ तथा अन्य हिन्दूवादी शक्तियों से मुकाबले के लिए 'लाल दस्ता' बनाएंगे। इस दस्ते के नौजवानों के हाथ में हमेशा चार फुट की लाठी होगी जिससे वे 'पीले सांपों' का मुकाबला करेंगे। भगवा रंग की वजह से भाजपा को मुलायम सिंह 'पीला सांप' कहते हैं। निश्चय ही यह भाषा घृणा की भाषा है और इससे उत्तेजना का माहौल बनता है। किसी देश के रक्षामंत्री को घरेलू मोर्चे पर यह भाषा शोभा नहीं देती। रक्षामंत्री द्वारा एक लाठीधारी युवा संगठन बनाने की घोषणा भी चिंताजनक है। मुलायम सिंह विपक्ष के नेता अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा संसद में रमेश चन्द्रा कमेटी की रिपोर्ट रखे जाने से भी आग बबूला हैं। लेकिन इस बात को वे क्यों भूल रहे हैं कि इसकी इजाजत लोकसभा के उपाध्यक्ष ने एक दिन पहले दे दी थी। अगर वाजपेयी रिपोर्ट न रखते तो सरकार रखती। तब क्या मुलायम अपनी सरकार के लिए यह कहते कि वे उसका पर्दाफाश करेंगे जैसा कि आज वाजपेयी के लिए कह रहे हैं। रमेश चन्द्रा कमेटी की रिपोर्ट की पुष्टि करती हुई खुफिया रिपोर्ट आई और उसे अखबारों ने छापा। जिन अखबारों ने इस रिपोर्ट को प्रमुखता से छापा उसके संवाददाताओं को मुलायम सिंह ने सबक सिखाने की बात कही है। उन्होंने यह भी कहा है कि ऐसा वे पहले की तरह बता कर नहीं करेंगे। लोकतंत्र के चौथे खंभे के प्रति रक्षामंत्री की यह टिप्पणी भी चिंताजनक है। भाषा का जबाव भाषा में देने की परम्परा को ही लोकतांत्रिक माना गया है। प्रश्न उठता है कि इस उत्तेजित मानसिकता के साथ उत्तर प्रदेश के विधान सभा चुनाव में कूदना क्या उनके लिए खतरनाक नहीं होगा? इस उत्तेजक माहौल से तो भाजपा को ही फायदा पहुंचेगा। मुलायम सिंह पिछड़े तबके के सम्मानित नेता रहे हैं। अगर वे संयुक्त मोर्चा के साथ मिल कर संयत भाषा के साथ चुनाव में उतरेंगे तो उनका जनाधार बढ़ेगा। लेकिन संयुक्त मोर्चा के साथ दिखने की महज औपचारिकता पूरी करते हुए सिर्फ अपनी ही चलाएंगे और दलीय हित का विस्तार करेंगे तो अकेले पड़ जाएंगे। संयुक्त मोर्चा सरकार के लिए सबसे खतरनाक स्थिति यह है कि उसके घटक दल सिर्फ अपने दलीय हितों के विस्तार की राजनीति कर रहे हैं। संयुक्त मोर्चा को सुदृढ़ करने की राजनीति कोई नहीं कर रहा। यही विरोधाभास एक दिन संयुक्त मोर्चा सरकार के जीवन को संकट में डाल देगा।

*(नवभारत टाइम्स से साभार)*

वैदिक चिन्तन

# वैदिक भौतिकी : ऋत के परिप्रेक्ष्य में

❑ डॉ० भारत भूषण विद्यालङ्कार

विश्व में वेदों से प्राचीन कोई ज्ञान नहीं है, यह ज्ञान सत्य और ऋत है। ऋत का तात्पर्य है— 'पूर्ण सत्य' प्राकृतिक सत्य। वेदों में ज्ञान और विज्ञान अपने सूत्र रूप में ही विद्यमान है। वेद में आधिदैविक अर्थ के अन्तर्गत ब्रह्माण्ड सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त होता है, तो आधिभौतिक में सभी स्थूल पार्थिव पदार्थ आ जाते हैं।

हमारे समक्ष जो संसार है, वह केवल पदार्थ (मैटर) मात्र नहीं है, साथ ही यह संसार मैटर एवं ऊर्जा की क्रीड़ा मात्र भी नहीं है। इसमें कुछ अन्य शक्तियां भी कार्यरत हैं, जिन्हें हम जीवात्मा व परमात्मा कह सकते हैं। इसलिए इस संसार की व्याख्या केवल मैटर व ऊर्जा को आधार बनाकर नहीं की जा सकती। वास्तव में इसकी व्याख्या दृष्टिकोण से की जा सकती है—**द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।** (ऋ० १/६४/२०)।

पदार्थ और ऊर्जा जहां जड़ है, वहां अन्य दो तत्त्व चेतन हैं। यह चेतन ही इसकी अधिशासी शक्ति है। इसे हम कॉस्मोसाइकिक शक्ति कह सकते हैं। इसलिए वेदों ने सर्वप्रथम इस त्रैत दर्शन की उद्घोषणा की।

वेद के अनेकों मन्त्र उदाहरणार्थ—यजु० ३१/१, ४०/१ आदि कहते हैं कि यह सम्पूर्ण संसार ब्रह्म में व्याप्त है। उपनिषदों में **तस्माद् भीषा वायुः पवते।** आदि वाक्यों द्वारा इस जड़ की गति का कारण वह ब्रह्म ही है। उसकी प्रेरणा से यह प्रकृति कार्यरूप में दृश्यमान जगत् में और फिर प्रलय में अपने मूल में चली जाती है। यजुर्वेद ३१/१७ में कहा गया है— **अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे।**

अर्थात् पञ्चतत्त्वों के क्रम से यह दृश्यमान जगत् हमारे सम्मुख आता है। सांख्य दर्शन ने जिसमें सृष्टि निर्माण का क्रम प्रदर्शित किया है, उन्होंने पचीस तत्त्वों के संघात को प्रकृति कहा है और यह सत्त्व, रज, तम—इन तीनों रूपों में दिखायी देता है। ऋग्वेद—**त्रयः केशिन ऋतुथा वित्वक्षते** (१/१६४/४४) आदि मन्त्र में यह स्पष्ट किया है कि—यह स्थिति को मैटर की होमोजीनियस स्टेज कह सकते हैं। श्वेताश्वतर उपनिषद् में भी **अजामेकां लोहित शुक्ल कृष्णां बह्वी प्रजाः सृजमाना स्वरूपाः।** लिखकर इनकी (सत्त्व, रज, तम) चर्चा की है। विज्ञान के ऊर्जा और मैटर के परस्पर एक-दूसरे में परिवर्तित होने का स्पष्ट संकेत भी **दक्षस्य जन्मन्नदितेरुपस्थे** (ऋ० १०/५/७) में है। अदिति अर्थात् अखण्डनीय मैटर तत्त्व से दक्ष अर्थात् ऊर्जा व बल उसकी गोद या केन्द्र से उत्पन्न होता है। उस ऊर्जा या बल का दिखायी देने वाला स्वरूप अग्नि है। प्रकाश एवं उष्मा उस अग्नि के ही रूप हैं। ऋग्वेद १०/१९०/१ के प्रसिद्ध मन्त्र **ऋतं च सत्यञ्चाभीद्धात्** आदि में **ततः समुद्रो अर्णवः** कहकर जिस वायुमण्डलीय समुद्र की चर्चा है, उसमें नेबुला स्थूल पिण्ड जो धूल का सा बादल प्रकाश पड़ने पर प्रकाश पुञ्ज जैसा दिखायी देता है—इस मैटर और ऊर्जा की चर्चा (ऋ० १०/७२/४) में भी की गयी है। जहां बड़े स्पष्ट शब्दों में कहा गया है— **अदितेर्दक्षो अजायत दक्षाददितिः परि।** अर्थात् अदिति जो प्राइमीडियल मैटर (आदि या मौलिक मूल पदार्थ) है। उसकी अभिव्यक्ति नाम एवं रूप में ऊर्जा से हुई और ऊर्जा की अभिव्यक्ति उस मौलिक तत्त्व से हुई।

प्रकृति के मूल तत्त्व परस्पर आकर्षण और विकर्षण के बलों से इस दृश्य जगत् का निर्माण करते हैं, जिसकी चर्चा ऋग्वेद १०/१३०/१ में की गयी है, वहां **यु मिश्रणा मिश्रणयोः** से इसकी अभिव्यक्ति की गयी है। ये परस्पर एक-दूसरे के निकट आते हैं पर किञ्चित दूरी बनाये रखते हैं। एक दूसरे के अन्दर समाहित नहीं हो जाते, जिसे हम विज्ञान की भाषा में (इण्टर मोलीक्यूलर फोर्सेज या इण्टर आटोमिक फार्सेज) कहते हैं। ये आकर्षण एवं विकर्षण इस शाश्वत नियम के प्रथम पग थे। इसी से यह सूर्य एवं पृथिवी एक दूसरे के आकर्षण और विकर्षण से निश्चित दूरी बनाये रहते हैं। ऋग्वेद (१/१६४/१३) में बड़े ही स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि पांच तत्त्वों की तीलियों वाला यह चक्र अपने केन्द्र पर बहुत ही दृढ़ है। जिसमें किसी प्रकार की उष्मा पैदा नहीं होती न ही यह विखण्डित होता है, क्योंकि यह मूलभूत कारण से बना है। उदाहरणार्थ यदि अणु केन्द्र में है तो वह विखण्डित नहीं होगा। जबकि उससे निर्मित पदार्थ विखण्डित हो जाते हैं। इसीलिए अदिति को देवमाता कहा गया है। इन वर्णनों में मैटर और ऊर्जा की स्पष्ट चर्चा है। पर यह ध्यान रखना चाहिए कि गुण और गुणी की भांति ऊर्जा एवं मैटर को अलग नहीं किया जा सकता। ऊर्जा गुण है, उस साररूप मैटर का जो बिना अपने मूल (मैटर) के

नहीं रह सकता, यही अदिति का देवों अर्थात् सूर्यादि तथा ब्रह्माण्डों की जननी होना है। इसी प्रकार कहीं-कहीं देव-पितर आदि शब्द भी कभी-कभी मैटर के लिए या मैटीरियल एकीमेण्ट्स (मूलभूत तत्त्व) के लिए भी उसी प्रकार प्रयुक्त होते हैं, जैसे ऊर्जा के लिए। भूत या सूक्ष्म भूत वास्तव में मैटर व ऊर्जा का मिलाजुला रूप है, जिनकी चर्चा हमें अनेकत्र प्राप्त होती है।

वर्तमान विज्ञान प्रतिक्रिया के बाद के स्वरूप के बन्धन (एलास्टिक बाउण्ड) को स्वीकार करने लगा है। यह एक स्थापित तथ्य है कि संसार पूर्ण स्थिर नहीं है, वह गतिमय है इसलिए परिवर्तनशील है। इसके एक छोर पर उत्पत्ति (क्रिएशन) और द्वितीय छोर पर प्रलय (डिजोल्यूशन) है। परन्तु यह परिवर्तन अचानक या अनायास (रैण्डम) नहीं है। इस प्रकार इस वर्तमान से पूर्व प्रलय का काल या अवस्था थी। उस प्रलयावस्था पूर्व एक और ब्रह्माण्ड (यूनिवर्स) था। जो धीरे-धीरे विघटन (एनीहिलेशन) की ओर बढ़ रहा था। हम कह सकते हैं कि 'कनवर्जन ऑफ पार्टिकल एण्ड एण्टी पार्टिकल इनटू रेडिएशन' यह चक्र अनन्त काल से अपने केन्द्र पर घूम रहा है, और अनन्त तक घूमता रहेगा। इसके लिए ऋग्वेद (१०/१९०/३) का प्रसिद्ध मन्त्र **सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः** आदि अनेक मन्त्र इस प्रकरण में उद्धृत किए जा सकते हैं। इस प्रकार यह कार्य कारणात्मक नियम इस कॉस्मिक आर्डर (ब्रह्माण्ड व्यवस्था) या प्रलय की प्रक्रिया को कन्ट्रोल करता है। इसी की विस्तृत चर्चा ही इलेक्ट्रान, प्रोजोट्रोन आदि में की गयी है।

यह संसार अणु पर आधारित है। ऋग्वेद (१०/८१/३) के प्रसिद्ध मन्त्र— **विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुतविश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमि जनयन् देव एकः॥**

की व्याख्या भले ही आप परमात्मापरक करें परन्तु यह पूरी तरह अणु पर घटित होता है। इसी प्रकार ऋग्वेद (१०/७२/६) के प्रसिद्ध मन्त्र **यद्देवा अदः सलिले सुसंरब्धा अतिष्ठत अत्रावो नृत्यतामिव तीव्रोरेणुरपायत** इन दोनों मन्त्रों में **सम्पतत्रै** यह पारिभाषिक शब्द पढ़ा गया है, जो कि गतिशील अणुओं के लिए है। उदयनाचार्य अपनी कुसुमाञ्जलि की टीका में अणु के लिए सम्पतत्र शब्द का ही प्रयोग करते हैं। इसी प्रकार एक मन्त्र में रेणु शब्द भी परमाणु के सूक्ष्म रूप के लिए ही प्रयुक्त हुआ है। रेणु एटम है। इस मन्त्र में अणु (एटम) की गतिमयी अवस्था को बताया गया है। अर्थात् वह गुट रूप सागर अतीत संक्षुब्ध हो गया, उसमें एक अनन्त सूक्ष्म रेणु गुण कण नृत्य करता सा दिखायी देता था। अभी प्रोटॉन या परमाणु के बनने का प्रश्न ही नहीं है। यह रेणु अखिल ब्रह्माण्ड का बीज है। इस रेणु से अनन्त रेणु उत्पन्न हो जाते हैं। पुराणों ने सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय में इस नृत्य को रुद्र का प्रलय ताण्डव कह दिया है। कणाद को भी यह मान्यता बहुत स्वीकार्य है। उनके अनुसार ऐसा समय कभी नहीं आयेगा, जब पदार्थ का पूर्ण क्षय हो सके। यह ठीक है कि पदार्थ की संरचना विनाशी है। इस प्रकार एक संरचना के बाद दूसरी संरचना बनती व बिगड़ती रहती है। इससे प्रत्येक तन्त्र (इण्डिविजल) परमाणु दूसरे के साथ जुड़ता है, और इस संयोग से कोई पदार्थ कुछ समय के लिए अस्तित्व में आता है। अकेला अणु यदि रचना में समर्थ हो तो वह नित्य रचना हो जायेगी। इसलिए क्रमशः अणु, द्वणुक तथा त्रसरेणु आदि बनते हैं। परमाणु का गुणात्मक (मल्टीप्लाई) होते जाने की क्रिया को हम प्रलय कह सकते हैं। कणाद ने इन अणुओं के आधार पर पदार्थ के सामान्य गुणों की व्याख्या भी की है। उनके अनुसार गति की परिभाषा लगभग वही है—जिसे आधुनिक विज्ञान स्वीकार करता है। अर्थात् किसी कण की स्थिति का परिवर्तन। यह गति एक समय में एक ही प्रकार की हो सकती है। चाहे वह सरल रेखीय गति हो या ऊर्ध्वाकार। या चाहे वक्रीय गति हो, जिसमें दिशा निरन्तर बदलती रहती है। अर्थात् घूर्णन गति और स्पन्दन गति। इनके अतिरिक्त प्रयत्न, गुरुत्व के अन्तर्गत गति। जिसे आकर्षण बल के कारण माना गया। एक गति चक्रमण है, जिसे प्रयत्न के द्वारा सन्तुलित किया जा सकता है। इनके अतिरिक्त एक गति स्पन्दन अर्थात् तरल पदार्थों का नीचे की ओर गिरना भी है। एक ऐसी भी गति है, जिसका वर्गीकरण नहीं किया जा सकता। जिनका कारण अज्ञात (अदृष्ट) है। उदाहरणार्थ—गैसों का विक्षेपण अर्थात् यादृच्छिक गति व चुम्बकीय आकर्षण गति। महर्षि कणाद 'लॉ ऑफ ट्रिएंगल ऑफ फोर्सेज' को भी जानते थे। इसकी दिशा इस पर निर्भर करती है कि दाब अथवा संघट्ट (टकराना) प्रारम्भिक दिशा में लगाया जाता है अथवा उसके विपरीत। यहां उष्मा, चुम्बकत्त्व, विद्युत, गैलेक्सी आदि की चर्चायें की जा सकती थीं। परन्तु इस छोटे से लेख में वैदिक विज्ञान के केवल मात्र भौतिक गुणों की एक झलक मात्र प्रस्तुत की गयी है। वैसे वेद में ब्रह्माण्ड की किरणें जो कि उष्मीय तरंगें, वेदों की वैज्ञानिक शब्दावली में वयांसि कहलाती हैं। ये ब्रह्माण्ड किरणे उस स्थान में गति करती हैं, जहां तारे, आकाश गंगाएं (गैलेक्सी) आदि बाह्य अन्तरिक्ष के विशाल

*(शेष पृष्ठ १५ पर)*

# यह देश स्वर्ग है मेरा

❑ डा० एम० के० दुर्रानी

शक्तिवान भगवान जहां पर करता रहा बसेरा
वह देश स्वर्ग है मेरा...

कवि कल्पना लिए जब बैठा ईश बनाने,
स्वर्ग लोक से बढ़ा दिया तो लगा स्वयं ललचाने,
भू मंडल उत्तम निज कृति जब प्रभु को लगा रिझाने,
बसने आने लगा बना दस-दस अवतार बहाने,
जहां विश्व ने सर्वप्रथम देखा सभ्य सवेरा
वह देश स्वर्ग है मेरा...

उत्तर में नगपति रक्षक बन ताने सीना,
ब्रह्मपुत्र, गंगा-जमुना जल जिसका मधुर पसीना
सतलुज, रावी, व्यास आदि से है अमृत पीना,
इन्द्रलोक की सीमाओं को गिरि गह्वर ने छीना,
कटरे से कुछ दूर डाल पर पड़ा वैष्णवी डेरा
यह देश स्वर्ग है मेरा ...

जहां उर्वशी और मेनका मुखरित गली-गली में,
हास चन्द्रलेखा का मुकलित उपवन कली-कली में,
रसिया वन कन्दर्प दिखाई देता अली-अली में,
कंचन भरा पड़ा है जिसकी माटी की डली-डली में,
जहां सनी ललनाओं ने यमराजों से मुख फेरा
यह देश स्वर्ग है मेरा ...

सांची के स्तूप, अजन्ता की गम्भीर गुफाएं,
गोदावरी, नर्मदा, कावेरी, कृष्णा सरिताएं,
विंध्याचल के गहन बन की अनुपम जहां छटाएं,
हरियाली कुंजें केरल की सबको जहां लुभायें,
नाच नचाने जहां गोपियों ने सांवरिया घेरा
यह देश स्वर्ग है मेरा ...

जप जप कर जीवन संवारती जहां कुमारी कन्या,
विष पी कर भी अमर हो गई मीरा भक्ति अनन्या,
लज्जावती गार्गी-सम कितना विदुषी मूर्धन्या,
गांधी, नेहरू, भगत सिंह से धरा जहां की धन्या,
पराधीनता का सुझाव करते हैं दूर अंधेरा
यह देश स्वर्ग है मेरा ...
जिसकी सुख समृद्धि रिपु दल जब सहन नहीं कर पाते,
खोज-खोज कर जयचंदों को जिसके विरुद्ध उकसाते,
तोड़फोड़ कर कुछ विद्रोही जीवन नरक बनाते,
खंडित जिसे न होने दे उसके पीछे पड़ जाते,
पाक! स्वयं भारत का तू कश्मीर कहां से तेरा
यह देश स्वर्ग है मेरा ...

सुन्दरबन नन्दन बन बन कर सुर-नर-मुनि-मन भाता,
चरणदास रत्नाकर जिसका प्रहरी मजग कहाता,
विश्व कुतुब मीनार, ताज देखे आज चकित रह जाता,
पृथ्वीराज शब्दभेदी वाणों से जग थर्राता,
मार भगाया सोमनाथ का जिसने एक लुटेरा
यह देश स्वर्ग है मेरा ...

गौतम, महावीर, नानक के मत फल-फूल रहे हैं,
मातृभूमि की सेवा सब मुस्लिम-सिख-इसाई सब कबूल रहे हैं,
भ्रात भाव से खुशियों के झूले में झूल रहे हैं,
शत्रु-सर्प के लिए शिवाजी बन कर फिरा सपेरा
जिससे पूरित अंधकार में फिर से भरा सवेरा
यह देश स्वर्ग है मेरा ...

अर्जुन ले गाण्डीव पशुपत प्रलयंकर शंकर है,
सीताराम भरत हनुमान की महिमा जगत अमर है,
दीन ईलाही धर्म धरा पर विश्वविदित अकबर है,
राणा के बलिदान वीरता की गाथा घर-घर है,
जहां बड़ी श्रद्धा से कहते ईश्वर सब कुछ तेरा
यह देश स्वर्ग है मेरा ...

महर्षि दयानन्द के महान् अनुयायी

# क्रान्तिकारियों के प्रेरणा स्रोत श्यामजी कृष्ण वर्मा

❑ नरेन्द्र अवस्थी

**उन्नीसवीं** शताब्दी में राष्ट्रीय जागरण के अग्रदूत युगद्रष्टा महर्षि दयानन्द ने अपने प्रखर, तेजस्वी एवं क्रान्तिकारी विचारों के लिए वेदों से प्रेरणा ग्रहण की। जिन वेदों ने **'अदीनाः स्याम शरदः शतं'** कहकर सौ वर्ष पर्यन्त मनुष्य की अदीन एवं स्वाधीन होकर जीवन धारण करने का आदेश किया, उसका अनुयायी भला देश के स्वातंत्र्य समर से कैसे विमुख रहता। दयानन्द के अनुयायियों ने स्वातंत्र्य संग्राम में अहिंसात्मक सत्याग्रह व सशस्त्र क्रांति का माध्यम दोनों को ही बढ़चढ़कर अपनाया। यही कारण है कि योगी अरविन्द ने स्वामी दयानन्द के राष्ट्रीय भावों का मूल्यांकन करते हुए लिखा 'उनमें राष्ट्रीय भावना थी और उन्होंने उस भावना को एक आत्मानुभूति का रूप देकर उसे ज्योतिर्मय बना दिया।

श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा की विलक्षण प्रतिभा तथा संस्कृत साहित्य में उनकी अपूर्व गति को लक्ष्य में रखकर स्वामी दयानन्द ने उन्हें इंग्लैंड जाकर आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत का प्राध्यापक पद स्वीकार करने की प्रेरणा दी थी। कालान्तर में वे पुनः भारत आए, परन्तु अपनी राजनैतिक गतिविधियों के अनुकूल वातावरण न पाकर पुनः ब्रिटेन चले गए।

श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म ४ अक्टूबर १८५७ को माण्डवी (गुजरात) में हुआ। १८५७ का वर्ष हमारे इतिहास में भारत के प्रथम स्वातन्त्र्य समर के कारण अविस्मरणीय है। उनकी शिक्षा-दीक्षा बम्बई में हुई, उच्च आधुनिक शिक्षा एवं संस्कृत का असाधारण ज्ञान व मेधावी छात्र होने केकारण उन्होंने बम्बई में लोकप्रिय समाज सुधारक के रूप में ख्याति अर्जित की। १८७५ ई० में महर्षि दयानन्द बम्बई पधारे थे। उनके चिन्तन से अत्यधिक प्रभावित होकर श्यामजी कृष्ण वर्मा उनके परम शिष्य बन गए। १८७९ ई० में महर्षि दयानन्द के आदेश पर ही आप इंग्लैंड पहुंचे। वहां संस्कृत एवं अन्य प्राच्य भाषाओं के प्रकाण्ड विद्वान के रूप में आप माने जाने लगे। वहां के बुद्धिजीवियों, राजनीतिज्ञों में आप अपने बुद्धिचातुर्य व असाधारण सूझबूझ के कारण काफी लोकप्रिय हो गए। आपने वहां के राजनीतिक वातावरण का गहनता मे अध्ययन किया। भारत के संदर्भ में आपने ये निष्कर्ष निकाले : १. स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अंग्रेजी साम्राज्य से संघर्ष अनिवार्य है, २. सांस्कृतिक पुनरुत्थान के द्वारा राष्ट्रवाद के चिन्तन को जागृत किया जा सकता है, ३. रजवाड़ों के विचारों में परिवर्तन लाना आवश्यक है।

१८७९ से १८८५ तक के ब्रिटेन प्रवास के दौरान क्रांतिपुत्र श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अपने आपको राष्ट्रहित में समर्पित किया और कानून की भी पढ़ाई पूरी कर बैरिस्टर बने। १८८५ ई० में वे भारत लौटे। उन दिनों सांस्कृतिक जागरण के माध्यम से राष्ट्रवाद की भावना भारतीय जनमानस में उभरने लगी थी। इंडियन नेशनल की स्थापना हो चुकी थी। आप १८८५ से १८८७ तक भारत रहे। इस अवधि में आप रतलाम (मध्य प्रदेश), मेवाड़ (राजस्थान), जूनागढ़ (गुजरात) में दीवान बने। अजमेर नगरपालिका के गैर सरकारी अध्यक्ष भी बने। भारत में औद्योगिकरण को प्रोत्साहित करने के विचार से राजस्थान काटन मिल, प्रताप काटन मिल आदि कारखानों की स्थापना की। दीवान के रूप में श्यामजी कृष्ण वर्मा ने राष्ट्रवादी समाचार पत्रों और प्रचारकों को भारी अनुदान दिया। भारतीय रजवाड़ों की स्थिति का जायजा लेकर 'स्वाधीनता संग्राम' की रूपरेखा तैयार की। इन्हीं कार्य कलापों की भनक अंग्रेज अधिकारियों तक भी पहुंची।

१८९७ में आप पुनः विदेश गए, लंदन में रहकर श्यामजी कृष्ण वर्मा ने भारतीय स्नातकों को संगठित किया। उन्हीं के प्रयासों से स्वातन्त्र्य वीर सावरकर, लाला हरदयाल, मैडम भीकाजी कामा, क्रांतिकारी मदन लाल ढींगरा, वीरेन्द्र चट्टोपाध्याय सरीखे महान् देशभक्त पारस्परिक सम्पर्क में आए। आपने इंग्लैंड में 'इंण्डिया हाऊस' की स्थापना भी की। १८९७ से १९०७ तक आपकी गतिविधियों में काफी सक्रियता रही। शेर की मान्द में घुसकर अदम्य साहस का परिचय देने में आपका पूरे इतिहास में कोई सानी नहीं। १९०५ में लंदन में इण्डियन होम रूल सोसायटी गठित की। अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए आपने प्रचार सभाओं के माध्यम से लोगों को एक सूत्र में पिरोना आरम्भ किया।

वर्मा जी ने बहुत जल्द ही छह छात्रवृत्तियों की घोषणा की। इनमें एक छात्रवृत्ति देने की जिम्मेदारी विनायक दामोदर सावरकर ने उठाई।

इण्डिया हाऊस में एकत्र हुए भारतीय युवकों में सावरकर सबसे अधिक प्रभावी व सक्रिय थे। वीर सावरकर से प्रभावित होने वाले युवकों में मदन लाल ढींगरा भी थे। उन्होंने लंदन में भारतीय छात्रों की गतिविधियों का पता लगाना शुरू किया। भारत में कर्नल वाइली द्वारा किए गए अत्याचारों का प्रतिशोध लेने के लिए एक जुलाई १९०९ को मदल लाल ढींगरा ने नेशनल इण्डियन एसोसिएशन की एक बैठक में उसे गोली से उड़ा दिया। १७ अगस्त १९०९ को क्रांतिवीर मदन लाल ढींगरा को फांसी पर लटका दिया गया। विदेशी भूमि पर शहादत प्राप्त करने वाला भारत माता का यह पहला सपूत था। श्यामजी कृष्ण वर्मा भी सरकारी दमन का मुंहतोड़ जवाब देने वाले मदन लाल ढींगरा सरीखे युवकों की प्रशंसा करते थे।

राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम चल ही रहा था कि प्रथम विश्व युद्ध (१९१४-१८ ई०) शुरू हो गया। श्यामजी कृष्ण वर्मा भी अंग्रेजों के शत्रु जर्मनी से इस आजादी की लड़ाई में सहयोग लेने के इच्छुक थे। गदर पार्टी ने थाईलैंड और वर्मा के मार्ग से भारत पर आक्रमण का प्रयत्न किया। थोड़ी बहुत सफलता भी मिली परन्तु जर्मनी के पराजित होने पर ये सब प्रयत्न असफल हो गए। १९१४ ई० में लोकमान्य तिलक जेल से रिहा हुए। उन्होंने होम रूल आन्दोलन फिर से संगठित किया और दस वर्षों में अंग्रेजी साम्राज्य की जड़ों को उखाड़ फेंकने की योजना बनाई। मगर १ अगस्त १९२० को लोकमान्य तिलक इस संसार से विदा हो गए। अदम्य साहस के धनी श्यामजी कृष्ण वर्मा भारत को मुक्त कराने के संकल्प से विचलित नहीं हुए। एक ओर उन्होंने महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन का समर्थन किया तो दूसरी ओर अमेरिका के राष्ट्रपति विल्सन और विश्व लीग से भारत की स्वतंत्रता के लिए अनुरोध किया।

मातृभूमि से दूर जिनेबा में प्राण त्यागे। सच तो यह है कि महर्षि दयानन्द के परम भक्त श्यामजी कृष्ण वर्मा के व्यक्तित्व व कृतित्व का भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में भारी सहयोग का मूल्यांकन शब्दों से नहीं किया जा सकता। शायद ऐसे ही परम देशभक्तों के लिए राष्ट्रकवि दिनकर की लेखनी पुकार उठी—'कलम तू उनकी जय बोल।' ❑


बच्चे दीर्घजीवी विद्वानों के लिए सुनहरी अवसर
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व
तार्किक समीक्षा के लिए
दो रंग में सुन्दर आकर्षक छपाई
*(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)*

स्थूलाकार बड़े साइज
20×30×8 में

# सत्यार्थ प्रकाश

मूल्य : लागत से कम रु० 50/- प्रति
प्रत्येक प्रति पर 25 प्रतिशत कमीशन
10 से ज्यादा प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें।

*प्राप्ति स्थान :-*
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट,
455, खारी बावली, दिल्ली-110006
दूरभाष : 238360, 233112, 2922612

सत्रह अगस्त जिनकी बलिदान तिथि है

# अमर हुतात्मा मदन लाल ढींगरा के अन्तिम क्षण

❑ श्रीचंद जैन

शत्रु की मांद में दाखिल होकर उसे चुनौती देने का साहस कोई विरला ही कर पाता है। ऐसे ही साहस के धनी अमर हुतात्मा मदन लाल ढींगरा का स्मरण स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर हो आना स्वाभाविक है। उस महान देशभक्त का जन्म १८८२ में पंजाब की धरती पर हुआ था। उसके पिता डा० साहिब दित्ता की गणना अमृतसर के प्रमुख चिकित्सकों में होती थी। साथ ही अंग्रेज परस्ती भी उनके चरित्र का एक हिस्सा बन गई थी। भारत में अपनी शिक्षा का एक चरण पूर्ण कर ब्रिटेन जाकर इंजीनियर बनने की आकांक्षा मन में बसाकर युवक मदन लाल ने जुलाई १९०६ में एक जलयान से लंदन प्रस्थान किया था। लंदन जाकर मदन को इंडिया हाउस के बारे में भी जानकारी मिली। उसने भी अपने कुछ परिचितों के मुख से इंडिया हाऊस की गतिविधियों की चर्चा सुनी थी जहां भारतीय युवक क्रांति मंत्र की दीक्षा पाते थे और उन्हें यह दीक्षा प्रदान करते थे वीर विनायक दामोदर सावरकर।

वीर सावरकर के सम्पर्क में आकर मदन के मन में भी स्वदेश की स्वतंत्रता के लिए कुछ कर गुजरने की भावना को बल मिला। वीर सावरकर के प्रेरक विचारों ने उसे जीवन की नई राह दिखाई। वीर सावरकर के बड़े भ्राता बाबा राव सावरकर को क्रांतिकारी गतिविधियों में उनकी संलग्नता के पावन अपराध में ८ जून १९०९ को कालेपानी की सजा सुनाई गई थी॥ उसी दिन मदन लाल ने प्रतिशोध लेने का संकल्प मन ही मन ले लिया था। उसने कर्जन वाइली अपना निशाना साधने की ठानी थी पर जो लंदन आए भारतीय युवकों में भारत भूमि के प्रति विष घोलने वालों में प्रमुख था।

१ जुलाई १९०९ को नेशनल इंडियन एसोसियेशन पर लंदन के जहांगीर हाल में एक कार्यक्रम आयोजित था जिसमें कर्जन वाइली ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होना था। मदन भी वीर सावरकर से भेंट करने के उपरांत दो अन्य युवा राष्ट्रभक्तों ज्ञान चंद्र वर्मा और कोरोगांवकर के साथ समारोह स्थल पर पहुंचा। कर्जन वाइली के वहां पहुंचते ही मदन के मुख मंडल पर एक मधुर मुस्कान खिल उठी। धीरे-धीरे वह वाइली की ओर बढ़ा और एक के बाद एक उसके रिवाल्वर से निकली छह गोलियों में से एक ने वाइली की दांयी आंख फोड़ दी, जबकि पांच अन्य ने उसे लहू लुहान कर काल के गाल में झोंक दिया। संकल्पपूर्ति के बाद मदन लाल ने अपने हाथ से रिवाल्वर फेंक दिया और वह बंदी बना लिया गया। मदन लाल पर न्यायालय में अभियोग चला। अन्ततोगत्वा २५ जुलाई १९०९ को न्यायालय ने उसे सजाए मौत देने का फैसला सुनाया और फांसी देने की तिथि घोषित की १७ अगस्त १९०९। मदन लाल के जिस बयान को पुलिस ने जब्त कर लिया था। जिसकी एक प्रति क्रांतिकारी युवकों के पास थी। जिसके प्रकाशन की उन्होंने व्यवस्था की थी। अपने इस बयान में उसने जहां उसके भारत के देशभक्त युवकों को फांसी, कालापानी और लम्बी सजाएं देने के प्रति प्रतीकात्मक विरोध बताया था, वहीं उसने उस बयान का समापन इन शब्दों से किया था :-

**मेरी अन्तिम कामना है कि फिर से मैं भारत की गोद में ही शीघ्र जन्म लूं तथा पुनः देश को स्वतंत्र कराने के कार्य में संलग्न हो जाऊं। भारत के स्वतंत्र होने तक मैं इसी ध्येय के लिए बार-बार जन्म लूं और मृत्यु का वरण करूं। प्रभु मेरी यह प्रार्थना स्वीकार करें—मेरी यही कामना है।**

१७ अगस्त १९०९ को उसे मृत्यु दंड दिया जाना था। उसी दिन एक अंग्रेज पादरी उसकी काल कोठरी में प्रविष्ठ हुआ और चाहा कि उसे अंतिम प्रार्थना करने को कहे। उसकी ओर उपेक्षा का भाव बरतते हुए मदन लाल बोला था "महोदय आप तशरीफ ले जाइए। मुझे आपकी सहायता की आवश्यकता नहीं। मैं हिन्दू ही जन्मा था और हिन्दू ही के रूप में मरूंगा। आप मेरी चिन्ता न करें।"

मदन लाल हंसते-हंसते वध स्तम्भ की ओर बढ़ा। उसकी गर्दन एक काले कपड़े से ढंक कर गांठ लगा दी गई और तत्काल नीचे का तख्ता एक झटके से हटा और मदन लाल की स्वतंत्र आत्मा अनन्त में विलीन हो गई।

उसके बलिदान ने राष्ट्र में स्वतंत्रता की चिंगारी अनेक युवा हृदयों में जगाई। १७ अगस्त, १९०९ का वह दिन आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा का दिवस बन गया। उसके बलिदान पर महर्षि दयानन्द के अनन्य शिष्य और क्रांतिकारियों के प्रेरक पं० श्याम जी कृष्ण वर्मा ने श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए कहा था :-

"मदन लाल के बलिदान ने हमारे हृदयों में उन राजपूतों की याद ताजा कर दी है जो मौत से अपनी प्रेयसी जैसा ही प्यार करते थे। अंग्रेज समझते हैं कि उन्होंने मदन लाल को खत्म कर दिया परन्तु वास्तव में वह अमर हो गया है।"

**हि०म०स० भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली**

# विदेशी शासन का दम्भ चकनाचूर किया शहीद भगत सिंह ने

म०कु० आर्य

अंग्रेजों ने भारत को गुलाम बनाकर देशवासियों के स्वाभिमान को चुनौती दी थी। भगत सिंह और उनके क्रांतिकारी साथियों ने अपने साहसिक कार्यों से विदेशियों के दम्भ को चकनाचूर कर देश की अस्मिता की रक्षा की, देशवासियों को बलिदान के लिये प्रेरित किया तथा स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया था।

**भगत सिंह का परिवार वैदिक आर्य संस्कृति को धारण किये हुए पंजाब के जनपद लायल पुर के ग्राम बंगा में निवास करता था। आश्विन १३ सितम्बर सन् १९०७ को जन्मे भगत सिंह के दादा सरदार अर्जुन सिंह आर्य समाज के अनुयायी बन गये थे। आपने आर्य समाज का प्रचार एवं समाज सुधार के अनेक कार्य किये।** डी० ए० वी० आन्दोलन के प्रमुख नेता एवं इसके लिये जीवन दान करने वाले महात्मा हंसराज के साथ राजस्थान के अकाल पीड़ितों की सेवा एवं सहायता का कार्य सरदार अर्जुन सिंह ने किया। आपने अनाथ बच्चों को ईसाई प्रचारकों के चंगुल से बचाने के लिए उनके पालन-पोषण व शिक्षण के लिये पंजाब में "अनाथालय' खोले।

**भगत सिंह के पिता किशन सिंह तथा चाचा अजीत सिंह भी आर्य समाज की गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़े रहे।** पिता आर्य समाज द्वारा लाहौर में नवांकोट ग्राम तथा चुबर्जी के मध्य कोठी में संचालित अनाथाश्रम के अधीक्षक थे। ९ मई १९०७ को जब शेरे पंजाब ऋषि दयानन्द अनुयायी लाला लाजपत राय और अजीत सिंह को देश निकाला "जला वतन" किया गया तो अजीत सिंह जी की गिरफ्तारी के लिये पुलिस ने "अनाथाश्रम" पर भी घेरा डाला था। इन परिस्थितियों में भगत सिंह जी का जन्म हुआ। पिता पुत्र जन्म के समय जेल में थे।

बहुत छोटी अवस्था में भगत सिंह ने परिवार के लोगों से सुन-सुन कर गायत्री मंत्र जिसमें ईश्वर से बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चलाने की प्रार्थना है, कण्ठस्थ कर लिया था। बचपन में एक बार आपने कहा था कि वह बड़ा होकर अंग्रेजों को देश से बाहर निकालेगा। आर्य समाज के महोपदेशक पं० लोकनाथ ने भगत सिंह की आठ वर्ष की अवस्था में उनका "यज्ञोपवीत संस्कार" कराया था। इस अवसर पर अर्जुन सिंह ने भगत सिंह से देश की आजादी पर जीवन अर्पित करने एवं विवाह न करने की प्रतिज्ञा कराई थी। उनकी तीन बहने और तीन भाई हुये। पिता किशन सिंह की मृत्यु सन् १९५० तथा माता विद्यावती जी की मृत्यु सन् १९७५ में हुयी।

आपने कक्षा ९ तक की शिक्षा गांव के प्राइमरी स्कूल, लाहौर के खालसा कालेज तथा इसके पश्चात डी० ए० वी० स्कूल में हुई। इसके अनन्तर आप नैशनल कालेज लाहौर में प्रविष्ट हुये जहां से आपने इतिहास तथा राजनीति में सन! १९२३ में एफ.ए. किया। नैशनल कालेज के संचालक लाला लाजपत राय एवं प्रिंसिपल भाई परमानन्द थे। परमानन्द जी ने देश की आजादी के लिये काला पानी एवं मृत्यु दंड की सजा सुनकर भी उसका वीरता पूर्वक सामना किया था। पिता किशन सिंह जी के कहने पर जब भगत सिंह भाई परमानन्द से मिले तो लम्बी वार्ता हुयी। भगत सिंह को उन्होंने कहा, क्रांतिपथ की ओर पग उठाया है तो पीछे न हटना। भय, प्रलोभन, दुर्बलता, सिगरेट आदि व्यसनों पर पूर्ण विजय पाओ, निष्कलंक चरित्र होना चाहिये। आत्मसन्तोषी बनो। नैशनल कालेज में ही सुखदेव और भगवती चरण से आपकी भेंट हुयी। इन वीरों ने भी स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपने प्राण न्यौछावर किये। कालेज के दिनों में ही आप अच्छे वक्ता बने। देश प्रेम पर आपके भाषणों को सुनकर युवकों के हृदय में क्रोध की ज्वाला भड़क उठती थी।

भगत सिंह का बड़ा भाई ११ वर्ष की आयु में चल बसा था। माता-पिता ने भगत सिंह का विवाह तय कर दिया जिससे बचने के लिये गृह त्याग कर आप दिल्ली पहुंचे और वहां अर्जुन पत्र में संवाददाता का कार्य किया। इसके पश्चात कानपुर आये और गणेश शंकर विद्यार्थी के पत्र "प्रताप" में कार्य किया विद्यार्थी जी ने ही चन्द्रशेखर आजाद एवं भगत सिंह का परस्पर परिचय कराया। भगत सिंह ने

प्रमुख साथी वटुकेश्वर दत्त से भी आपकी कानपुर में भेंट हुयी। कानपुर में गंगा-यमुना में आई बाढ़ में आप दोनों ने पीड़ितों की रात-दिन सेवा व सहायता की। विद्यार्थी जी द्वारा राष्ट्रीय विद्यालय के मुख्याध्यापक के दायित्व को भी आपने सफलतापूर्वक निभाया।

पिता को पुत्र का कानपुर का पता मिलने पर मां विद्यावती जी की अस्वस्थता का तार दिया। पुत्र वियोग का दुख भगत सिंह के आने पर दूर हो गया। मातृ-पितृ भक्त पुत्र भगत सिंह ने रात-दिन अथक सेवा कर मां को पूर्ण स्वस्थ कर दिया। गुरुद्वारा सुधार आन्दोलन जिसे गुरु का बाग मोर्चे के नाम से जाना जाता है, को कुचलने के लिये अंग्रेजों ने सिखों पर अमानुषिक अत्याचार किये। आर्य समाज एवं कांग्रेसी नेता स्वामी श्रद्धानन्द ने अमृतसर पहुंच कर अकाल तख्त से सिखों को सम्बोधित किया। इस सम्बन्ध में उन्हें १ वर्ष ४ माह की कैद हुयी। भगत सिंह जी ने भी अपने गांव में एक शहीदी जत्थे का स्वागत किया। एवं उनके भोजन आदि की व्यवस्था कर विदाई के अवसर पर एकसौ एक रुपये भेंट किये। भगत सिंह पर केस चला। आगामी वर्ष सन् १९२५ में पानी पर टैक्स के विरुद्ध आन्दोलन में पिता-पुत्र को फंसाया गया।

विदेशी शासन के विरुद्ध शक्ति का प्रयोग कर देश को स्वतंत्र कराने के उद्देश्य से नवम्बर १९२४ में भगत सिंह ने नौजवान भारत सभा की नींव डाली। पूरे पंजाब में युवकों ने इसे व्यापक रूप से अपनाया। बैठक में भगत सिंह, सुखदेव तथा भगवती चरण ने अपने हाथ चीर कर अपने खून से प्रतिज्ञा पत्रों पर हस्ताक्षर किये। सभा के सदस्य युवकों ने टोलियां बनाकर गांव-गांव घूम कर विदेशी शासन के विरुद्ध प्रचार किया। पुलिस आपके पीछे पड़ गयी। यहां से आप कानपुर गये। इसके पश्चात बेलगांव कांग्रेस अधिवेशन होते हुये पंजाब लौटे और अमृतसर में "अकाली" पत्र का सम्पादन किया। आप पर अनेक आरोप लगाकर गिरफ्तार किया गया और छः हजार रुपये की जमानत पर छोड़ा गया। सन् १९२६ में लाहौर में रामलीला के अवसर पर एकत्रित जनसमूह में बम विस्फोट की घटना में भगत सिंह को फंसाया गया। आरोप सिद्ध न होने एवं नगर के प्रतिष्ठित लोगों के बीच में पड़ने पर भी उन्हें आठ हजार की जमानत पर छोड़ा गया।

सन! १९२७ में आपने डेरीफार्म खोला जो मात्र एक वर्ष ही चल सका। इसका कारण क्रांतिकारी गतिविधियों में आपकी व्यस्तता रही। ९ अगस्त १९२५ के काकोरी कांड के द्वारा क्रांतिकारियों ने विदेशी शासन को हिला दिया था। १७ से १९ दिसम्बर १९२७ के बीच इस कांड के प्रमुख क्रांतिकारी पं० राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी तथा ठाकुर रोशन सिंह को क्रमशः गोरखपुर, फैजाबाद, गोण्डा और इलाहाबाद में फांसी पर लटकाया गया। भगत सिंह ने बड़े उत्साह से मैजिक लालटेन से पं० राम प्रसाद बिस्मिल की कहानी लोगों को सुनाई। इसके बाद इसी तरह दूसरे शहीद हुये देशभक्तों के बलिदान दिवस भी लाहौर के बेहला हाल में मनाये गये।

नौजवान भारत सभा में कुछ अंग्रेजों के पिट्ठू एवं भीरु प्रकृति के युवक भी शामिल हो गये थे। इसके लिये कठिन परीक्षा का प्रबन्ध किया गया। भगत सिंह ने छः मोमबत्तियां एक दूसरी से सटाकर जलाईं और उन पर अपनी हथेली रख दी। हथेली से खून एवं मांस जल कर गिरने लगा। २० मिनट बाद साथियों ने बलपूर्वक भगत सिंह का हाथ हटा दिया। नकली सदस्य इस लोमहर्षक घटना से भयभीत होकर चले गए। यह घटना भगत सिंह की देशभक्ति एवं देश के लिये कष्ट सहन करने की क्षमता का जीवन्त उदाहरण है।

२० अक्टूबर सन् १९२८ को पुलिस अधीक्षक स्काट एवं उप अधीक्षक साण्डर्स ने लाला लाजपत राय पर भीषण लाठी प्रहार किया जिसके परिणाम स्वरूप घटना के उनतीसवें दिन १७ नवम्बर को लाला जी की मृत्यु हो गयी। लाला जी विशाल जुलूस को लेकर लाहौर रेलवे स्टेशन के बाहर साइमन कमीशन के विरोध में प्रदर्शन कर रहे थे। इस अपमान का बदला चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरु तथा जय गोपाल ने साण्डर्स की १५ दिसम्बर १९२८ को हत्या करके लिया। क्रांतिकारी डी० ए० वी० छात्रावास की ओर भागे। चेतावनी के बावजूद पीछा करने के कारण चन्द्रशेखर आजाद के माउजर से निकली अचूक गोली ने पुलिसकर्मी चानन सिंह का काम तमाम कर दिया। पुलिस छानबीन करती रही और भगत सिंह केशदाढ़ी व मूंछें मूंड़ा कर अंग्रेज साहब बन भगवती चरण की पत्नी साहब की मेम, राजगुरु साहब को नौकर बनाकर कलकत्ता मेल से सी.आई.डी. की आंखों में धूल झोंकर कलकत्ता पहुंच गये। आजाद साधूवेश धारण कर उसी गाड़ी से मथुरा पहुंच गये। देश के नेता की

शान व आन के लिये क्रांतिकारियों का यह कार्य स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास की प्रमुख स्वर्णिम घटना है।

कलकत्ता में भगत सिंह १९ कार्नवालिस स्ट्रीट स्थित आर्य समाज में रहे। वह अपनी थाली व लोटा आर्य समाज के सेवक तुलसीराम को दे आये थे। उन्होंने सेवक से कहा था कि जब कोई क्रांतिकारी आये तो उसे उन बर्तनों में भोजन कराना परन्तु गद्दार उनमें भोजन न कर सके। भगत सिंह जी के तुलसीराम जी को यह भी कहा था कि उनके राजनीतिक विचार कुछ भी हैं परन्तु उनके धार्मिक विचार आर्य समाजी हैं।

८ अप्रैल १९२९ को केन्द्रीय असेम्बली में पब्लिक सेफ्टी बिल पास किया जाना था जिसका उद्देश्य भूखे व शरीर ढकने के लिये वस्त्र की मांग करने वाले मजदूरों के आन्दोलन का दमन था। सरदार वल्लभ भाई पटेल के बड़े भाई वी० जे० पटेल असेम्बली के अध्यक्ष थे परन्तु विवश थे। ऐसी स्थिति में भगत सिंह एवं बटुकेश्वर दत्त ने असेम्बली में दो बम फेंक कर जोरदार डरावना धमाका किया। जानबूझकर बमों में शरीर को हानि पहुंचाने वाले पदार्थ नहीं डाले गये थे।

जेलों में कैदियों के साथ अमानवीय व्यवहार के विरोध में भगत सिंह एवं साथियों ने १४ जून १९२९ से अनशन आरम्भ किया। १३ सितम्बर १९२९ को यतीन्द्र नाथ दास की मृत्यु हो गई। अनशन का उस दिन उनका तिरेसठवां दिन था। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने ६०० रुपये भेजकर शव कलकत्ता मंगवाया। लाखों लोग उनकी अन्त्येष्टि में सम्मिलित हुये। भगत सिंह ने ४-१०-१९२९ को ११० दिन बाद अपना अनशन समाप्त किया। सरकार के जेल सुधार के काम से मुकर जाने पर भगत सिंह ने फवरी १९३० के तीसरे सप्ताह तक दूसरी बार ६३ दिन का अनशन किया। त्याग का ऐसा उदाहरण शायद विश्व इतिहास में न मिले? क्या इस २२ वर्ष के युवक के बलिदान को भुला नहीं दिया गया है?

७ अक्टूबर १९३० को भगत सिंह सुखदेव तथा राजगुरु को फांसी का दंड घोषित किया। फांसी की तिथि २४ मार्च १९३१ को तय की गयी परन्तु अधिकारियों ने निरंकुशता का परिचय देकर २३ मार्च १९३१ की सायं जेल नियमों के विरुद्ध फांसी पर चढ़ाया और गुपचुप रीति से फिरोजपुर के पास सतलुज के तट पर अग्नि को अर्पित कर दिया गया। फांसी के फंदे की ओर बढ़ते हुये भगत सिंह का नारा था

**दिल से निकलेगी न मरकर भी वतन की उल्फत।**
**मेरी मिट्टी से भी खुशबू-ए-वफा निकलेगी॥**

**मृत्यु से एक दो दिन पूर्व मां विद्यावती अपने पुत्र से मिली थीं। पुत्र भगत सिंह ने उन्हें कहा "वेवो तुम लाश लेने मत आना, कुलतार (भगत सिंह के छोटे भाई) को भेज देना। यदि तुम मेरी लाश देखकर रो पड़ीं, तो लोग कहेंगे वीर भगत सिंह की मां रो रही है।**

अदालत में वकील के झूठे वाक्यों पर भगत सिंह हंस पड़े थे। वकील के कहने पर कि हंसना अदालत का अपमान है, भगत सिंह ने वकील से पूछा था कि जब वह फांसी के फंदे पर खड़ा होकर हंसेगा तो किससे शिकायत करोगे। यह शब्द उन्होंने फांसी के फंदे पर हंसकर सत्य सिद्ध कर दिये। भारत मां के इस अनोखे सपूत से युवक प्रेरणा लें, सामाजिक क्रांतिकारी विषमता दूर करें तथा स्वराज्य को सुराज्य बनाने में अग्रसर हों, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

*(पृष्ठ ८ का शेष)*

गुरुत्वाकर्षी तन्त्र विद्यमान हैं। आईंस्टीन ने इसे विश्रामहीन विक्षुब्ध स्थान की संज्ञा दी थी। मरुत भी इसी प्रकार भौतिक बल का एक महत्त्वपूर्ण घटक है। जो ४९ कहे जाते हैं। ये सदा समूह में होते हैं। सामान्यतः इन मरुतों में विद्युत आवेश होता है जिसके लिए (ओरेरिस बोरियेलिस) ध्रुवीय ज्योतिप हो सकता है।

हम इस लेख को अधिक न बढ़ाते हुए ऋग्वेद (५/११/३) के धूमकेतु की भी चर्चा करते हैं। वहां कहा गया है—**धूमस्ते केतुरभवद् दिविश्रितः।** प्रसिद्ध योरोपियन विद्वान् ग्रिफिथ ने इस मन्त्र की व्याख्या में कहा है कि अग्नि ने अपने धारण रूप से पृथ्वी और द्यु को उत्पन्न किया। धूमकेतु जो कि अत्यन्त चमकदार है, सूर्य से उत्पन्न हुआ। अन्य प्रदीप्त बलों से इसे शक्ति प्राप्त होती है। जब यह उसके सम्पर्क में आता है। इस पवित्र अग्नि का धुआं जब आकाश की ओर बढ़ता और छा जाता है तो यह धूमकेतु का निर्माण करता है।

इस प्रकार इस लेख में हमने वेद के ऋत पर आधारित कुछ भौतिक सिद्धान्तों की संक्षिप्त चर्चा की। इस प्रकार के बहुत से ज्ञान विज्ञान के सूत्र वेदों से एकत्रित किए जा सकते हैं, जो हमारे प्राचीन मनीषियों के बुद्धि वैभव को प्रकट करते हैं।

# विदेशों में "आजाद हिन्द सरकार" का गठन

❑ मदन सिंह

**भारत** के रक्तिम इतिहास में एक ऐसे धार्मिक, राजनीतिक एवं तेजस्वी क्रांतिकारी योद्धा का उद्भव हुआ जिसने मातृभूमि को अंग्रेजी दासता से मुक्त करने के लिए भारत से बाहर जाकर कई मित्र देशों की सहायता से प्रवासी भारतीयों की एक सशक्त फौज ही नहीं अपितु ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक समानान्तर सरकार की स्थापना कर डाली थी। उस महान् क्रान्तिकारी का नाम था—मृत्युंजय नेताजी सुभाष चन्द्र बोस। नेताजी द्वारा स्थापित व संचालित आजाद हिन्द सरकार व फौज का इतिहास उनकी विवादास्पद मृत्यु की तरह खंडित आजादी का सुख भोग रहे भारतीयों के मानस पटल पर सदैव धुंधली छाया के रूप में रहा है। परन्तु यह काल चक्र ही है कि नेताजी के जन्म शताब्दी वर्ष में उनके तथा लाखों सहयोगियों के बलिदान की अमर गाथा इस मातृभूमि में एक आवेग केसाथ इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित होने के लिए प्रतीक्षारत है। प्रस्तुत है उसी सन्दर्भ में एक आलेख।

सबसे पहले इतिहास के उन पन्नों की ओर लौटें जहां भारत का इतिहास कांग्रेस युग से गुजर रहा था। आजादी के संघर्ष की बागडोर कांग्रेसी नेताओं के हाथों में थी। उन दिनों श्री सुभाषचन्द्र बोस अपने स्वास्थ्य लाभ हेतु सन् १९३३ में जर्मनी पहुंचे। वहां वियेना (आस्ट्रिया) में हुई एक सभा में उन्होंने अपने मन्तव्य पर प्रकाश डाला कि भारत की आजादी का आंदोलन तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक कि हम सभी तरह की नागरिक सेवाओं ओर मजबूत सशस्त्र सेना का सहयोग न प्राप्त कर लें।

इनमें तनिक भी संदेह नहीं कि श्री बोस को श्री मोहनदास करमचंद गांधी के नेतृत्व में चल रहे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अहिंसक स्वरूप की सफलता में शंका थी। उनकी धारणा थी कि भारत भूमि की आजादी के लिए सशस्त्र क्रांति अभियान की आवश्यकता है। इन्हीं दिनों वियना में ही फ्रांस के विश्व प्रसिद्ध विचारक श्री रोमां रोला से हुई एक भेंट में श्री बोस ने उन्हें टटोलते हुए पूछा था कि अगर भारत में एक ऐसा आंदोलन प्रारम्भ होता है जो गांधी जी की नीतियों से बिल्कुल भिन्न हो उस पर आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? रोला जी ने तत्काल उत्तर दिया कि यदि सत्याग्रह आंदोलन असफल सिद्ध हुआ तो यह गंभीरता का विषय है, क्योंकि यह भारत की आजादी का सवाल है इसलिए अगर अन्य नीतियों से भी यह आंदोलन जारी रखा जाता है तो मुझे संतुष्टि होगी। श्री बोस को उनके विचार अपने अनुकूल लगे और उन्होंने इस दिशा में क्रियात्मक विचार करना प्रारम्भ कर दिया। इसके लिए उन्होंने इतिहास का विशेषकर पिछले सौ वर्षों के भारतीय आजादी के आंदोलन के संदर्भ में ग्रंथों का गहन अध्ययन किया और कई देशो की यात्राएं भी की। भारत की आजादी के आगामी संघर्ष की रूपरेखा को उन्होंने अपनी पुस्तक इंडियन स्ट्रगल में वर्णित किया। बाद में १९३७ में आस्ट्रिया से करांची (भारत) लौटते समय अंग्रेजों ने उस पुस्तक को जब्त कर लिया। इस पुस्तक में उन्होंने उल्लेख किया कि भारत को आजादी किस प्रकार तथा किस रूप में प्राप्त होनी चाहिए।

उनका चिंतन क्षेत्र भारत की आजादी के साथ स्वदेशी संविधान (शासन व्यवस्था) भी रहा। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद की हैसियत से उन्होंने ९ फरवरी १९३८ को हरिपुरा (गुजरात) के ५१वें अधिवेशन में स्पष्ट रूप से कहा कि राष्ट्रीय संघर्ष के इतिहास में कांग्रेस के योगदान के विषय में कई कांग्रेसजनों के दिमाग में स्पष्ट रूपरेखा नहीं है। मैं जानता हूं कि कई मित्र यह सोच रहे हैं कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् कांग्रेस दल को खत्म हो जाना चाहिए। इस प्रकार का विचार नितांत गलत है। जो भी संस्था स्वतंत्रता की उपलब्धि करेगी वही संग्रामोत्तर काल में संपूर्ण रूप से सरकार के पुनर्निमाण के कार्यक्रम का क्रियान्वयन करे। भावी सरकार को सर्वप्रथम गरीबी के निवारण, अशिक्षा, बीमारियों को खत्म करने के लिए वैज्ञानिक विधि से उत्पादन तथा वितरण के लिए एक योजना आयोग का गठन करना होगा। तभी हमारी स्वाधीनता का मार्ग प्रशस्त होगा। उन्होंने इस बात पर अधिक बल दिया कि सत्याग्रह आंदोलन को केवल अवरोधात्मक नहीं अपितु क्रियात्मक दिशा दी जाए। उनके इन विचारों का युवा कार्यकर्ताओं पर अच्छा प्रभाव पड़ा। धीरे-धीरे एक बहुत बड़ा जनसमुदाय उनकी नीतियों का समर्थक हो गया। इस तरह अपने सक्रिय और क्रांतिकारी सिद्धान्तों केकारण सुभाष

बाबू ने गांधी जी की लोकप्रियता को काफी पीछे धकेल दिया। अगले वर्ष अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद के लिए गांधी ने डॉ० पट्टाभिसीतारमैया को सुभाष बाबू के विरोध में प्रायोजित किया। परन्तु सिद्धांतनिष्ठ श्री सुभाष बाबू को ही कांग्रेसियों ने अध्यक्ष पद के लिए मनोनीत किया। कुछ समय बाद सुभाष बाबू गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। १० मार्च १९३९ को होने वाले ५२वें अधिवेशन के लिए वे उसी हालत में कलकत्ता से जबलपुर त्रिपुरा अधिवेशन में पहुंचे। वहां एक 'पन: प्रस्ताव' पारित हुआ। जिसके अनुसार सुभाष बाबू कांग्रेस कार्यसमिति का गठन गांधीजी के मर्जी से ही करेंगे। यह प्रस्ताव कांग्रेस संविधान के विपरीत था, क्योंकि कार्यसमिति के गठन का अधिकार केवल अध्यक्ष को ही था। चूंकि श्री सुभाष यह निर्णय लेने में सक्षम थे अतः उन्होंने अध्यक्ष पद से विरोध स्वरूप इस्तीफा दे दिया।

३ मई १९३९ को सुभाष बाबू ने कलकत्ता में फारवर्ड ब्लाक की स्थापना कर डाली। फारवर्ड ब्लाक के एक आन्दोलन में श्री सुभाष बाबू को अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर लिया और उनकी छः महीने की जेल यात्रा का प्रबन्ध कर दिया। इससे पूर्व सुभाष बाबू ने अखिल भारतीय फारवर्ड ब्लाक के तत्कालीन महामंत्री को सोवियत राजदूत से सहायता लेने गुप्त रूप से जापान भेज दिया था। जेल से छूटने के बाद श्री सुभाष बाबू को उनके घर पर कड़े पहरे में नजरबंद कर रखा गया और मिलने-जुलने वालों पर विशेष निगरानी शुरू कर दी परन्तु विद्रोह पर उतारू सुभाष बाबू एक रात मौका पाकर वहां से भाग कर मौलवी के वेश में काबुल जा पहुंचे। वहां पर एक अन्य क्रांतिकारी उत्तमचन्द मल्होत्रा के घर पर अपना अड्डा बना लिया। नये दल के साथ गुप्त रूप से २० मार्च १९४१ को कार द्वारा बुखारा, समरकन्द होते हुए मास्को जा पहुंचे। मास्को में स्टालिन और मालोतोव ने सुभाष बाबू को द्वितीय विश्व युद्ध में ब्रिटेन के विरुद्ध लड़ रहे जर्मन, इटली और जापान से सहायता लेने की सलाह दी। फिर सुभाष बाबू जर्मनी की ओर रवाना हुए। ३ अप्रैल १९४१ को अतिगोपनीय ढंग से जर्मनी की राजधानी बर्लिन पहुंच गए। वहां उनके विदेशी राजनेताओं से सम्पर्क स्थापित करने, ठहरने तथा सुरक्षा सम्बन्धी सभी सुविधाओं की व्यवस्था पूर्वनियोजित थी। जर्मनी सम्राट एडोल्फ हिटलर के आदेशानुसार जर्मनी के विदेश विभाग को इस कार्य के लिए तैयार किया था जिससे सुभाष बाबू अपनी योजना में सफल हो सकें।

सुभाष बाबू ने दिन-रात एक करके प्रवासी भारतीयों को मिलाकर आजाद हिन्द संघ की स्थापना कर ली। जर्मनी ने उनके संगठन को दूतावास का दर्जा देकर सौफिन्सट्रेसी क्षेत्र में स्थापित कर दिया जहां पहले अमेरिका के आर्मी अफसर ठहरा करते थे। आजाद हिन्द संघ के कार्यक्रम और सुभाष के सर्वस्व त्याग से प्रभावित होकर एडोल्फ हिटलर ने उन्हें फ्राइज इण्डीशेफूहरर—अर्थात् आजाद हिन्द के नेता की उपाधि दी। तभी से सुभाष बाबू को नेताजी कहा जाने लगा। आजाद हिन्द संघ की तरफ से नेताजी ने जर्मन सरकार से एक अनुबंध स्वीकार किया। उस अनुबंधानुसार जर्मनी भारत की आजादी के लिए सभी प्रकार से सहयोग करेगा नेताजी ने इसे राष्ट्रीय ऋण के रूप में सहमति दी। जर्मनी में रहने वाले प्रवासी भारतीय आजाद हिंद संघ के आर्थिक सलाहकार श्री एन० जी० गनपुले के सहयोग से कुछ ही समय पश्चात् इस ऋण का काफी बड़ा हिस्सा जर्मनी को चुका दिया गया था।

इधर जब भारत में भारत छोड़ो आन्दोलन चल रहा था उस समय नेताजी ने आठ हजार ब्रिटिश इंडियन आर्मी के जवानों को मिलाकर अपनी फौज बना ली। थोड़े समय पश्चात् सिंगापुर में सत्रह फरवरी १९४२ को जनरल मोहन सिंह ने पचास हजार ब्रिटिश इंडियन आर्मी के सिपाहियों को मिलाकर भारतीय मुक्ति वाहिनी स्थापित कर दी। इस कार्य हेतु सिंगापुर में वरिष्ठ क्रांतिकारी श्री रास बिहारी बोस, कैप्टन मोहम्मद अकरम तथा सरदार बुद्ध सिंह का योगदान अधिक रहा। ये सभी क्रांतिकारी मातृभूमि की आजादी के लिए पूर्ण रूप से समर्पित थे। जर्मनी में नेताजी के हिटलर से सम्बन्ध इतने मजबूत थे कि अक्सर उनमें ब्रिटेन से युद्ध की योजना को लेकर अक्सर वार्तालाप होते रहते थे। एक बार नेताजी ने एडोल्फ हिटलर को आजाद हिंद फौज के निरीक्षण के लिए आमंत्रित किया तब हिटलर ने भारतीय फौजियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि नेताजी मुझसे अधिक बड़े हैं। मैं तो केवल आठ करोड़ जर्मन लोगों का नेता हूं, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस तो अड़तीस करोड़ भारतीयों के नेता हैं। मैं और मेरे जर्मन सैनिक उन्हें प्रणाम करते हैं।

नेताजी ने जर्मनी में ही फिलिस्तीन के क्रांतिकारी नेता मुफ्ती-ए-आजम हाजी अमीर-उन- हुसैनी से सन्धि कर ली। इसी तरह ईराक के नेता रशीद अली गिलानी से भी शत्रु का शुत्र मित्र नीति के तहत समझौता तय कर लिया।

आजाद हिन्द फौज ने धीरे-धीरे अपनी संख्या बढ़ा ली और इस कारण फौज का खर्चा भी बढ़ गया। तब जर्मनी ने अपने कोष से भारतीय फौज को वेतन देना प्रारम्भ कर दिया। इसके बदले में फौज यह शपथ लेती थी।

"मैं ..... ईश्वर के नाम पर यह पवित्र शपथ करता हूं कि जर्मन जनता और जर्मन राष्ट्र नेता, जर्मन फौज के कमाण्डर-इन-चीफ एडोल्फ हिटलर के प्रति आज्ञाकारी रहूंगा ओर आजादी के उस युद्ध में भाग लूंगा जिसका संचालन नेताजी सुभाष चन्द्र बोस कर रहे हैं।"

भारतीय फौज को आजादी की लड़ाई के लिए सम्पूर्ण व्यवस्था जर्मन सेना की ओर से उपलब्ध हो रही थी। सेना प्रशिक्षण की व्यवस्था जर्मनी के वनाच्छादित प्रदेशों में की गई ताकि कठिन परिस्थितियों में भी भारतीयों को युद्ध का अनुभव हा जाए। अपनी योजना के अनुरूप नेताजी ने फौज के लिए राजनीतिक प्रशिक्षण के कार्यक्रम को भी जारी रखा। इसके तहत उन्हें भारत के इतिहास, महान युद्धों तथा मुक्ति संग्राम, संसार में हुए महान् योद्धाओं की जीवनियां तथा अन्य देशों के नागरिकों से व्यवहार कुशलता का प्रशिक्षण दिया गया। इसके आशाजनक परिणाम के प्रारम्भ की झलक कुछ ही समय में स्पष्ट हो गई, जब विभिन्न सम्प्रदायों के मानने वाले फौजियों के हृदय में देवी-देवताओं के स्थान पर 'राष्ट्र' और 'जय हिन्द' ने अपना स्थान ले लिया। शीघ्र ही सेना ने अपना एक स्वतंत्र रेडिया भी स्थापित कर लिया।

२६ जनवरी १९४३ को नेताजी ने घोषणा की "ब्रिटिश साम्राज्यवाद और भारतीय राष्ट्रवाद अब एक साथ नहीं रह सकते। ब्रिटिश साम्राज्यवाद का अन्त निश्चित है, भारत शीघ्र ही स्वाधीन होगा। जहां तक भारत के आंतरिक राष्ट्रीय मामलों का सम्बन्ध है, भारत को उन्हें संचालित करने में पूर्ण स्वतंत्रता होगी और इसमें किसी बाहरी शक्ति के हस्तक्षेप को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।"

उसी वर्ष जून के महीने में नेताजी पनडुब्बी द्वारा जर्मनी से पेनांग (मलाया) पहुंच कर वहां से हवाई जहाज से जापान पहुंचे। वहां टोकियों में जापान के प्रधानमंत्री तोजो से आजाद हिन्दी फौज के गठन हेतु संधि की। वहीं नेताजी के नेतृत्व में चालीस हजार नौजवान फौज में शामिल हुए। आजादी के बाद भारत के हजारों मील लम्बे समुद्री तट की रक्षा का प्रश्न था इसी योजना के तहत जर्मन छोड़ने से पूर्व नेताजी ने आजाद हिन्द फौज को जर्मनी से हटाकर हालैंड स्थानान्तरित करने की व्यवस्था कर दी। जिससे वे समुद्रतट की रक्षा के प्रशिक्षण में प्रवीण हो सकें। पांच महीने के प्रशिक्षण के पश्चात फौज को फ्रांस के तट पर अटलान्टिक तट की किलेबन्दी के लिए भेजा ताकि वहां पर आजाद हिन्द फौज समुद्री युद्ध का व्यावहारिक अनुभव ले सके।

२१ जून १९४३ को नेताजी ने टोकियों से अपना भाषण प्रसारित किया "जो लोग वास्तव में भारत की आजादी की इच्छा व्यक्त करते हैं उन्हें इसके लिए युद्ध करना होगा। हमें चाहिए कि हम अडिग विश्वास के साथ यह लड़ाई तब तक जारी रखें, जब तककि अंग्रेजी साम्राज्य का सम्पूर्ण नाश न हो जाए और उसकी राख से एक स्वाधीन राष्ट्र का उदय न हो जाए। इस संघर्ष में पीछे हटने का या लड़खड़ाने का प्रश्न ही नहीं उठता। हम आगें और आगे बढ़ते जाएंगे जब तक आजादी की मंजिल न मिल जाए।"

४ जुलाई को श्री रासबिहारी बोस ने नेताजी को सिंगापुर में आमंत्रित करके इंडियन इन्डिपेंडेंस लीग (आजाद हिंद संघ) के पद को त्याग कर उन्हें सम्पूर्ण आजाद हिंद आन्दोलन का नेता घोषित कर दिया। इस संघ की शाखाएं मलाया, फिलिपीन्स, थाईलैंड, डच-ईस्ट-ईडी, फ्रैंच, इंडोचीन, शंघाई, बर्मा, कोरिया और मंचूरिया में स्थापित थीं। यह इतिहास का एक अति महत्त्वपूर्ण समय था जब भारत की आजादी के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार हो गया था। दक्षिण पूर्वी एशिया में रहने वाले प्रवासी भारतीयों ने अपने-अपने परिवार से आजाद हिन्द फौज में एक-एक नौजवान तथा लड़कियां रानी झांसी रेजिमैंट में शामिल करवा दिया। इस तरह कुल मिलाकर तीन लाख की आजाद हिन्द फौज तैयार हो गई।

५ जुलाई १९४३ को आजाद हिन्द फौज के अस्तित्व की घोषणा पूरे विश्व भर में प्रसारित कर दी, साथ ही यह संदेश भी आज का दिन मेरे जीवन का सबसे गर्व का दिन है। ईश्वर की कृपा से आज मुझे यह अपूर्व अधिकार और सम्मान प्राप्त हुआ है कि मैं सारे संसार को यह बता रहा हूं कि भारत को आजाद करने वाली फौज तैयार हो गई है।" यह मुक्ति वाहिनी एक सैन्य संगठन के रूप में सिंगापुर के रणक्षेत्र में खड़ी की गई है। वह सिंगापुर जो कभी ब्रिटिश हुकूमत का गढ़ था। यह सेना भारत को केवल आजादी ही नहीं दिलाएगी अपितु स्वाधीन भारत में राष्ट्रीय सेना का संगठन भी करेगी। प्रत्येक भारतीय को इस बात का गर्व होना चाहिए कि यह सेना उसकी अपनी सेना है और यह भारतीय नेतृत्व में संगठित की गई है और जब युद्ध का सौभाग्यशाली दिन आएगा तो यह भारतीय कमान में ही युद्ध स्थल की ओर कूच करेगी।"

नेताजी एक के बाद एक इतिहास के नये अध्यायों की रचना कर रहे थे, सिंगापुर के कोने-कोने में एक नवीन

क्रांति का संचार हो चुका था। २१ अक्टूबर १९४३ को सिंगापुर में अंतरिम आजाद हिन्द सरकार की विधिवत स्थापना का ऐलान कर दिया। इस ऐलान को सैन फ्रांसिसको रेडियो ने दुनिया भर में प्रचारित किया। इस सरकार के राष्ट्राध्यक्ष और प्रधानमंत्री पद की शपथ लेते नेताजी ने भारतीयों को आश्वासन दिया–

**"मैं अपने अड़तीस करोड़ देशवासियों को स्वाधीन करने के लिए अपने जीवन की अन्तिम सांस तक आजादी का पावन युद्ध लड़ता रहूंगा। मैं सदैव ही भारत का सेवक रहूंगा और अपने करोड़ों भाई-बहनो के शुभचिन्तन को अपना परम कर्त्तव्य समझूंगा।"**

नेताजी ने स्वाधीनता आंदोलन के सभी साधन अर्जित कर लिये थे अब केवल अन्तिम लड़ाई छेड़ना ही शेष था। इस अंतरिम सरकार के लिए भारतीय सैनिक और मंत्रियों का एक मंत्रीमंडल का निर्माण कर के विभागों के वितरण का कार्य भी विधिवत कर दिया।

अन्ततः २४ अक्टूबर १९४३ को रात्रि के बारह बजकर पांच मिनट पर नेताजी ने मंत्रिमंडल की प्रथम बैठक में लिए निर्णय के अनुसार इंग्लैंड और अमेरिका के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। सभी सेनानियों ने भारतीय कमान के आदेशानुसार रणभूमि की ओर इस भावना को लेकर प्रस्थान किया -

**आजादी के इतिहास न स्याही के कायल**
**वे लाल खून से युग-युग लिखे जाते हैं,**
**जो शीश धड़ों पर शोभित हैं कट जाने को**
**वे किसी शर्त पर झुकने को तैयार नहीं,**
**बन गई स्वयं आजादी ही जिनकी मंजिल**
**अब वे पैर बीच में रुकने को तैयार नहीं।**


## स्वतन्त्रता दिवस स्वर्ण जयन्ती वर्ष पर

उन अमर शहीदों की स्मृति में नमन जिन्होंने मातृभूमि को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति दिलाने के लिए देश और विदेशों में आजादी की अलख जगाई। जिन्होंने अंडमान के कारागार में यम यातनाएं झेलीं जो फांसी के फंदे पर हंसते-हंसते झूल गए। जिन्होंने कारागारों में अपनी जवानी बिताई। जिन्होंने यह सपना देखा था :-

**अपने देश में अपना राज। हमें चाहिए शुद्ध स्वराज।**

उनके सपनों का भारत बनाने, इस देश को दुनिया के रंगमच पर प्रमुख स्थान दिलाने, भारत को सच्चे अर्थों में सुखी और समृद्ध राष्ट्र का रूप देने का संकल्प ही १५ अगस्त के स्वतन्त्रता दिवस का आह्वान है।

| | | |
|---|---|---|
| **डी० एन० सिन्हा** | **सिब्ते रजी** | **स० रमेन्द्र सिंह** |
| *अध्यक्ष* | *चेयरमैन* | *सचिव* |

**आल इंडिया कौमी एकता कमेटी, नई दिल्ली**

# भारतमाता के महान सपूत शीलभद्र याजी

❑ डी० एन० सिन्हा, (उपाध्यक्ष अ०भा० स्वतन्त्रता सेनानी संगठन)

एक काया में अनेक क्षेत्रों में कर्म कौशल का चमत्कार जिस कीर्ति पुरुष ने दर्शाया था, वह अब बीते दिनों की याद भर रह गया है। वह सशरीर तो अब हमारे बीच नहीं है मगर, उन्होंने भारत माता के गले में पड़े गुलामी के तौक को काटने और आजाद हिन्दुस्तान को दुनिया के रंगमंच पर एक अलग स्थान दिलाने की दिशा में जो प्रयास अपनी जिन्दगी की आखिरी सांस तक किए थे, वह एक ऐसा इतिहास है कि जो उस हर नौजवान को दिशा दान देगा जिसके मन में मादरे वतन के लिए कुछ करने की तमन्ना है। वह कीर्ति पुरुष शीलभद्र याजी के नाम से उभरता सा गया है।

स्वतंत्र आन्दोलन की मशाल को, एक साधारण किसान परिवार में, बिहार के पटना जिला में बख्तयारपुर ग्राम में २२ मार्च, १९०६ को जन्मे, शील भद्र ने होश संभालते ही अपने हाथों में संभाला था। अपने माता-पिता की इकलौती संतान थे शीलभद्र याजी, जिनके बाल्यकाल में माता का वरदहस्त उनके सिर से उठ गया था। मगर उस बालक ने तो उस भारत माता के महिमामंडित रूप के प्रति अपना सब कुछ समर्पित कर देने का संकल्प ग्रहण कर लिया था, जो भारत की कोटि-कोटि संतानों की मां है। बाल्यकाल में ही वह कांग्रेस से प्रभावित होकर जंगे आजादी की राह के पथिक बन गए थे और खादी को ही वर्दी बनाकर इस छात्र सैनिक ने अपनी जिन्दगी का मकसद सुनिश्चित कर लिया था। १९३१ में करांची में नेताजी सुभाष की अध्यक्षता में हुए भारत नौजवान सभा के अधिवेशन में वह सक्रिय सहभागी बने और नेताजी को ही उन्होंने अपना पथ प्रदर्शक मान लिया था। १९३०-३२ में महात्मा गांधी के नेतृत्व में छिड़े सत्याग्रह आंदोलन में पटना जिला में कांग्रेस संगठन की कमान भी उन्होंने ही संभाली थी। सविनय अवज्ञा आंदोलन के सिलसिले में उन्हें साढ़े सात माह की कड़ी कैद की सजा सुनाई गयी और उन्हें पटना जिला जेल व कैम्प जेल में रखा गया था परन्तु मार्च १९३१ में गांधी-इर्विन पैक्ट के बाद वह रिहा हो गए थे। १९३२ में उन्हें फिर से बंदी बनाकर पटना सिटी अफीम गोदाम जेल में ५६ दिन तक रखा गया था। उसी वर्ष शराब की दुकानों पर दीघाघाट पटना में धरना देने के कारण उन्हें नौ माह बामशक्कत कैद की सजा सुनाई गई जबकि १९३३ में फौजदारी कानून एवं संशोधन अधिनियम के तहत वह गिरफ्तार हुए मगर फरवरी १९३४ में बिहार में आए प्रचंड भूकम्प के कारण जेल से रिहा कर दिए गए।

सन् १९४० में भारत सुरक्षा नियम के तहत उन्हें पटना में बंदी बनाया गया और छपरा अदालत से उन्हें ढाई साल कैद की सजा सुनाई गयी थी। १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्होंने बम्बई में भूमिगत गतिविधियां का संचालन करते हुए गिरफ्तार कर एक वर्ष तक कैद में रखा गया। १९४४ में भी उन्हें पुनः बंदी बनाया गया और द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति तक बंदीवास भोगते रहे।

भारत को १९४७ में स्वतंत्रता प्राप्ति का सुयोग मिला था। अनेक क्रांतिकारियों और देशभक्तों की साधना अंततः इसी वर्ष सफल हुई थी। १८५७ में बूढ़े बहादुर शाह जफर, रानी लक्ष्मीबाई, कुंवर सिंह और नाना साहब पेशवा ने आजाद हिन्दुस्तान का जो सपना संजोया था वह ९० साल के क्रान्तिकारी और अहिंसक संघर्ष के बाद उसी वर्ष पूरा हुआ था। उस वर्ष भी नेताजी की आजाद हिन्द फौज संबंधी योजना में सहयोगी होने के आरोप में वह बंदी बनाए गए थे और आठ माह तक कारागृह में रहने के बाद १५ अगस्त १९४७ को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर रिहा हुए थे।

गांधी जी की सादगी उनके जीवन का आदर्श थी तो नेताजी सुभाष का दर्शन उनके जीवन का मार्ग दर्शक। एक गरीब किसान के इस बेटे ने स्वामी सहजानन्द सरस्वती के मार्ग दर्शन में किसानों की पीड़ा और तकलीफों को दूर करने के लिए किसान सभा की कमान संभाली थी तो देश में

समता की गंगा बहाने के लिए उसने समाजवादी विचारधारा के प्रचार-प्रसार में अपनी पूरी ताकत लगाई। १९३७ में ही वह बिहार के बाढ़ उप प्रभाग से विधायक चुने गए। आज तो देश में मंत्री का सन्तरी बनने के लिए भी लोग पापड़ बेलते हैं, मगर उन्होंने राज्य की सत्ता के कर्णधार को अपने इस निश्चय से अवगत करा दिया था कि वह मंत्री पद कदापि स्वीकार नहीं करेंगे। १९५७ में वह कांग्रेस नामांकन पर राज्यसभा के सदस्य भी चुने गए। १९६४ के राज्यसभा चुनाव में एक प्रसिद्ध उद्योगपति के मुकाबले किस तरह पराजित हुए वह भी एक अलग कहानी है। जिसका एक अध्याय यह भी है उनके मुकावले विजयी हुए सज्जन भ्रष्टाचार के अपराध में ६ वर्ष के लिए अयोग्य घोषित किए गए।

शीलभद्र याजी के बहु प्रतिभा मंडित जीवन के अनेक पक्ष थे। वह एक प्रमुख भाषाविद् थे और भ्रमण से भी उन्हें लगाव था। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियों में भारतीय भागीदारी के प्रबल पक्षधर याजी जी ने जहां सभी देशों से मैत्री का पक्ष लिया, वहीं राष्ट्रहित को कभी उपेक्षित नहीं होने दिया। उनकी इसी प्रवृत्ति का प्रमाण २० अक्टूबर १९६२ को चीन के हमले के बाद भारत-चीन मैत्री संघ से त्यागपत्र देने से मिला था।

याजी जी देहावसान के समय (२८ जनवरी ९६) राहुल सांकृत्यायन स्मारक न्यास के अध्यक्ष भी रहे थे। मोटूरंग (मणिपुर) में आजाद हिन्द फौज शहीद स्मारक के वह सबल सूत्रधार थे। अखिल भारतीय स्वतंत्रता सेनानी संगठन के सफल संचालक के रूप में उन्होंने स्वतंत्रता सेनानियों को सुविधाएं प्रदान कराने में महती भूमिका निभाई थी। पत्रकार के रूप में उनकी खास छवि रही। एक सफल लेखक शीलभद्र याजी प्रभावी वक्ता भी थे। वह भारत माता के एक ऐसे सपूत थे कि जिनका प्रेरक नेतृत्व हमें सदा स्मरण रहेगा। उनकी सहनशीलता और त्याग भी हमारा पथ प्रदर्शन करेगा। उन्होंने अपना यौवन देश की आजादी के लिए लगाया तो शेष आयु भारत भूमि के विकास के लिए समर्पित की। उनसे जो भी एक बार मिलता था उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हुए विना नहीं रह पाता था। स्वतंत्रता सेनानी संगठन की त्रिमूर्ति (श्री शीलभद्र याजी, श्री एन० जी० रंगा और चौ० रणधीर सिंह) में वे अग्रगण्य थे।

भारत के भविष्य के प्रति उनके मन में अटल और अडिग विश्वास रहा। वह अपनी सोच में समाजवादी थे किन्तु देश से वाहर निष्ठा की कतिपय दलों की सोच को उन्होंने कभी भी मान्य नहीं किया था। वह देश के समकालीन नेताओं के संपर्क में रहे, किन्तु उन्होंने अपने स्वयं को भुनाने की कृतघ्नता को, दुर्बलता को कभी भी अपने पास नहीं फटकने दिया। उनका जीवन वृत्त हमारे लिए एक प्रकाश स्तम्भ था और भविष्य में भी बना रहेगा।

## 'बने सुराज्य, स्वराज्य हमारा'

❑ राधे श्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

भारत का हो नया विकास,
संस्कृति से लें सभी प्रकाश,
दनुज वृत्तियां क्षत विक्षत हों,
खिले मनुजना की शुचि आश
उग्रवाद आतंकवाद का मिटे
दनुजता का अंधियारा।
वने सुराज्य, स्वराज्य हमारा॥
नैतिकवान बनें सब शासक,
परहित में हो लिप्त प्रशासक,
शोषण उत्पीड़न समाप्त हो
मिले सभी को समुचित हक,
अमर शहीदों के स्वप्नों का
भारत बनें हमारा प्यारा।
बने सुराज्य, स्वराज्य हमारा॥

समरसता का हो विस्तार,
खुलें सत्य धर्म के द्वार,
बिखरे पूर्ण राष्ट्र में फिर से
समता शुचिता सौख्य अपार,
स्वार्थवाद अलगाववाद से
करें सभी हम आज किनारा।
बने सुराज्य, स्वराज्य हमारा॥
फिर से जगे त्याग बलिदान,
गूंजे राष्ट्र भक्ति का गान,
शासन और प्रशासन की हो
भ्रष्ट व्यवस्था का अवसान,
सृजन करें हम नए मार्ग का,
दिव्य बने फिर कण-कण सारा।
बने सुराज्य, स्वराज्य हमारा॥

# क्रान्तिकारियों में राजकुमारी : प्रीतिलता

❑ वचनेश त्रिपाठी 'साहित्येन्दु'

सन् १९३२ के २४ सितम्बर की रात १० बजे क्रान्तिकारियों की राजकुमारी प्रीतिलता ओदेदार (वाछार) ने घायल अवस्था में जब देखा कि वह अंग्रेजों के हाथ पड़ जाएगी तो स्वयं ही तत्काल उस अंधेरी रजनी में चुपचाप आत्म विसर्जन कर लिया।

कु० प्रीतिलता चटगांव (पूर्वी बंगाल) के कालेज में ही पढ़ते हुए स्नातिका हुई थीं। बी. ए. करने के बाद वह एक विद्यालय में अध्यापन कार्य कर रही थीं। परन्तु छात्रा रहते ही उनका सम्पर्क चटगांव के क्रान्तिकारी दल से हो गया. जिसके नेता प्रसिद्ध क्रान्तिकारी सूर्यसेन थे, जिन्हें सब साथी 'मास्टर दा' कहते थे। 'मास्टर दा' की ही शिष्या थी प्रीतिलता। एक दिन सन् १९२३ के सितम्बर महीने में सूर्यसेन के दल ने योजना बनाई कि चटगांव के पहाड़ तली में जो गोरों का 'यूरोपियन इन्सटीट्यूट' (क्लब) है, जहां शाम के समय अंग्रज सैन्य अधिकारी बैठकर शराबखोरी करते हैं, उस पर आक्रमण किया जाए। वैसे उन्हीं दिनों और भी कई कांड हुए जिनका उद्देश्य था चटगांव को स्वाधीन करना और अनेक दिनों तक चटगांव पर स्वतंत्रता का ही ध्वज फहराता भी रहा। यह योजना भी सूर्यसेन की ही थी।

एक बार ऐसा हुआ कि माशी मां के गांव घलघाट वाले माशी मां के मकान में फरार विप्लवी नेता सूर्यसेन (मास्टर दा), अपूर्व सेन, निर्मल सेन तथा प्रीतिलता ठहरे हुए थे। उस घर में गृहस्वामिनी माशी मां सावित्री देवी और उनका पुत्र रामकृष्ण भी मौजूद थे। उसी समय कहीं से खबर पाकर अंग्रेज कैप्टन कैमरन ने पुलिस दल के साथ आकर वह घर घेर लिया। इस दल में गोरे सैनिक भी थे। कैप्टन के दल ने मशीनगन से गोलियां बरसाईं क्रान्तिकारियों के पास तो केवल रिवाल्वर थे, उन्हीं से सामना किया। इस संघर्ष में अंग्रेज कैप्टन कैमरन को क्रांतिकारियों ने मार डाला। क्रांतिकारी अपूर्व सेन और निर्मल सेन शहीद हुए। परन्तु सूर्यसेन और कुमारी प्रीतिलता किसी तरह बच निकले। घर की मालकिन वृद्धा माशी मां (सावित्री देवी) और उनके बेटे रामकृष्ण को अंग्रेजों ने ४-४ वर्ष की कैद की सजा दी। कितना बड़ा त्याग! माशी मां और उनके पुत्र रामकृष्ण को क्रांतिकारियों को अपने घर ठहराने पर यह जो जेल यातना झेलनी पड़ी, उसके लिए उन्हें कभी कोई खेद या पश्चाताप कभी नहीं हुआ। दुःख की बात यह है कि उनका पुत्र रामकृष्ण जेल में ही मर गया। आगे माशी मां बंगाल से आकर कानपुर रहती रहीं। अनन्तर सन् १९३२ के २४ सितम्बर की रात जब पहाड़ तली स्थित 'यूरोपियन क्लब' पर धावा बोलने का समय आया तो सूर्यसेन ने उनका नेतृत्व प्रिय शिष्या प्रीतिलता को ही सौंपा। उन्होंने दल में कभी स्त्री-पुरुष का भेद मानकर दल में जो लड़कियां थीं, कल्पनादत्त तथा प्रीतिलता इन्हें ऐक्शन (क्रातिकांड) में भेजते समय कभी युवकों के मुकाबले कमजोर नहीं माना। यही कारण था कि ये लोग रात को जब ऐक्शन (धावा बोलने) के लिए जाने लगे तो सूर्यसेन ने स्वयं प्रीतिलता की कमर में रिवाल्वर बांधा तथा कंधे से बम लटकाया और इस गौरव की भावना से अपनी लाड़ली शिष्या को विदा किया कि भाइयों से बहन ऐसे जोखिम में पीछे क्यों रहे? गई प्रीतिलता उस रात मेरा रिवाल्वर और बम लेकर। उसके साथ-साथ गए थे अन्य क्रान्तिकारी भी। सर्वप्रथम बम से हमला 'यूरोपियन क्लब' पर प्रीतिलता ने ही किया। साथी क्रान्तिकारियों ने भी गोलियां चलाईं जवाब में अंग्रेजों ने फायर पर फायर किए। गोरों की गोलियों से प्रीतिलता गंभीर रूप से घायल हो गई। तब उसने साथी क्रांतिकारियों को वहां से चले जाने को कहा और स्वयं उसने चलते समय अपने पास जो पाटेशियम साइनाइट रखा था उसे फांक कर जीवन लीला भरी तरुणाई में ही समाप्त कर ली। वर्षा के पानी कीचड़ से भरे रास्ते पर बाद में क्लब से १०० गज दूर प्रीतिलता की लाश पड़ी पाई गई। वह देह पर फौजी वर्दी धारण किए हुए थी। रिवाल्वर, कारतूस आदि भी मौजूद थे और उसकी जख्मी देह से रक्त रिसते हुए बंग भूमि को भिगोता रहा था। चली गई प्रीतिलता इस धरा धाम से, पर आने वाले पीढ़ियों को अपना यह संदेश दे गई कि–

**किस तरह संघर्ष करते हैं वतन के वास्ते,**
**किस तरह से जान देते हैं वतन के वास्ते।**
**फकत, दुनिया में तुम्हें थे यह बताने आये हम,**
**खुश रहो अहले वतन! चलते हैं 'वन्देमातरम्'॥**

मेरा सौभाग्य कि एक दिन शहीद प्रीतिलता की सहकर्मिणी क्रांतिकारिणी कल्पना दत्त से कलकत्ते में मेरी भेंटवार्ता हुई उन्हें कालेपानी की सजा अंग्रेजों ने दी थी। बहुत पढ़ी-लिखी, कर्मठ क्रांतिकारिणी रही थीं, कल्पनाजी। सिद्ध है कि भारत की बेटियां भी क्रांति पथ से विलग नहीं रहीं।

# गुरदास मल को बेटे का निशाना चूकने का अफसोस था

❑ डॉ० के० एल० जौहर

७ जुलाई १९३१ का दिन था। शाम के चार बजे थे। एक तगड़ा हृष्ट-पुष्ट पठान लाहौर की एक अदालत में खड़ा था। सिर पर तुर्रे वाली चमकीली पगड़ी थी। चेहरा गोल और बड़ी-बड़ी मूंछें उसके व्यक्तित्व को और निखार रही थीं। उसके खिलाफ ५२ झूठे मुकदमे चलाए जा रहे थे। अदालत में वह हर प्रश्न का उत्तर जांनदार आवाज में दे रहा था। न्यायाधीश से सारी बात करने का सारांश यह था, "मुझे जीवन की तनिक परवाह नहीं। मैं देश की आजादी के लिए लड़ता रहूंगा। मुझे अपने बेटे हरिकिशन के बलिदान पर गर्व है। इतना कहने की देर थी कि अचानक उसे मिर्गी का दौरा पड़ने के बाद उसकी हृदय की गति रुकी और वह वहीं गिर कर चिरनिद्रा में सो गया। उसकी अचानक मृत्यु से परिवार का एक और व्यक्ति शहीद हो गया। यह उसके बेटे हरिकिशन की शहादत के ठीक २५ दिन के बाद हुआ।

गुरदासमल का जन्म १८ जुलाई १८८३ के दिन धल्लाढेर (उत्तरी-पश्चिमी सीमा प्रान्त) में हुआ। उनके पिता दीवान चन्द एक धनाढ्य किसान तथा व्यापारी थे। उनके बहुत कहने पर भी गुरदासमल अधिक पढ़ाई नहीं कर सके। उन्होंने केवल आठवीं कक्षा पास की। उनका सारा ध्यान राष्ट्रीय आन्दोलन में लगा हुआ था। वह शारीरिक रूप से बड़े हृष्ट-पुष्ट थे। बचपन से ही वह हर चुनौती का बड़ी दिलेरी से सामना करते थे। तीन कुख्यात डाकुओं सुलेमान, इस्माइल तथा जरीन ने धल्लाढेर के सारे इलाके में दहशत फैला रखी थी। पुलिस की सहायता न मिलने पर उन्होंने कुछ साथियों को लेकर उन डाकुओं का मुकाबला किया और उन्हें पुलिस के हवाले कर दिया। वह गरीब किसानों की हर तरह सहायता करते थे। बाल गंगाधर तिलक द्वारा प्रकाशित 'केसरी' अखबार वह बिना नागा पढ़ते थे। बेशक उनका सारा परिवार राष्ट्रीय आन्दोलन में जुटा था, परन्तु उनके तीन बेटे जमनादास, हरिकिशन तथा भगतराम देशभक्ति की भावना से कुछ अधिक ही ओत-प्रोत थे। जमनादास ने तो सुभाष चन्द्र बोस को एक पठान के वेश में दर्रा खैबर से विदेश पहुंचाया। इनका परिवार राजनीतिक गतिविधियों के लिए धन भी देता था।

१९२१ में गुरदासमल ने अपनी धर्मपत्नी मथुरा देवी के साथ अहमदाबाद में कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लिया। इसका उन पर गहरा प्रभाव पड़ा तथा उन्होंने उसके बाद निरन्तर कई वर्ष अधिवेशनों में भाग लिया। वह इस समय खान अब्दुल गफारखान तथा उनके संगठन 'खुदाई खिदमतगार' से पूरी तरह प्रभावित थे।

गुरदास मल शुरू में तो गांधीवादी थे, परन्तु धीरे-धीरे क्रान्तिकारी तरीकों को ठीक समझने लगे। जलियांवाला बाग की कत्लेआम, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, राजेन्द्र लाहिड़ी तथा रोशन सिंह का काकोरी ट्रेन डकैती में हंसते-हंसते फांसी पर झूल जाना तथा भगतसिंह और उनके साथियों पर चलाए गए मुकदमे ने गुरदासमल पर बहुत गहरा असर किया। वह स्वयं पिस्तौल चलाने में माहिर थे। उनका निशाना अचूक था। उन्होंने अपने बेटों विशेष कर हरिकिशन को पिस्तौल चलने की बहुत अच्छी ट्रेनिंग दी। वह घंटों उसे पास के जंगल में ले जाकर यह प्रशिक्षण देते थे।

हरिकिशन ने पंजाब के गवर्नर मि० जाफरी पर पंजाब विश्वविद्यालय के दीक्षान्त हाल में गोलियां चलाई थीं। पहली गोली बाएं बाजू को छीलती हुई निकल गई, दूसरी गोली पीठ का कुछ मांस फाड़ने में ही सफल हुई। हरिकशन की ओर बढ़ते हुए सब इंस्पेक्टर पर आत्म रक्षा के लिए गोली चला कर उसे वहीं ढेर कर दिया। कुछ और लोग भी जख्मी हुए। हरिकिशन को गिरफ्तार करके लाहौर के शाही किले में पहुंचाया गया। उनकी खूब पिटाई की गई। उनका चेहरा सूजा हुआ था। कई जगह मांस पर नील पड़े हुए थे। गुरदासमल को अपने बेटे की पहचान के लिए किले में ले जाया गया। उसने अपने बेटे की बिगड़ी हुई रूपरेखा को देखा परन्तु केवल इतना पूछा, "बेटे मैंने तो तुमको पिस्तौल की बहुत अच्छी ट्रेनिंग दी थी फिर तुम्हारा निशाना चूक कैसे गया? यदि तुमने गवर्नर को मार डाला होता तो मैं कितना गर्वीला बाप होता।" इससे यह स्पष्ट है कि गुरदास मल को इस बात की चिन्ता नहीं थी कि उनके बेटे को कुछ दिनों में फांसी दे दी जाएगी या पुलिस ने उसका क्या हाल बना रखा है, परन्तु उसे इस बात का अफसोस था कि उनके बेटे का निशाना चूक गया। (शेष पृष्ठ २८ पर)

# क्रांतिदूतों की नक्षत्र मालिका

❑ दिव्या आर्य

**ब्रिटिश दासता से मातृभूमि की मुक्ति हेतु शत्रु के शिविर में प्रवेश कर वहां प्रचंड झंझावात का सृजन करने वाले क्रांतिदूतों की नक्षत्र मालिका भारतीय स्वाधीनता संघर्ष का एक प्रेरक पृष्ठ ही नहीं अपितु विस्तृत अध्याय सुप्रसिद्ध लेखक एवं विचारक तथा प्राध्यापक डा० हरीन्द्र श्रीवास्तव ने अपनी बहुचर्चित पुस्तक में सविस्तार किया है। इस पुस्तक का मराठी रूपान्तरण गत माह ही 'एक झंझावात-शत्रुच्या शिविरात' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। उसके आधार पर यहां प्रस्तुत है उस नक्षत्र मालिका की एक झलक। इस नक्षत्र मालिका के नक्षत्रों में से अनेक नक्षत्र ऐसे भी हैं, जिनकी झलक, जिनकी जीवन झांकी से आज राष्ट्र की युवा पीढ़ी अनभिज्ञ है। ऐसी स्थिति में इस सनातन राष्ट्र की यह पीढ़ी उनके श्राद्ध तर्पण अर्थात् उनके प्रति श्रद्धा ज्ञापन की परम्परागत परिपाटी के निर्वहन से भी वंचित है। स्वदेश को स्वतंत्र हुए अब लगभग पांच दशक का कालखंड बीत रहा है। ऐसे अवसर पर स्वतंत्रता के सूर्योदय की वर्षगांठ के अवसर पर उनका पुण्य स्मरण भी एक प्रकार का श्राद्ध तर्पण ही है, जो इस लेख के माध्यम से विशुद्ध राष्ट्रीयता का संदेश वाहक "जनज्ञान" मासिक सम्पन्न कर रहा है लेखक डा० श्रीवास्तव और अनुवादक सुश्री अनुराधा वसंत खोत की लेखनी का तेजस्वी रूप इसमें भले ही अभिव्यक्त न हो पाए, किन्तु भाव भूमि का दर्शन तो सुधिजन को होगा ही।**

## पं० श्याम जी कृष्ण वर्मा

इस नक्षत्र मालिका के संयोजन में सुप्रसिद्ध राष्ट्रभक्त और महर्षि दयानन्द के प्रति अनुरक्त और उनके स्वातंत्र्य दर्शन से अनुप्रेरित पं० श्याम जी कृष्ण वर्मा की महती भूमिका रही थी। ब्रिटिश सत्ताधीशों को चुनौती देने सन् १८५७ में छिड़े प्रथम स्वाधीनता संग्राम ने उस वर्ष को हिन्दुस्तान के इतिहास में एक प्रेरक स्थान प्रदान किया है। उसी वर्ष कच्छ (गुजरात) में मांडवी नामक नगर में एक निर्धन परिवार के कुलदीपक के रूप में जन्मे बालक ने ही पं० श्याम जी कृष्ण वर्मा के नाम से इतिहास में अमरत्व पाया है उन्होंने जिस भाग्यशाली समाज में जन्म लिया था, उसका नाम भी अमर कर दिया।

कुशाग्र बुद्धि श्याम जी के संस्कृत भाषा पर प्रभुत्व की मुक्त कंठ से प्रशंसा तो स्वतः मैक्समूलर (मोक्षमूलर) तक ने की थी। आक्सफोर्ड विद्यापीठ के संस्कृत विभाग प्रमुख प्रो० मोनिअर विलियम्स १८७५ में जब वह भी इस तरूण विद्वान की विद्वता से चमत्कृत रह गए थे और उन्होंने श्याम जी को अपने सहायक के रूप में ब्रिटेन ले जाने का मन बनाया था। अनेक अड़चनों के चक्रव्यूह भेद कर श्याम जी १८७९ में इंग्लैंड पहुंचे ओर कैम्ब्रिज से उन्होंने बी. ए. तथा आक्सफोर्ड से एम. ए. की पदवी प्राप्त की थी और वहां से एम. ए. के पदवी प्राप्त करने वाले वह प्रथम भारतीय तरुण थे। उन्होंने वहीं विधि (कानून) का अभ्यास भी पूर्ण किया था। १८८४ में भारत वापस आकर वे कई रियासतों के शासकों के दीवान सलाहकार के रूप में भी कार्यरत रहे थे। स्वदेश में ब्रिटिश सरकार के द्वारा जनता के दमन को निहार कर उनके अंतस में एक कसक उभरी जिसे रेंड की हत्या के बाद लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को बंदी बनाए जाने की घटना ने और उभारा। तभी उन्होंने अपने मन में यह संकल्प संजोया कि वे ब्रिटेन से लौटकर स्वदेश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष का शंखनाद करेंगे, क्योंकि वहां वैध मार्ग के अवलम्बन की छूट है।

इंग्लैंड में रहकर अध्ययन और लेखन कार्यों से उन्होंने विपुल धनार्जन किया। **आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द को ही श्याम जी कृष्ण वर्मा अपना प्रथम गुरु और पथ प्रदर्शक मानते थे।** उन्होंने अपने द्वितीय गुरु के रूप में तत्कालीन ब्रिटिश समाज शास्त्रज्ञ व विचारवंत हर्बर्ट स्पेन्सर को स्वीकार किया था। १९०५ में लंदन में ही बीस मई को उन्होंने तीस मान्यवर हिन्दुस्थानी नेताओं व विचारवंतों की उपस्थिति में 'इंडिया हाउस' में इंडियन होमरूल सोसाइटी की स्थापना की थी। श्री वर्मा भारतीय स्वाधीनता संग्राम में एक विशाल वटवृक्ष बने, जिसकी छाया तले अनेक राष्ट्रभक्तों ने स्वातंत्र्य प्रियता के प्रथम पाठ पढ़े। उन्हीं के द्वारा दी गई शिवाजी छात्रवृत्ति पर लोकमान्य तिलक द्वारा दिए गए चयन के आधार पर 'विनायक दामोदर सावरकर' लंदन पहुंचे थे।

## स्वातन्त्र्य वीर सावरकर

स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर ने इंग्लैंड पहुंचकर २६ जुलाई १९०६ को विधि के अध्ययन हेतु शाला में प्रवेश तो लिया था, किन्तु चाफेकर बन्धुओं की शहादत से अभिभूत जिस किशोर ने अपनी कुलदेवी के समक्ष स्वदेश की स्वतंत्रता के लिए जीवन की बलि देने का वज्र संकल्प ग्रहण किया था, उसका लक्ष्य तो सुस्पष्ट था ब्रिटिश सिंह की माद में प्रवेश कर उसके बल-विक्रम का आकलन। लंदन में वीर सावरकर के उल्लेखनीय कार्यों में प्रमुख रहा था, वहां फ्री इंडिया सोसाइटी की स्थापना। जिसकी गतिविधियों का मूल सूत्र था भारतीयत्व के प्रति गौरव बोध का जागरण और संवर्धन। सभी भारतीय महापुरुषों के स्मृति दिनों का परिचालन तथा भारत की परतन्त्रता के कारण और उसकी मुक्ति के उपायों पर चर्चा भी इस संगठन की प्रमुख गतिविधियां रही। इस संगठन की गतिविधियों की कीर्ति इतनी बढ़ी कि पं० श्याम जी की 'होमरूल सोसाइटी' की चमक भी फीकी पड़ने लगी। सावरकर के तेजस्वी कृतृत्व ने श्याम जी को भी इतना अभिभूत कर दिया कि उन्होंने भी प्रकटतः उनके कार्य के प्रति अपना समर्थन और आशीर्वाद दिया।

**पं० श्याम जी द्वारा स्थापित इंडिया हाउस (भारत भवन) राष्ट्रभक्तों का गुरुकुल ही बन गया था। इसमें दीक्षित भारतीय छात्र राष्ट्रभक्ति को ही अपना आभूषण मानते थे। उस गुरुकुल का आकर्षण बना था, विनायक दामोदर सावरकर का सम्मोहक व्यक्तित्व। उस गुरुकुल में दीक्षित जो प्रमुख राष्ट्रभक्त, उस समय के इतिहास के सृष्टा बने, वे आज स्वयं इतिहास बन गए हैं। इनमें से प्रमुखतम थे देवता स्वरूप भाई परमानन्द, लाला हरदयाल, सेनापति बापट, वीरेन्द्र नाथ चट्टोपाध्याय, जे० सी० मुखर्जी, ज्ञान चन्द्र वर्मा, सरदार सिंह राणा, मैडम कामा, एवं एम० पी० टी० आचार्य। उनका संक्षित परिचय प्रस्तुत है। उस समय के घटनाक्रम की एक झांकी भी उनके इस संक्षिप्त परिचय के माध्यम से मिल जाती है।**

## भाई परमानन्द

भाई परमानन्द तब अट्ठाइस वर्ष के युवक थे, जब लंदन पहुंचे। वहां गए वह प्रथम आर्य समाजी तरुण थे। इंग्लैंड जाने से पूर्व वह दक्षिण अफ्रिका में कुछ दिनों तक गांधी जी के सहवास में रहे थे। लंदन पहुंच कर सावरकर से भेंट के उपरान्त उनके विचारों में एक चमत्कार घटित हुआ। वीर सावरकर और देवता स्वरूप भाई परमानन्द दोनों ही इतिहास के गहन अध्येता और विश्लेषक थे। इतिहास साक्षी है कि स्वातंत्र्य समर के इन दोनों महान् साधकों ने जहां भारत माता के भव्य भाल से दासता का कलंक मिटाने के लिए अहर्निश कार्य किया और अंडमान (कालापानी) के क्रूर कारागार में यम यातनाएं झेलीं वहीं कारामुक्ति के उपरान्त 'हिन्दुत्व' के प्रचार-प्रसार को ही स्वदेश के भविष्य का सूत्र माना और हिन्दू महासभा के मंच से वे स्वदेश की स्वतंत्रता और राष्ट्र की अखंडता तथा हिन्दू अस्मिता के जागरण के महायज्ञ के प्रमुख यज्ञमान रहे।

भाई जी इतिहास के अभ्यासक थे। ब्रिटिश म्युजियम लाइब्रेरी में बैठकर उन्होंने वहां उपलब्ध ग्रंथों का पारायण कर भारत का सत्य इतिहास लिखने का संकल्प गहण किया था। एम. ए. के लिए उन्होंने जो प्रबन्ध प्रस्तुत किया था उसका शीर्षक था "भारत में ब्रिटिश सत्ता का उद्गम'। किन्तु उसकी प्रखरता के कारण सरकार के पिट्ठू प्राध्यापकों ने उसे स्वीकार न किया।

१९०८ में भारत लौटकर भाई परमानन्द ने लाहौर में कुछ समय तक अध्यापन कार्य भी किया। आर्य समाज के कार्य का विस्तार तो उनकी जीवनचर्या था ही साथ ही उनके द्वारा ग्रंथ लेखन का कार्य भी जारी रहा। उन्होंने पंजाब, महाराष्ट्र और राजस्थान प्रांत से संबंधित जो इतिहास ग्रंथ लिखे वे सभी तत्परता सहित ब्रिटिश राज्यकर्ताओं द्वारा राजहृत (जप्त) कर लिए गए। विदेशी सत्ता का यह अन्याय भी उनके साहस को तोड़ने में असमर्थ रहा। किन्तु उन्होंने भारत से बाहर जाकर वहां से स्वातन्त्र्य समर को बल प्रदान करने का निश्चय कर विदेश की राह ली। वे अमरीका गए और अपने मित्र लाला हरदयाल से मिले, जो स्वयं क्रांति पक्ष के पथिक थे। वहीं उन्होंने सान फ्रांसिसको विद्यापीठ में प्रवेश लेकर १९१३ में वहां से एम. ए. की उपाधि प्राप्त की। वहां भी ब्रिटिश सरकार की सतत दृष्टि उन पर गड़ी ही रही। जब वे भारत लौटे तो बंदी बना लिए गए। सरकार ने उनके विरुद्ध जो आरोप लगाए वे हास्यास्पद भी थे। क्योंकि उनमें से एक १९१२ में हुआ दिल्ली षडयंत्र था, जिन दिनों वे दिल्ली में थे ही नहीं। इसके अलावा लाहौर षड्यंत्र और कामगारामारु प्रकरण भी थे। तीन न्यायाधीशों की खंडपीठ में से दो ने भाई जी को मृत्युदंड और एक ने आजीवन कारावास दंड सुनाया। अन्त मेंआजन्म कारावास की पुष्टि हुई आजन्म कारावास की सजा काटने

के लिए भाई जी को अंडमान (कालापानी) भेजा गया। जहां पांच वर्ष वाद सावरकर जी से उनकी भेंट हो पाई।

## लाला हरदयाल

१८८४ में दिल्ली के एक कायस्थ परिवार में लाला हरदयाल का जन्म हुआ था। सावरकर जी से वह एक वर्ष छोटे थे। लाला जी अत्यन्त बुद्धिमान छात्र थे। पंजाब विश्वविद्यालय से उन्होंने बी० ए० और एम० ए० की उपाधि प्रथम रह कर प्राप्त की थी। जिस सेन्ट स्टीफेन्स कालेज में वह छात्र रहे थे, उसी में १९०५ में शिक्षक भी रहे। बाद में पंजाब सरकार की १०० पौंड की एक छात्रवृत्ति पाकर वह इतिहास का अध्ययन करने के लिए लंदन के सेन्टजान्स कालेज में दाखिल हुए। १९०७ में उन्हें संस्कृत स्कालरशिप भी मिला।

लाला जी को चलता बोलता "ज्ञान कोष" कहा जाता था। अद्वितीय बुद्धि और तीक्ष्ण स्मरण शक्ति के बल पर उन्हें अति ख्याति मिली। वह मूलतः कट्टर हिन्दुत्वाभिमानी थे। परन्तु अल्पावधि में ही वे प्रखर सावरकरवादी हो गए थे। १९०८ में वह कुछ दिनों के लिए भारत आए और फिर इंग्लैंड लौट गए। वहां से अमरीका जाकर स्टानफोर्ड विश्वविद्यालय में भी उन्होंने कुछ दिनों तक अध्ययन कार्य किया। किन्तु जिसके मन में देशभक्ति की चिंगारी दहक रही हो, वह बहुत समय तक सांसारिक सुख-वैभव की राह पर कैसे चल पाता। अतएव अध्ययन कार्य छोड़कर उन्होंने इंटरनेशनल रेडिकल क्लब और फैटर्निटी आफ रेड फ्लैग' नाम से दो सस्थाओं की स्थापना कर उनके माध्यम से कार्य आरम्भ किया। इन्हीं दो संगठनों के बीच गदर पार्टी का पादप पनपा। यही थी भारत में ब्रिटिश सत्ता को दहला देने वाली गदर पार्टी।

**ब्रिटेन, अमरीका, जर्मनी तथा जापान आदि में वह कहीं भी रहे किन्तु देशप्रेम काव्य प्रेम, और वाक् चतुर्य तथा अखंड हास्य विनोद सदा उनके सहयोगी रहे।** १९१२ में लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका गया था। हार्डिंग बच गया परन्तु उसकी टोपी भूलंठित हो गई और उस समय चरित्रार्थ हो उठी थीं ये पंक्तियां—

**मीर पगड़ी संभालकर चलिए और कूचे नहीं ये दिल्ली है।**

ये थी वे पंक्तियां जो इस कांड की जानकारी मिलने पर लाला जी के श्रीमुख से उच्चारित हुई थीं। असहकार और क्रांतिकारी गतिविधियों के प्रकरण में भी वह कहा करते थे 'सौ सुनार की एक लोहार की।

## सेनापति बापट

१९०४ में सर मंगलदास शिष्यवृत्ति मिलने पर एक युवक १९०४ में इंग्लैंड जा कर अभियांत्रिकी के विद्यार्थी के रूप में एडिनवर्ग महाविद्यालय में प्रविष्ट हुआ था। इतिहास ने उसे 'सेनापति' की पदवी से विभूषित एक महान क्रांतिकारी के रूप में अमर किया है। **वीर सावरकर के संपर्क में आकर उसने क्रांतिपथ का अनुगमन किया था। अभियंता बनने के बजाए सेनापति के रूप में आगे चलकर विख्यात हुए। पांडुरंग महादेव बापट को मातृभूमि की बंधनमुक्ति के पुनीत कार्य में योगदान ही योग्य अनुष्ठान प्रतीत हुआ था।** २७ मई १९३८ के मराठा में अपने एक लेख में उन्होंने इस तथ्य को उजागर करते हुए लिखा था "मेरे पथ बदलने का मुख्य कारण सावरकर का लेखन व भाषण ही था।" क्रांति का पथ अपनाना ही उन्हें राष्ट्र स्वातन्त्र्य की सर्वोच्च विधि लगा था। १९३१ में वह रत्नगिरि में सावरकर से मिले थे। वहां आयोजित एक सभा में अपने सार्वजिनक भाषण में शस्त्रवाद का समर्थन और पुणे में हाटसन पर गोली दागने वाले क्रांतिकारी छात्र वासुदेव बलवंत गोगटे के कार्य को उचित घोषित करने पर सात वर्ष का कारादंड मिला था। बापट कांग्रेस में शामिल हुए किन्तु जीवन भर वीर सावरकर के प्रति उनकी श्रद्धा भावना अडिग रही।

## वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय

हैदराबाद के एक प्रतिष्ठित परिवार में जन्मे थे वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय। अपने समय के सुप्रसिद्ध भाषा पंडित और कवि अघोरनाथ चट्टोपाध्याय के वह सुपुत्र थे और 'भारत कोकिला' के नाम से विख्यात रही कवियित्री और राजनीतिक नेता रही सरोजिनी नायडू के भाई थे। वे कलकत्ता विश्वविद्यालय से १९०३ में बी. ए. की उपाधि प्राप्त कर आई० सी० एस० बनने के लिए इंग्लैंड गए थे, परन्तु परीक्षा में उत्तीर्ण न हो सके तो उन्होंने विधि शास्त्र का अभ्यास शुरू किया था। प्रतिभाशाली वीरेन्द्रनाथ के समक्ष जीवन में वैभव संपन्नता की अनेक राहें खुलीं किन्तु उन्होंने 'भारत भवन' में सावरकर जी से सम्पर्क होने पर देशभक्ति की डगर पर चलना ही युग धर्म माना था। इस राह पर चलते हुए पहले उनकी पदवी (डिग्री) जप्त हुई, फिर अन्य प्रकार से त्रास झेले और अन्त में वह इंग्लैंड से पेरिस चले गए और वहां से 'तलवार' नामक धारदार अखबार प्रकाशित किया। १९१० में जब सावरकर साढ़े तीन माह के लिए ब्रिक्स्टन

कारागार में बंदी रहे थे तो वीरेन्द्र नाथ उनसे भेंट करने के लिए १५ बार वहां आए थे।

क्रांतिकारियों के संबंध में जवाहर लाल नेहरू ने उदासीन का भाव अपनाया था। ऐसी सामान्य धारणा है। किन्तु वह भी संपन्न परिवार में जन्मे वीरेन्द्र द्वारा आजादी की राह का फकीर बनकर अपनाई गयी फकीरी से प्रभावित हुए बिना नहीं रहे थे। उन्होंने लिखा था लंदन में मेरा जिन थोड़े से क्रांतिकारियों से संपर्क हुआ उनमें से एक वीरेन्द्र नाथ चट्टोपाध्याय थे। चट्टोपाध्याय ने बर्लिन में इंडियन लीग की स्थापना की थी, जिसका एक उद्देश्य अंडमान में बंदी वीर देशभक्तों को छुड़ाना भी था। इस वीर का अंत कैसे और कहां हुआ यह रहस्य अब तक कायम ही रहा है।

## जे० सी० मुखर्जी

लंदन एक प्रौढ़ आयु के बंगाली सद्गृहस्थ को सभी लोग 'दादा' कह कर सम्बोधित करते थे। गांधी जी के पत्र 'इंडियन ओपिनियन' के लिए वह प्रति सप्ताह लंदन से अपनी एक रिपोर्ट प्रकाशनार्थ भेजा करते थे। सावरकर के सम्पर्क में आए तो उनके विचारों में भी ओजस्विता का समावेश हुआ और गांधी जी के अखबार को भेजी गई एक रिपोर्ट में उन्होंने एक बार लिखा "गोरे शत्रु को उठाकर देश के बाहर फेंकना होगा।"

## ज्ञानचन्द्र वर्मा

इंग्लैंड में विधिशास्त्र की अध्ययन करने गए ज्ञानचंद्र वर्मा भी वहां जाकर क्रांति पथ के पथिक बन गए थे। बुद्धिमत्ता, अद्भुत साहस इन दो गुणों से तो वर्मा मंडित थे ही दृढ़ निश्चय के गुण ने भी उनके चरित्र को 'त्रिवेणी' सा धारदार बनाया था। वीर सावरकर का उनके प्रति विश्वास इन शब्दों में मुखर हुआ था "इन्होंने यदि किसी काम को करने की प्रतिज्ञा कर ली तो समझो कि वह कार्य सिद्ध हो गया। विश्व की कोई भी शक्ति उनकी राह नहीं रोक सकती।"

## सरदार सिंह रेवाभाई राणा

सौराष्ट्र के लिंवडी नामक रियासत के राजा सरदार सिंह एक प्रख्यात राजकुल से संबद्ध थे। १८८८ में जन्मे सरकार सिंह 'राणा साहेब' के नाम से ही विख्यात हुए थे। मुम्बई विश्वविद्यालय से बी. ए. की उपाधि प्राप्त कर वे कानून का अध्ययन करने लंदन गए थे। किन्तु वहां से पेरिस पहुंच कर उन्होंने हीरों का व्यापार शुरू कर दिया था और वहां की नागरिकता भी पा ली थी। हीरों का व्यापारी यह राणा अपने जीवन में क्रांतिकारी मंडल का भी एक तेजस्वी हीरा सिद्ध हुआ। पेरिस में भारत का पक्ष स्पष्ट करने के लिए होने वाले हर आयोजन को 'राणा साहेब' उदारहस्त से सहयोग प्रदान करते थे। उन्होंने भारतीय और रूसी क्रांतिकारियों के बीच संपर्क स्थापित कराने की भी महती भूमिका निभाई थी। वीर सावरकर के अभिनव भारत मंडल के भी वह कोषाध्यक्ष रहे थे। राणा जी को देशभक्ति के 'अपराध' में दंड यह मिला था कि अंग्रेजों ने भारत में उनकी सारी संपत्ति जब्त कर ली थी।

## हरनाम सिंह

पंजाब के एक सम्पन्न सिख परिवार में जन्मे हरनाम सिंह भी उसी जहाज से इंग्लैंड गए थे, जिसमे विनायक दामोदर सावरकर वहां पहुंचे थे। जहाज पर उस सफर में ही हरनाम सिंह और सावरकर में पहली बार सम्पर्क हुआ था। इस यात्रा में वीर सावरकर के कंठ से निसृत उस काव्य गंगा में हरनाम सिंह भी आप्लावित होकर सावरकर की प्रतिभा के प्रति अनुरक्त हुए थे। सफर में हरनाम सिंह को जब अपने घर आंगन और मां की ममता का स्मरण हो आया तो वह तनिक विचलित और गमगीन हुए। तब वीर सावरकर के इन शब्दों ने उन्हें एक नवीन राह दिखा थी, " **सुदैव से तुम सम्पन्न परिवार से हो। तुम्हारी मां तुम्हारा जन्म भर बैठकर प्रतीक्षारत रहकर भी आहार कर सकती है। पर यह जो हम सभी की मां है, अपनी भारतमाता, वह भी क्या इतनी सम्पन्न नहीं। वह थी, किन्तु अब वही निर्धन और परतंत्र हो गयी है। उसकी इच्छा यह है कि उसके वीर सपूत अब इंग्लैंड, फ्रांस, रूस जैसे देशों में जाएं। यह देखें कि वहां का वैशिष्ठय क्या है? हम दास क्यों बने और किन कारणों से वे प्रभुता संपन्न हैं?"** साथ ही उन्होंने कहे थे ये शब्द भी, अपनी माता सभी को प्रिय होती है परन्तु एक मां हम सबकी माताओं से भी श्रेष्ठ है और वह है अपनी हिन्दू भूमि। जब तक वह दासता की बेड़ियों में जकड़ी है तब तकहम सुख-सुविधा और निश्चिन्तता से जीवन-यापन कैसे कर सकते हैं?

इन शब्दों ने हरनाम सिंह को निराशा से प्रकाश के दर्शन कराए और उसका भ्रमित मन एकाग्र हो गया। घर वापस लौटने का विचार उसके मन से बिसर गया और उसी क्षण से राष्ट्रभक्ति ही बन गया उसका जीवन मंत्र। जिसे

उन्होंने जीवन भर पूरी निष्ठा सहित निभाया।

**मैडम कामा**

भारत की राजधानी दिल्ली में एक प्रमुख स्थान है मैडम भीखाजी कामा प्लेस का। किन्तु आज स्वतंत्रता के पांच दशकों के बाद भी कितने युवा हैं, जिनके मन को कभी इस प्रश्न ने छुआ हो कि कौन थी वह मैडम कामा, जिनका नाम इस स्थान से जुड़ा है?

**वह थी 'भारत की जॉन ऑफ आर्क' की पदवी से महिमा मंडित और गौरवान्वित हुई रणरांगिणी मैडम कामा, जिनका सम्पूर्ण नाम था भीखाजी रूस्तम कामा। पेरिस स्थिति भारतीय क्रांतिकारियों की लपलपाती तलवार थी वह। वहां के भारतीय उनका उल्लेख साक्षात दुर्गा की अवतार के तौर पर करते थे।** २४ सितम्बर १८६१ को जन्मी थी वह और प्यार से उन्हें पुकारते थे 'मुन्नी' कहकर सोराव जी फ्राम जी पटेल। जो थे मुम्बई के पारसी समाज के एक सम्पन्न व प्रतिष्ठित गृहस्थ। 'मुन्नी' अलेकजान्ड्रा पारसी हाई स्कूल की छात्रा थी, तभी अपनी प्रखर मेधा का चमत्कार उन्होंने सभी विषयों में प्रथम क्रमांक पर स्थान प्राप्त कर दिखाया था। साथ ही बाल्यकाल से ही उनकेमन में बसी थी हिन्दुस्तान को स्वतंत्र देखने की लालसा भी। उनकी सोच थी कि मातृभूमि की स्वतंत्रता हेतु हंसते-हंसते फांसी की रेशमी डोर चूमना परम सौभाग्य का द्योतक है। उनके चिंतन की यह उष्णता उनके परिवार के वरिष्ठ जनो को भी संतप्त करने लगी थी। अतएव उन्होंने एक मार्ग यह खोजा था कि 'मुन्नी' का विवाह कर दिया जाए।

उन्होंने मुन्नी के वर के रूप में खोजा था एक संपन्न परिवार का तरुण रूस्तम के० आर० कामा। ३ अगस्त १८८५ को मुन्नी और रूस्तम का विवाह हो गया, किन्तु पति को भी अपनी पत्नी का स्वातंत्र्य साधिका होना नहीं भाया। उसने मुन्नी को उस पथ से हटाने का प्रयास किया। किन्तु मुन्नी गिरधर के प्रेम में मदमाती मीरा के समान सुख वैभव की राह को ठुकरा कर राष्ट्र सेवा पथ पर अडिग रही। मुम्बई में प्लेग का रोग फैला तो मुन्नी रोगग्रस्त तो हुई किन्तु बच गयी, यद्यपि वह नितांत दुर्बल हो गयी थी। स्वास्थ्य सुधार हेतु उन्हें १९०१ में परिवार वालों ने पेरिस भेजा, जहां से वह इंग्लैंड पहुंची और वहां बह रही देशभक्ति की पुनीत धारा में उन्होंने स्वयं को समाहित कर दिया। हाइड पार्क व अन्यत्र उनके भाषणों का घन गर्जन स्वातन्त्र्य की तड़ित दामिनी भाव निराशा के अन्धकार से ग्रसित मनों को आशा की किरण से आलोकित करने लगा। उनके द्वारा प्रसारित क्रांति पत्रक भी जन-जागृति में महती भूमिका निभाते रहे। उनके अखबार वन्दे मातरम् ने भी स्वातन्त्र्य भावना के उभार में महती भूमिका निभाई।

२२ अगस्त, १९०७ के दिन स्टटगार्ट जर्मनी में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी परिषद् में स्वतंत्र भारत का ध्वज फहराने का उनका कार्य भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम का एक प्रेरक अध्याय है। यही ध्वज १० मई, १९०८ को उन्होंने १८५७ की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर लंदन में भारत भवन में आयोजित समारोह में भी फहराकर गोरे सत्ताधीशों का दिल दहलाया था। भारतीय स्वातंत्र्य की स्वर्ण जयन्ती पर उस स्वातंत्र्य लक्ष्मी के श्री चरणों में श्रद्धा सुमन समर्पित करता है "जनज्ञान" और "दयानन्द संस्थान" परिवार। साथ ही क्रांतिवीरों की नक्षत्र मंडली की स्मृति में भी समर्पित हैं श्रद्धा की अंजलियां। ❑

---

*(पृष्ठ २३ का शेष)*

३३ दिन की अल्प अवधि में हरि किशन के मुकदमे की सुनवाई समाप्त हुई और उन्हें फांसी की सजा सुना दी गई। ९ जून को फांसी का दिन निश्चित हुआ। ८ जून को गुरदास मल और उनके परिवार के अन्य सदस्य हरिकिशन से मिलने गए। अगले दिन फांसी के बाद उनकी लाश को मियांवाली जेल के भीतर ही जलाया गया और अस्थियां तक परिवार को नहीं दी गई इससे गुरदास मल को बहुत ठेस लगी और उनका दृष्टिकोण और भी दृढ़ तथा चुनौतीपूर्ण हो गया।

पुलिस को भला यह कब बर्दाश्त था। उन्होंने गुरदास मल के खिलाफ ५२ झूठे केस दर्ज किए। उनको तथा उनके परिवार के सदस्यों को कचहरियों में घसीटा और बहुत परेशान किया, परन्तु गुरदास मल ने साहस नहीं छोड़ा और अपने देश के लिए लड़ते हुए कचहरी में ही दम तोड़ दिया।

गुरदासमल जैसे पिता जिन्होंने हरिकिशन सरीखे पुत्रों की देश की आजादी की वेदी पर बलि चढ़ा दी, उनके साहस, वीरता तथा कुर्बानी की दास्तान भारत के लाखों हृदयों में सदैव गूंजती रहेगी।

# महान देशभक्त चन्द्रशेखर आजाद

❑ मनमोहन कुमार आर्य

**जिस प्रकार** कोई भी मां योग्य पुत्र को जन्म देकर प्रसन्न एवं गौरवान्वित अनुभव करती है इसी प्रकार भारत माता चन्द्रशेखर आजाद को जन्म देकर गौरवान्वित हुई है। २६ वर्ष के अल्प जीवन काल में १३ वर्ष का आजाद का जीवन भारत मां, यहां के पूर्वजों एवं संस्कृति का अपमान करने वाले अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष में व्यतीत हुआ और उन्होंने इस अवधि में अपने साहसी कार्यों से विदेशी शासकों की नींद हराम रखी। सन् १९०५ में अलीराजपुर रियासत के एक गांव भाभरा में एक निर्धन परिवार में चन्द्रशेखर का जन्म हुआ। इनके पिता सीताराम तिवारी निर्धन होकर भी अतीव स्वाभिमानी थे। माता जगरानी देवी ने इस पुत्र का लालन-पालन बड़े मनोयोग से किया। जिसका एक कारण इस पुत्र से पूर्व उनके कई बच्चों का जन्म लेते ही काल के ग्रास हो जाना था। यही कारण है कि बचपन में अत्यंत दुर्बल काया होने पर भी चन्द्रशेखर का बाल्य एवं यौवन काल का स्वास्थ्य दर्शनीय एवं प्रशंसनीय बना।

गांव में उन्होंने पढ़ना आरम्भ किया परन्तु निर्धनता के कारण अनेक कठिनाइयां सामने आईं। चन्द्रशेखर चाहते थे कि पढ़ लिखकर विद्वान बने। काशी विद्वानों की नगरी थी और यहां ब्राह्मण विद्यार्थियों के लिए निशुल्क भोजन, आवास, एवं अध्ययन की सुविधा थी। अतः उन्होंने काशी पहुंचकर अध्ययन किया और वहां छात्रावास में रहे।

सन् १९२१ में चन्द्रशेखर बनारस में अध्ययन करते थे और आजादी के लिए सत्याग्रहों एवं जुलूसों में भी पहुंचते थे। विदेशी वस्तुओं, विदेशी शिक्षा एवं विदेशी राज्य का सारे देश में विरोध हो रहा था। विदेशी वस्त्रों की होली जलाई जा रही थी। बनारस में ऐसे ही एक विरोध प्रदर्शन में एक सत्याग्रही को पुलिस से पिटते देखकर चन्द्रशेखर स्वयं को न रोक सके। पास में पड़े एक पत्थर के टुकड़े को उठाकर उन्होंने सत्याग्रही को पीट रहे पुलिस अधिकारी पर दे मारा, जो उसके माथे पर लगा। अधिकारी के माथे से खून बहने लगा। पुलिस ने चन्द्रशेखर का पीछा किया और अंततः पकड़ लिया। पारसी मजिस्ट्रेट खेरघाटी अपनी क्रूर प्रकृति के लिये प्रसिद्ध था। प्रश्नों के उत्तर में चन्द्रशेखर द्वारा अपना नाम आजाद, पिता का नाम स्वतंत्र, घर का पता जेलखाना बताने पर रुष्ट हुए मजिस्ट्रेट ने १४ वर्ष के चन्द्रशेखर को १५ बेतों का कठोर दंड दिया। चन्द्रशेखर के दोनों हाथ बांध कर मात्र लंगोट पहने हुए इस देशभक्त पर जल्लाद ने पूरी शक्ति से एक-एक कर पन्द्रह बेंत लगाये। बेंत लगाते ही शरीर की चमड़ी उतर जाती थी और रक्त की धारा बहने लगती थी। प्रत्येक बेंत पर उन्होंने भारत माता की जय का नारा लगाया। जेल से बाहर निकलते ही भारत माता की जय आदि देशभक्ति के नारों से जनता द्वारा उनका स्वागत हुआ। ज्ञानवापी महल्ले में उनके स्वागत में बड़ा समारोह किया गया और जनता ने अपना पूर्ण स्नेह उन पर उड़ेल कर उन्हें पुष्प मालाओं से लादा दिया और मंच पुष्प वर्ष के फूलों से ढंक गया। मर्यादा, पत्रिका के सम्पादक सम्पूर्णानन्द ने अपनी पत्रिका में इस युवक का चित्र एवं घटना का पूरा उल्लेख कर अंग्रेज न्यायावस्था का भाण्डा फोड़ा।

इस घटना के बाद आजाद का मन अध्ययन से विरत हो गया। संयोगवश क्रान्तिकारी युवकों से उनकी भेंट हो गई। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी राम प्रसाद बिस्मिल के दल में सम्मलित होकर आपने क्रांतिकारियों के कार्यक्रमों में स्वयं को अर्पित कर दिया। क्रांतिकारी गतिविधियों को सुचारु रूप से चलाने में धन का अभाव सबसे अधिक बाधक था। इसी बीच उन्हें एक साथी रामकृष्ण खत्री ने गाजीपुर के महन्त के बारे में सूचना दी जो उन दिनों एक योग्य शिष्य की तलाश में था एवं रोगग्रस्त था। दल ने आजाद को इस कार्य के लिए उपयुक्त पाकर उन्हें वहां भेज दिया। इस महन्त एवं उसके मठ की अपार सम्पत्ति एवं मंत्रणा के लिए इसके मठ को उपयुक्त समझ कर चन्द्रशेखर वहां रहे। दो मास के समय में महन्त स्वस्थ हो गया। अपना लक्ष्य पूरा न होते देख आजाद साथियों की इच्छा के विरुद्ध वहां से चले गये और अपने साथियों से जा मिले।

आगे चलकर इसी दल ने ९ अगस्त १९२५ को ८ डाउन पैसेंजर गाड़ी में ले जाये जाने वाले सरकारी खजाने को लूटने की योजना बनाई। इस कार्य को पूरा करने के लिए

दल के नेता बिस्मिल के अतिरिक्त ९ क्रांतिकारियों में चन्द्रशेखर आजाद को भी शामिल किया गया था। लखनऊ से पहले काकोरी के निकट जंजीर खींच कर गाड़ी को रोका गया और योजनानुसार खजाना लूट लिया गया।

घटना के बाद गिरफ्तारियों का दौर चला। आजाद अंत तक फरार रहे। २४ अभियुक्तों में चार अभियुक्त पंडित राम प्रसाद बिस्मिल, ठाकुर रोशन सिंह, राजेन्द्र नाथ लाहड़ी तथा अशफाक उल्ला खां को क्रमशः १९ दिसम्बर १९२७ को गोरखपुर जेल में १८ दिसम्बर को इलाहाबाद जेल में, १७ दिसम्बर को गोण्डा जेल में १९ दिसमबर को फैजाबाद में फांसी दी गई।

**चन्द्रशेखर आजाद ने प्रसिद्ध क्रांतिकारी वीर सावरकर से भी भेंट की थी जिन दिनों वे गिरफ्तारी से बचने के लिए बुन्देल खंड से बम्बई आये थे और यहां बन्दरगाह में कुली का काम करते थे। भेंट में सावरकर ने आजाद को क्रांति पथ की कठिनाइयों से अवगत कराया था और इनसे भयभीत न होने का परामर्श दिया था। सावरकर के परामर्श से उन्हें नई प्रेरणा मिली थी और वह क्रांतिकारी दल का नये सिरे से संगठन करने के लिए बम्बई से उत्तर की ओर आये थे।**

कानपुर पहुंच चन्द्रशेखर आजाद प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी पत्रकार एवं समाज सुधारक गणेश शंकर विद्यार्थी के पास ठहरे। भगत सिंह भी इन दिनों यहीं थे। अतः आजाद की भगत सिंह से पहली भेंट यहीं हुई। इसके पश्चात उन्होंने नये दल के संगठन का कार्य आरम्भ किया। ८ सितम्बर १९२८ को फिरोजशाह कोटला के किले के खण्डरों में बंगाल के अतिरिक्त उत्तर भारत के राज्यों के क्रांतिकारी संगठनों के प्रतिनिधियों ने उपस्थित होकर नये क्रांतिकारी दल "हिन्दुस्थान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी" का गठन किया। आजाद चूंकि सबसे अधिक अनुभवी थे इसलिये उन्हें इसका प्रधान सेनापति कमाण्डर इन चीफ बनाया गया।

२० अक्टूबर १९२८ को साइमन कमीशन के लाहौर पहुंचने पर शेरे पंजाब एवं आर्य समाजी नेता लाला लाजपत राय के नेतृत्व में रेलवे स्टेशन के बाहर प्रदर्शन किया गया। जिस पर पुलिस अधीक्षक स्काट एवं पुलिस उपाधीक्षक साण्डर्स ने लाठीचार्ज कर लाला जी को घायल कर दिया। लाला जी के सिर, गले, छाती एवं कंधों पर लाठी के तेज प्रहार हुए थे। जिस कारण घटना के उनतीसवें दिन १७ नवम्बर १९२८ को लाला जी की मृत्यु हो गई। २० अक्टूबर की शाम को एक विशाल सभा को सम्बोधित करते हुए लाला जी ने कहा था मैं चैलेंज करता हूं कि इस सरकार की पुलिस ने मुझ पर जो वार किया है वह एक दिन इस सरकार को ले डूबेगा। मैं घोषणा करता हूं कि मुझ पर जो चोट पड़ी है वह भारत में अंग्रेजी राज्य के कफन की आखिरी कील साबित होगी।

इस घटना के उनतीसवें दिन १५ दिसम्बर १९२८ को क्रांतिकारियों ने साण्डर्स की लाहौर में हत्या कर राष्ट्रीय नेता के अपमान का बदला लिया। यद्यपि योजना पुलिस अधीक्षक स्काट को मारने की थी परन्तु साण्डर्स एवं स्काट की परस्पर समानता के कारण स्काट बच गया। चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरु एवं जयगोपाल ने इस योजना को प्रमुख रूप से क्रियान्वित किया। जय गोपाल ने पहले साइकिल पर पुलिस कार्यालय जाकर स्काट की प्रतीक्षा की और साण्डर्स के आने पर उसे स्काट समझ कर भगत सिंह को इशारा किया। पहली गोली राजगुरु ने चलाई जो साण्डर्स के गले में लगी और वह मोटर साइकिल से गिर पड़ा। कोई कसर न छूट जाये, इसलिए भगत सिंह ने चार-पांच तावड़तोड़ गोलियां चलाकर साण्डर्स को पूरी तरह निष्क्रिय कर दिया। घटना के निकट डी० ए० वी० कालेज की ओट में चन्द्रशेखर आजाद इन सभी साथियों की रक्षा के लिए मौजूद थे। भगत सिंह का पीछ कर रहे पुलिसकर्मी चानन सिंह ने आजाद की चेतावनी की परवाह नहीं की तो आजाद के माउजर से निकली अचूक गोली ने उसका काम तमाम कर दिया। **देश भर की जनता भगत सिंह एवं आजाद के इस कारनामे से प्रसन्न थी। घटना के बाद भगत सिंह एवं राजगुरु भगवती चरण की पत्नी दुर्गा भाभी एवं उनके पुत्र के सहयोग से कलकत्ता पहुंचे और आर्य समाज में रहे। वहीं चन्द्रशेखर साधूवेश में भजन कीर्तन करते हुए मथुरा पहुंच गये। अपनी योग्यता की शेखी मारने वाले अंग्रेज अधिकारी योजनायें ही बनाते रहे। एक युवा स्त्री दुर्गा भाभी का अपना एवं अपने बच्चों के जीवन को खतरे में डालकर भगत सिंह को बचाना वस्तुतः रोमांचकारी है और हिन्दू-सिखों के अटूट सम्बन्धों का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।**

८ अप्रैल १९२९ को भगत सिंह एवं बटुकेश्वर दत्त ने केन्द्रीय असेम्बली में बम फेंका एवं स्वयं को गिरफ्तार कराया। इस योजना के क्रियान्वयन में क्रांतिकारी दल के नेता होने के कारण आजाद की मुख्य भूमिका थी। घटना के बाद भगत सिंह एवं बटुकेश्वर दत्त को लाहौर जेल में रखा

*(शेष पृष्ठ ३४ पर)*

# गांधी के सपने और आज का भारत

❑ डा० सत्येन्द्र चतुर्वेदी

**प्राचीनकाल** के धर्मयुद्ध की धारणा के अनुरूप अपने प्रबल विरोधी अंग्रेज को सुधरने का एक और अवसर प्रदान करने के लिए जिसने अपने शान्तिपूर्ण सत्याग्रह को स्थगित कर दिया विश्व भर के संतप्त अभावग्रस्तों के लिए जिसका द्रवित हृदय उमड़-उमड़ उठता था; द्वितीय विश्व काल में विश्वशांति और इन्सानी वजूद को नेस्तनाबूद करने पर तुले क्रूर तानाशाह हिटलर के सुषुप्त सद्अंश को स्पंदित कर मार्मिक अपील करने का जिनमें विरल आत्मिक बल था; सत्य, अहिंसा, प्रेम, शांति जिसके लिए केवल बौद्धिक वाग्विलास नहीं वास्तविक, व्यावहारिक जीवन की बुनियादी शर्त थी, कौन था वह महात्मा? सचमुच कितना समझते हैं हम उनको? क्या निरंकुश ब्रिटिश साम्राज्यशाही की चूलें हिला देने वाले उस चन्द पसली के महाप्राण की अद्भुत जीवनगाथा से वर्तमान नौजवान पीढ़ी परिचित है? **आज साल में दो बार 'जयन्ती' और 'पुण्यतिथि' पर गांधीजी की जरूर सुधि ली जाती है। संचार मीडिया, सरकारी प्रचार तंत्र, हमारे वजीरेआजम से लेकर उनके आदर्शों, मूल्यों से दूर-दूर तक कोई आत्मिक नाता न रखने वाले आला हुकमरान, कर्मचारियों से लेकर शालाओं के बच्चे सब आदेशानुसार प्रायोजित कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। एक ढर्रे में बंधी-बंधायी शब्दावली में श्रद्धांजलि प्रदान करते हैं।** दूसरे दिन आकाशवाणी, दूरदर्शन में फीका सा फिकरा प्रसारित हो जाता है— कृतज्ञ राष्ट्र ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।" (स्वातंत्र्योत्तर भारत में दोनों हाथों से लूट-खसोट का सुयोग प्राप्त हुआ है कैसे वे गांधी जी से उऋण हो सकते हैं। वे स्वभावतः गांधी जी के विशेष कृतज्ञ हैं।) पर असली सवाल ज्यों का त्यों कायम है। यह गांधी है कौन? क्या मायने हैं गांधीजी के? हममें से वे कितने करमचन्द्र पुत्र विग्रहमोहन दास को नहीं, समस्त उदात्त मानवीय मूल्यों के पूंजीभूत स्वरूप गांधी को, उसके अन्तरंग को जानते हैं? उनकी मानव को मानव बने रहने के लिए अपरिहार्य शिक्षाओं की सारसत्ता, महत्ता और सार्वकालिक प्रासंगिकता को समझते हैं, हृदयंगम करने में भी समर्थ हैं? पर उतना दोष, निरीह अनभिज्ञों का नहीं। क्या भोगवाद की मृगमरीचिका में भटके दुनिया के करोड़ों दिग्भ्रांत जन को उनकी विरासत के दावेदार; लोभ और मुनाफे के मौकों पर उनका भरसक दोहन और नाम की अविराम जुगाली करने वाले गांधी के वंशधरों ने गांधी जीवनदर्शन से क्या कभी उनका साक्षात्कार कराने का ईमानदार प्रयास किया? **अपने निहित स्वार्थों में अहर्निश आकण्ठमग्न रहने वाले उन कृतघ्न वंशधरों में राजघाट पर खोखली शपथें खाने के अलावा न कभी निष्ठापूर्वक अपने जीवन में गांधी दर्शन को अवतरित किया ना ही मिशनरी भावना से उसके प्रचार प्रसार के लिए कोई प्रभावी सदुद्योग?** परिणाम देख रहे हैं न; उसे सहने, भुगतने को अभिशप्त हैं। आज भोगलोलुप मनुष्य, स्वार्थान्ध सौहार्द, सहानुभूति, संवेदनशीलता से निपट शून्य दरिन्दा बन कर रहा गया है। वह शील, शालीनता, मर्यादा, सारे श्रेयस्कर संस्कार भुला कर पशु से भी हीन आचरण कर रहा है? मनुष्य का भौतिकता के अतिरेक से हृदयहीन हो जाना नितान्त स्वाभाविक है। वह निःसंकोच खुलेआम मानव अंगों की खरीद-फरोख्त कर सकता है। उसके लिए वे बस कमाई का जिन्स है। उसे शराब, जुआ सब तरह के अवैध धंधों से कोई गुरेज नहीं। अर्थपिशाच ने इसे बुरी तरह अपने चंगुल में जकड़ लिया है कि सारे मानवीय तकाजे उसके लिए तुच्छ, अपदार्थ हो गये हैं। मजे की बात यह है कि अपार सम्पदा का स्वामी भी आज भूखा है, विपन्न है। सहस्रों जिह्वाओं से लीलने पर भी उसकी लालसाओं का शमन नहीं हो पा रहा है। असीम स्वार्थों की पूर्ति के लिए वह कैसे भी निकृष्ट घिनौने हथकंडे हिंसा, हत्या, उत्पीड़न कैसे भी असामाजिक उपायों का अवलम्बन कर सकता है। किसी भी निचाई तक जा सकता है। वह सांठगांठ कर राष्ट्र को धोखा दे सकता है, सरेआम बेच सकता है। **गांधीजी को इस अधपतन की कल्पना थी। वे दृष्टा थे। उन्होंने जीवनभर मनुष्यको इन दुर्बलताओं से स्खलित न होने के लिए बार-बार सचेत, सावधान किया था। अपार अर्थ संग्रह, हिंसा, मिथ्याचार सब विकारों का परस्पर चोली-दामन का सम्बन्ध है। उन्होंने इसीलिए आजीवन आध्यात्मिकता को भौतिकता के ऊपर रखा। उनका संदेश देशकाल बाधित न था। आज की साम्राज्यवादी, विस्तारवादी, उपभौक्तावादी, कट्टरतावादी विनाशक प्रवृत्तियां हमें कहां**

ले जा रही हैं, कौन उस भयावह स्थिति से अपरिचित है? शस्त्रास्त्रों की अबाध होड़, आये दिन के रासायनिक व परमाणु बम्बों के परीक्षण प्रयोग; एशिया व मध्यपूर्व में वर्षों से चला आ रहा रक्तपात का दौर मानवता को किस अंधी गुफा की ओर धकेल रहा है? सदियों द्वारा संवारी, तराशी सभ्यता, संस्कृति कैसे पूर्णविनाश के कगार पर जा पहुंची है? क्या पुराने जंगलराज के अभिषेक का फिर समारम्भ हो रहा है उसका ए.के. ४७ और आर.डी.एक्स अभिनव श्रृंगार कर रहे हैं। पर इस त्रासद स्थिति से हमें कौन त्राण दिला सकता है? बाहर नहीं, शांति सुकून तलाश अन्दर करो।— यह प्रेरणा गांधी के निकट ही जाकर प्राप्त हो सकती है। निःसंदेह आज रेडियोधर्मी विकरण भीषण प्रदूषण एड्स हमारे कुकर्मों के सौजन्य से विनाश के लावे पर बैठी दुनिया के लिए एक मात्र सम्बल गांधी है। हमें एक को चुनना है—गांधी या सर्वनाश। रवि बाबू का यह कथन आज भी सटीक, सार्थक है—"पूर्व की आत्मा ने गांधी में अपना योग्य प्रतीक पहचाना है, वे अपने कामों से सिद्ध कर रहे हैं कि मानवता का चरम सत्य आध्यात्मिक सत्य है। वे अध्यात्म और नैतिकता के बेताज बादशाह हैं, बंदूक के धुएं और नफरत की दुनिया में उनकी आध्यात्मिक वाणी एक ईश्वरीय संदेश है।" ❑

## जिनके पावन बलिदानों से, भारतवासी आजाद हुये?

❑ श्री दयाशंकर मिश्र 'सूर्य' (स्वतंत्रता संग्राम सेनानी)

फटे हुये माता के आंचल को बढ़ कर सीने वालो?
तुम्हें बधाई अमर शहीदों! मर कर भी जीने वालो?
प्राणों का बलिदान चढ़ा कर स्वतंत्रता लाने वालो?
लो प्रणाम ओ! वीर सपूतों! युग-युग तक जीने वालो?
निशि-वासर रह-रह कर खलता था, बन्दी मां का अपकर्ष जिन्हें?
अपने प्राणों से भी बढ़ कर प्यारा था भारतवर्ष जिन्हें?
जो नाम देश का ले करके, मर गये, मिटे बरबाद हुये?
जिनके पावन बलिदानों से, भारतवासी आजाद हुये?
प्रिय मातृभूमि की रक्षा ही, जिनका मरना था, जीना था?
जननी सेवा के भावों में बस, 'काशी' और 'मदीना' था?
जो स्वयं एक इतिहास बने, कैसे उनका यशगान करूं?
मन होता उनके बलिपथ पर, निज जीवन का बलिदान करूं?
तुम चले दासता से लड़ने, तज जन्मभूमि, धन, धरणिधाम?
तुम थे स्वतंत्रता के राही! ले सके न क्षण-भर भी विराम?
लगे न जिनकी जय के नारे, सम्मान राष्ट्र से मिला नहीं?
बनी न जिनकी कहीं मजारें, हुआ कफन भी प्राप्त नहीं?
कितनों ने फूल चढ़ाये हैं? या पढ़ा 'फातिहा' कब्रों पर?
'तुलसी', गंगाजल' कहां मिला? इनको फांसी के तख्तों पर?
शहीदों की मजारों पर, न हैं दीपक, न हैं मेले?
आजादी के परवानों ने उफ किया नहीं न मुंह खोले?

# मंथन : स्वतंत्रता की स्वर्ण जयन्ती के शुभारम्भ पर

❑ महेश महतो

**स्वतंत्रता के अरुणोदय की अगवानी राष्ट्र ने हर्षित होकर की थी। इस विश्वास के साथ कि जो सपने स्वातन्त्र्य संघर्ष के पुरोधाओं ने देखे थे, वे साकार होंगे। वे आदर्श प्रेरणा बनेंगे, जो उनकी धरोहर है। स्वतन्त्रता की स्वर्ण जयन्ती वर्ष के शुभारम्भ के अवसर पर प्रस्तुत है एक परिचर्चा, जो एक झलक देती है विभिन्न क्षेत्रों के प्रमुख व्यक्तियों की वर्तमान स्थिति पर प्रतिक्रिया की :-**

अखिल भारत स्वतंत्रता सेनानी संगठन के उपाध्यक्ष **श्री देवेन्द्र नारायण सिन्हा** का जन्म उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद नगर में २६ जून सन् १९२६ को हुआ था। आप दून स्कूल (देहरादून) के पहले विद्यार्थियों में से एक हैं। उसके बाद आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम०ए० किया। आप उन सौभाग्यशाली लोगों में हैं जिन्होंने लाल किले पर भारत का प्रथम स्वतंत्रता दिवस मनाये जाते हुए देखा।

आपका मत है कि देश का स्वतंत्रता दिवस उन नेताओं की कहानी की याद दिलाता है, जिन्होंने अपना सब कुछ खोकर देश के लिए कुछ हासिल किया था। लेकिन आज अनेक नेताओं के क्रियाकलाप राष्ट्र के लिए शर्म बन रहे हैं। वे मानते हैं कि स्वतंत्रता सेनानियों का दायित्व है कि वे जनताको बतायें कि हमने आजादी ली। आप उसकी हिफाजत कीजिए...। स्वतंत्रता के लिए हुए संघर्ष के समय के जीवन मूल्यों की बहाली से ही उज्ज्वल भविष्य का निर्माण संभव होगा।

**सुशीला जर्मनीदास** का जन्म ७ नवम्बर १९३३ को लाहौर में हुआ था। शादी से पूर्व आपका नाम था सुशीला मल्होत्रा। पिता लाला शिवदास मल्होत्रा व्यवसाय

से अध्यापक थे। श्रीमती सुशीला जर्मनीदास की शिक्षा आर्य वैदिक पुत्री पाठशाला, क्वीन विक्टोरिया गर्ल्स हाई स्कूल में हुई तथा महिला महाविद्यालय लाहौर से उन्होंने स्नातक की उपाधि ली। उसके बाद उच्च संस्कारों के कारण कपूरथला रियासत के दीवान जर्मनीदास से उनका विवाह सम्पन्न हुआ। आजकल आप नई दिल्ली में समाज सेवा करते हुए एकाकी जीवन व्यतीत कर रही हैं।

आप प्रथम स्वतंत्रता दिवस पर मुम्बई में थीं। वहीं आपने आकाशवाणी पर प्रधानमंत्री का भाषण सुना। वे कहती हैं लोग भगवान का लाख-लाख धन्यवाद कर रहे थे कि देश आजाद हो गया। नेताओं में व्यक्तिगत संबंध रखने की भावना थी। वे दूसरे के दुख में दुखी तथा सुख में सुखी होते थे। आज नेताओं में बदलाव आ गया है। किसी की जबान पर भरोसा नहीं रहा। विश्वास तो दूर रहा दिल से भी हां नहीं होती। जनता को मूर्ख बनाते हैं। वे भावुक होकर कहती हैं :

**भावी परबल सब कहे, भावी बड़ा महान,**
**भावी हाथों शाह गाये और दर-दर धक्के खाये।**

**श्रीमती तुलेश्वरी देवी त्यागी** का जन्म ९ सितम्बर १९४३ को मुजफ्फरपुर (बिहार) में हुआ था। पिता रेलवे में कार्यरत थे। इसी कारण आपकी शिक्षा अनेक स्थानों पर हुई। वे इस समय नई दिल्ली नगर परिषद् में निदेशक (शिक्षा) के पद पर कार्यरत हैं। उदारमना हृदय की धनी श्रीमती त्यागी स्वतंत्रता दिवस की स्वर्ण जयन्ती को भारत के नागरिकों के लिए न भुलाने वाला दिन मानती हैं। वे इस दिन पर अपने विभाग व विद्यार्थियों में उत्साह, उमंग देखना चाहती हैं। तथा स्वतंत्रता की बलिवेदी पर चढ़े नेताओं को न भुलाने व उनके आदर्शों पर चलने का संदेश भी देती हैं।

उन्होंने पहला स्वतंत्रता दिवस अजमेर में देखा था। उन्होंने उस समय लोगों में स्नेह, उत्साह तथा कुछ करने की भावना पाई थी। १९६८ में शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश करने के

वाद मे ही वे अनुभव करने लगीं कि विद्यार्थी भटकते जा रहे हैं। वे संस्कारहीन हो रहे हैं। इसके लिए वे अध्यापकवर्ग को ज्यादा दोषी मानती हैं और एक हद तक घरों के वातावरण को भी। वर्तमान राजनीतिक खींचतान की ओर से विमुख होकर वे इस दिवस पर सभी वर्गों से स्वतंत्रता दिवस की इस स्वर्ण जयन्ती पर महापुरुषों के बताये रास्ते पर चलने की अपेक्षा रखती हैं।

१५ जून १९३९ को उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद में जन्मे **भगवन्त सिंह** राष्ट्र की एकता-अखंडता में डॉ० अम्बेडकर की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन विषय पर पी०एच०डी० कर रहे हैं। आपके अनुसार डॉ० अम्बेडकर ने भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय अपनी यथेष्ट भूमिका निभायी थी। इस बात को हमें नहीं भूलना चाहिए। डॉ० अम्बेडकर कृत 'थाट्स ऑन पाकिस्तान' पुस्तक इसका ज्वलन्त उदाहरण है। उनके अनुसार देश के तीन टुकड़े होने की सम्भावना थी, लेकिन अम्बेडकर इत्यादि नेताओं के कारण यह सम्भव नहीं हो पाया। आप नगरपालिका बाल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में प्रधानाचार्य हैं। बच्चों को नैतिकता का आदर्श, उच्च संस्कार प्रदान करना आपका लक्ष्य है।

**डॉ० गिरिधारी सिंह** का जन्म ७ मई सन् १९४१ को बिहार के भोजपुर जिला के बसोरी नामक ग्राम में हुआ था। शिक्षा प्राप्त करने के लिए आपको मीलों पैदल जाना पड़ता था। पी० एच० डी० आपने जिस लगन से प्राप्त की वह अनुकरणीय है। ग्राम के प्रत्येक व्यक्ति को जागृत करने में आपने यथेष्ट योगदान दिया है। आप निदेशक (राजभाषा) डाक विभाग, अध्यक्ष (उपभोक्ता मंच), अनेक शैक्षिक संस्थाओं से सम्बद्ध तथा धार्मिक क्रिया-कलापों में रुचि रखने वाले हैं। डॉ० सिंह के अनुसार जितनी कठिनता से हमें स्वतंत्रता मिली हम उसका निरादर करते जा रहे हैं। १९५७ के बाद से हम दलगत, जातिगत स्वार्थों की राजनीति करने लगे। सीट जीतने के लिए वर्गवाद, वर्णवाद को अपना आधार बनाने लगे। गांधी के स्वदेशीकरण को भूल रहे हैं। गांव की सरस्वती शहरों में जाने लगी। परिणाम स्वरूप हमारी स्थिति बद् से बद्तर होती जा रही है। वे कहते हैं राष्ट्र झोंपड़ियों में बसता है। स्वामी विवेकानन्द की यह उक्ति कितनी सत्य है यह हम सभी को स्मरण रखना होगा।

स्वतंत्रता दिवस की इस स्वर्ण जयन्ती पर कामना करनी होगी "नवभारत का उदय होने दो। उसका उदय हल चलाने वाले किसानों की कुटिया से, मछुए, मोतियों और मेहतरों की झोंपड़ियों से हो। बनिये की दुकान से, रोटी बेचने वाले की भट्टी के पास से वह प्रकट हो। कारखानों, हाटों और बाजारों से वह निकले। वह 'नव भारत' अमराइयों और जंगलों से, पहाड़ों और पर्वतों से प्रकट हो।"

---

*(पृष्ठ ३० का शेष)*

गया। इन्हें जेल से मुक्त कराने की योजना भी आजाद जी ने तैयार की। तैयारियां पूर्णता पर थीं तभी २८ मई १९३० को रावी के तट पर बमों का परीक्षण करते हुए भगवती चरण के हाथ में बम फटने से मृत्यु हो गई। पति की मृत्यु पर पत्नी दुर्गा देवी उनके अंतिम दर्शन भी न कर सकीं। शव को जंगल में ही गाड़ना पड़ा। क्रांतिकारियों में शोक व्याप्त था। इस स्थिति में भी १ जून १९३० को भगत सिंह को छुड़ाने का आजाद जी ने साहसपूर्ण प्रयास किया। सभी तैयारियां की गई थीं। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार भगत सिंह जी को क्रांतिकारी वैशम्पायन की बांसुरी की ध्वनि सुनकर सिर खुलजाकर संकेत करना था। भगत सिंह जी के ऐसा न करने एवं कैदियों की गाड़ी में बैठ जाने के कारण आजाद भी किंकर्त्तव्यविमूढ़ देखते रह गये और निराश होकर लौट आये। लेखकों का मत है कि भगत सिंह जी ने अंतिम क्षणों में जेल से भागने का मत बदल दिया था।

अनेक क्रांतिकारी गतिविधियों एवं काण्डों में पुलिस चन्द्रशेखर की तलाश में थी। उन पर दस हजार रुपये का इनाम भी था। वह इलाहाबाद में मोतीलाल नेहरू एवं जवाहर लाल नेहरू से भी मिले थे। जवाहर लाल की आजाद एवं क्रांतिकारियों के प्रति सहानुभूति थी।

२७ फरवरी १९३१ को आजाद अपने साथी सुखदेवराज के साथ इलाहाबाद के एल्फ्रेड पार्क में बैठे थे। मुखबिर ने पुलिस को सूचना दी। गोरे अफसर पुलिस के साथ पहुंचे। दोनों ओर से गोलियां चलीं। आजाद जी ने मुकाबला किया और साथी को भागने का आदेश दिया। दो पुलिस अधिकारी उन्होंने जख्मी किये। उनकी दायीं टांग, दायीं बाजू एवं फेफड़े में गोली लगी। जब अन्तिम गोली बची तो उसे आजाद ने अपनी कनपटी पर स्वयं मार ली और शहीद हो गये। आजाद की मृत्यु भारत माता के ऐसे वीर सपूत की मृत्यु है जो युगों के अंतराल में पैदा होते हैं।

आजाद का जीवन काल २६ वर्ष से भी कम रहा। युवा पीढ़ी उन्हें अपना आदर्श बनाकर जीवन यापन करे ऐसे युग पुरुष को यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ❑

हास्य-व्यंग

# एक सरकार चौदह भरतार

❑ मृदुला सिन्हा

**अभी** हाल ही में नई दिल्ली की इस सौभाग्यशालिनी का दर्शन कर मुझे अपने गांव की उस औरत का स्मरण हो आया, जिसे उसके पति 'सरकार' कहकर ही पुकारते थे। बचपन और जवानी उस गांव में ही बिताते हुए मुझे कभी यह जानने की उत्सुकता नहीं हुई कि आखिर उसके 'मरताज' उसे सरकार कहकर क्यूं पुकारते थे। उन्होंने नया नाम दिया तो घर के सदस्य, नौकर-चाकर और अड़ोसिनी-पड़ोसिन भी 'सरकार' कहकर ही पुकारने लगे। फिर वह 'चाची सरकार, 'काकी सरकार, 'भौजी सरकार', 'दीदी सरकार' और 'मालकिन सरकार' के नाम से जानी जाने लगीं। उनकी अलग ही पहचान बन गई। वे अपने भरतार (भरण-पोषण करने वाला, अर्थात् पति) को 'मालिक' कहकर पुकारती थीं। और उनके मालिक, उनको सरकार। कैसा सामंजस्य था। विनम्र भाव की वह 'सरकार' मधुरभाषिणी भी थीं और सेवाभावी भी। इसलिए बुजुर्ग महिलाएं उन्हें हृदय से आशीष देतीं—'दूधो नहाओ, पूतों फलो' और उनका आशीष सचमुच फलदायी हुआ। अन्न, धन से कोठी-बखारी तिजोरी और बाल-बच्चों से घर दुआर भर गया। अपने इकलौते पति की उस 'सरकार' का सुहाग भी अचल रहा। 'अचल रहे अहिवात तुम्हारा, जब लगि गंग जमुन जलधारा' का भी आशीष मिला था। नब्बे बरस की अवस्था में भी सन से सफेद बालों के बीच काढ़ी चौड़ी मांग में लाल सिन्दूर भरा रहता। ललाट पर बड़ी सी बिन्दी। पोते की बहू अपने हाथ से प्रतिदिन दादी सास की मांग भर देती। गांव की सभी महिलाएं 'सरकारी बीबी' के भाग्य के लिए तरसती थीं।

इसलिए वर्षों बाद जब उस दिन नई दिल्ली में राष्ट्रपति भवन के आसपास वह नई 'सरकार' मिली, मुझे बड़ा सुखद लगा। मेरे सामने गांव वाली 'बीबी' सरकार का सौभाग्य से भरा खिला, सौम्य चेहरा आ धमका। मैंने पूछा—"क्या आपके भी भरतार ने ही आपका नाम 'सरकार' दिया? तब तो आप भी नब्बे बरस तक सुहागन रहोगी।" मेरे मुंह से आशीष भी छिटक गया।

वह नई नवेली शरमाती-सकुचाती घूंघट नाक के नीचे सरकाए गर्दन को बाईं ओर ले जाकर बोली—"कौन से भरतार? सुनकर मुझे बड़ा अचम्भा हुआ।

मेरे सामने तो वह नवोढ़ा खड़ी थी, जिसके पांव महावर भी गीला था। मांग में भरा सिन्दूर जम भी नहीं पाया था, फिर उसने पलटकर वैसा सवाल क्यों किया?

मैंने कहा—"अरे वही भरतार, जिसने आपका हाथ थामा है। अग्नि को साक्षी रखकर जीवन भर साथ निभाने की कसम खाई है। और कौन....।"

बहन जी! आप मुझे पहचान नहीं पाईं। इसलिए मेरे भाग्य का आकलन भी नहीं कर पा रही हैं। आपने अखबारों में पढ़ा होगा—चौदह भरतार हैं मेरे। मैं वही तो हूं, आजकल देश-परदेश में मेरी ही तो चर्चा है। उन तमाम सुहागन औरतों से मेरा भाग्य चौदह गुणा बड़ा है। मेरे तो एक नहीं, चौदह भरतार हैं।"

"क्या कहा? चौदह? चौदह भरतार और एक अदद सरकार।"

वह सरकार इठलाती हुई बोली—"हां जी। बहनजी यह कलयुग है, तभी तो एक सरकार के चौदह भरतार। लेकिन यह आपने पति, पत्नी, औरत, मर्द की क्या रट लगा रखी है। अब यह सब नाते रिश्ते छोड़ो भी। मेरे चौदह भरतार और मैं अकेली सरकार। बस इतना याद रखो।"

"हां, हां, मैं समझ गई। चौदह मिलकर तुम्हारा भरण-पोषण करेंगे।' उसकी ठसक थी—चौदहों ने एक स्वर से कसम खाई है। मेरा भरण-पोषण करते रहेंगे।"

**वह सरकार इठलाती हुई बोली—"हां जी। बहनजी यह कलयुग है, तभी तो एक सरकार के चौदह भरतार। लेकिन यह आपने पति, पत्नी, औरत, मर्द की क्या रट लगा रखी है। अब यह सब नाते रिश्ते छोड़ो भी। मेरे चौदह भरतार और मैं अकेली सरकार। बस इतना याद रखो।" "हां हां, मैं समझ गई। चौदह मिलकर तुम्हारा भरण-पोषण करेंगे।" उसकी ठसक थी—"चौदहों ने एक स्वर से कसम खाई है। मेरा भरण-पोषण करते रहेंगे।"**

यहां भी मान्य सात स्वर दुगुना हो गए, अब तक तो आवश्यकता पड़ने पर सात स्वर ही एक स्वर में पिरोए जाते थे। यह तो चौदह स्वरों के एक स्वर की बात कह गई। आश्चर्य तो तब गहराया, जब उसने कहा कि चौदह के चौदह भिन्न-भिन्न गति, मति व रुचि के हैं।

दो दिनों बाद वह फिर मिल गई। दरअसल इन दिनों मेरे चिन्तन-मनन और चर्चा का विषय भी वही बन गई थी। इस बार मिलने पर उसका भी चेहरा मुरझाया सा दिखा। मैंने पूछा— 'आज बड़ी परेशान दीख रही हो। क्या हुआ?

"क्या बताऊं बहन जी। मैं तो चौदह भरतार पाकर अपने भाग्य को सराह रही थी। पर यहां तो सिर मुंडाते ही ओले पड़े।" वह सिर थाम कर बैठ गई।

"बात तो बताओ हुआ क्या? उनमें से किसी ने दुर्व्यवहार किया? अपने वादे से मुकर गया? आखिर क्या हुआ?

मैंने उस पर हो रहे अत्याचार की लड़ाई अपने महिला उत्पीड़न विरोध मंच से लड़ने का आश्वासन भी दिलाया।

वह बिदक गई। बोली—'उफ! मुझे तो उत्पीड़न, अत्याचार, अनाचार ऐसे शब्दों से सख्त नफरत है मैं तो अपने प्रति इन चौदहों के अति लगाव, आसक्ति से परेशान हूं। सबके सब अपना पूर्ण अधिकार जताने में लगे हैं।"

"तुम भी खूब निकलीं। गुड़ खाए गुलगुले से परहेज। चौदह भरतार वाली बनकर अपने भाग्य को सराहती फिरोगी और चौदहों के प्यार का बोझ उठाने से कतराओगी तो चलेगा कैसे?"

चिन्तित मुद्रा थी उसकी। श्रृंगार फीका पड़ा हो था। गहरी सांस खींचती बोली—"मैं तो तंग आ गई, इन भरतारों से। सब अपनी-अपनी हांकते हैं। चौदहों की चौदह प्रकार की रुचियां हैं। मति की तो पूछिए मत। सारे बौराए ही दीखते हैं। अब देखो न सब अपनी-अपनी पसंद के रंग की साड़ी ले आए। एक-एक की जिद थी कि मैं उनकी ही पसंद की साड़ी पहनूं यह देखिए, यह हरा रंग, यह लाल रंग...."

वह अपने बदन पर लपेटी हरे रंग की साड़ी उतारने लगी। मैंने कहा, "यह क्या कर रही हो। बीच विजय चौक पर। किसी ने देख लिया तो...."।

पर उसने तो प्याज के छिलके की तरह तेरह साड़ियां उतार फेंकी। एक साड़ी पहनी रही। उसमें भी तेरह रंग थे। मैंने पूछा—"यह कैसी साड़ी है।"

"मैंने एक में ही सब रंग मिला लिए हैं। पर अब तो मेरा गाना रोना भी बंद हो गया।"

"क्या गाने और रोने से किसी को एतराज है।"

"बहन जी, एतराज की बात नहीं है। पर कोई कहे, रशियन धुन सुना, कोई पॉप म्यूजिक, कोई गजल, कोई कहे पान खाए सैंया हमार—यह सुनाओ। अब मैं किसकी सुनूं और किसको सुनाऊं। आप ही सोचो। हाय मैं तो मर गई।"

मैंने मन ही मन कहा, "तुम्हारी नियति यही है मरना तो है ही। जितना जल्दी मरो। तुम्हारी आत्मा की शांति के लिए अभी से श्रद्धांजलि सभा का आयोजन शुरू करवा दूं। दरअसल चौदह भरतार वाली बात मुझे जंच नहीं रही थी।"

प्रकट में कहा—"तुम राम धुन ही गा लिया करो।"

वह अपने दोनों कान पर हाथ रख इधर-उधर देखती हुई बोली—"बहन जी, यह क्या कह दिया आपने। पहले तो केवल दीवार के भी कान होते थे। पर इन दिनों हवा के भी कान होने लगे हैं। मेरे आसपास भी राम धुन सुन ली तो पूछो मत। उन्हें यह धुन नहीं चाहिए।

वह मुझे बार-बार मिलती रही। मैंने उसकी परेशानियां सुन-सुनकर उसे अपनी संस्था "महिला उत्पीड़न विरोधी मंच" की सदस्य बना ही लिया। पर वह अपने को उत्पीड़ित मानने को तैयार नहीं थी। न मेरी संस्था के दफ्तर में आना ही उसे कबूल था। पर ऐसी कौन सी महिला है, जिसे कुरेद कर देखो तो उसके हृदय में भरतार के अत्याचार की पीड़ा न हो। मानसिक या शारीरिक रूप से पीड़ित तो सब हैं।

एक दिन उसकी पीड़ा भी गहरा गई। भागी हुई हमारे दफ्तर में आई। बोली—"अब तो हद हो गई। अब हमें इनसे मुक्त होने का तरीका बताओ।"

"हुआ क्या? यह तो बताओ।" मैंने उसे बैठाते हुए पूछा—

"अरे क्या बताऊं इस गांव में मेरी खातिर ये चौदह तो एक ही थाली में खाने लगे। एक अकेला रह गया। उसके ये जानी दुश्मन। मुझे सिखाया कि वे मेरे जेठ हैं। इसलिए भूल से भी मैं उनकी ओर न देखूं। बस एक दिन मुझसे गलती हो ही गई। फिर तो पूछो मत।"

तुम्हारी पिटाई कर दी। चलो फिर पुलिस केस...."

"नहीं बहन जी। मुझे हाथ भी न लगाया। आपस में ही सिर फुटौव्वल कर रहे हैं। मैं तो भाग के आ गई।"

वह हांफ रही थी। बाहर कई लोगों के साथ गाली-गलौच करने की आवाज आई। जब तक मैं जाकर देखूं सब अन्दर आ गए। उन्हें आपस में लड़ने तथा सरकार के पीछे भागने का दृश्य देखकर मेरे सामने समुद्र मंथन के समय की मोहिनी के पीछे लगे लोगों के चेहरे आ गए।

वह भागकर बाहर चली गई। चौदहों उसके पीछे भागे। सामने ही दरिया था। उसने छलांग लगा दी। सबके सब स्तब्ध हो देखते रहे। मानो उनके हाथों से उनकी ही भूल से अमृत का घट फूट गया हो। मैं उन्हें क्या सांत्वना दिलाती। मैं तो तत्काल अपनी एक सौभाग्यशालिनी सदस्य की मृत्यु पर श्रद्धांजलि सभा के आयोजन में जुट गई। ❑

# वैदिक धर्म की सनातन सार्वभौमिकता (२)

❑ डॉ० ब० द० धवन डी.फिल, (वैदिक साहित्य)

भाई-भाई से कभी द्वेष न करे और बहिन-बहिन का अप्रिय न करे। इस प्रकार सभी बहिन भाई आपस में मधुर भाषण करते हुए, अपने कल्याण एवं भद्र के लिए दत्तचित्त होकर जीवन में कार्यशील रहें। यदि किसी विषय पर भाई-बहिनों का परस्पर मतभेद हो, तो उस विषय अथवा समस्या पर शान्तिपूर्वक परस्पर सद्भावना से विचार-विमर्श करके समुचित हल निकाल कर, एक मत और निश्चय वाले होकर कार्य प्रवर्तक हों, ताकि मंगलदायक सुपरिणाम प्राप्त हो। संक्षेप में यह कह सकते हैं कि माता-पिता का सम्मान करते हुए एवं उनकी यथार्थ आज्ञाओं का परिपालन करते हुए, परिवार के सारे सदस्य प्रेम सहित एक-दूसरे का हित करते हुए, स्नेहयुक्त व्यवहार से जीवन के विभिन्न कार्यों में एक मतवाले एवं एक व्रत वाले होकर जीवन यापन करें। यह आह्वान अथर्ववेद में किया गया है।

**विद्वानों तथा सबके प्रति सम्मान**

मूलतः मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अतः हमें अपने सामाजिक व्यवहार तथा शिष्टाचार में कुछ बुनियादी नियमों का सदा पालना चाहिए। इसलिए हमें अपने दैनिक जीवन में एक दूसरे से कुशल मंगल, ऐश्वर्य, अच्छी सेहत इत्यादि की शुभकामनाएं अवश्य करनी चाहिए। बच्चों एवं युवकों के प्रति अपना प्यार न्यौछावर करना चाहिए और हार्दिक आशीर्वाद देना चाहिए। इसी प्रकार अपनी आयु वालों तथा बराबर वाले जनों के प्रति सौहार्द एवं सद्भावनाओं का आदान प्रदान होना अत्यावश्यक है। बड़ों और विद्वानों के लिए दिल में सत्कार एवं श्रद्धा होनी चाहिए। सामाजिक जीवन में जहां तक हो सके, हमें एक दूसरे का सहायक होना चाहिए तथा यदि किसी ने हमारी सहायता की हो, तो उसके प्रति सदैव कृतज्ञ होने के अतिरिक्त उनके किए उपकार का बदला चुकाने के लिए तन-मन-धन से उद्यत रहना चाहिए। यह वैदिक सभ्यता का मौलिक आधार है। जिस समाज में इन मुख्य सिद्धान्तों का पालन किया जाता है, वहां के निवासियों का परस्पर स्नेह एवं आदर बना रहता है और सामाजिक जीवन सर्वतः सौहार्दपूर्ण तथा उल्लास परिपूर्ण रहता है। कैसी आदर्श सामाजिक सुव्यवस्था का चित्रण है, वैदिक धर्म की सभ्यता? (स्रोत १)।

**सबके साथ स्नेहपूर्ण वर्ताव**

यदि मनुष्यों का व्यवहार कुत्तों अथवा जंगली पशुओं जैसा होता, तो आपस में लड़-लड़ मर जाते। इंसानी जीवन में न तो सुख-शान्ति और न ही प्रगति होती। बस मारधाड़ मची रहती और आदमी दरिन्दा (हिंस्र जंतु) बन कर रह जाता। फिर क्या यह संसार बसने योग्य भूखण्ड होता? नहीं नहीं, बिल्कुल नहीं। इसलिए वेदज्ञान प्रदाता ईश्वर तथा वैदिक ऋषियों ने मानव वर्ताव को सुनियन्त्रित करने के लिए कुछ बुनियादी नियम बनाए, जैसे :

१. अपने मित्रों एवं साथियों के साथ प्रेमयुक्त व्यवहार करो। (स्रोत २ क)

२. घी तथा मधु से भी मीठा बोलो (स्रोत २ ख)

३. स्नेहयुक्त व्यवहार को एक सर्वव्यापक रूप देते हुए वेद कहता है कि "सब प्राणी मित्र की दृष्टि से मुझे देखें, मैं भी मित्र की दृष्टि सब प्राणियों को देखूं।" इस प्रकार हम सब परस्पर मित्र की दृष्टि से देखें। (स्रोत २ ग)। इस मन्त्र का अभिप्राय यह है कि सब मनुष्य आपस में सब प्रकार से प्रेमभाव से सब दिन वर्तें। मैं भी सब मनुष्यादि प्राणियों को अपने मित्र जानूं और हानि लाभ, सुख-दुःख में अपने आत्मा के तुल्य ही सब जीवों को मानूं। हम सब लोग आपस में मिल के सदा मित्रभाव रखें और आपसी सुख-समृद्धि को नित्य बढ़ावें। इस प्रकार निर्वैर होकर, सब लोग समग्र चराचर जगत् को मित्र दृष्टि से अपने प्राणवत प्रिय जानें अर्थात् पक्षपात छोड़कर सब जीव देहधारीमात्र अत्यन्त प्रेम से परस्पर वर्ताव करें।

**नेक कमाई**

वेदों में चित्रित आर्य—संस्कृति सुस्पष्ट रूप से दर्शाती है कि हमारी आय के साधन शुद्ध हों और हम दुराचरण एवं भ्रष्टाचार से कभी धन न कमाएं। दो ही दृष्टान्त देने पर्याप्त होंगे। १. हे तेजस्वरूप परमात्मन्! हमारी कमाई को शुद्ध करके, हमारे सब पापों को सुखाकर भस्म कर देवें। हमारी सब बुराईयों को भस्मसात कर दें (स्रोत ३ क)। २ हे पाप तापों को भस्म करने वाले परमेश्वर! हमें धन और ऐश्वर्य की ओर केवल ईमानदार साधनों से ले चलो (स्रोत ३ ख)।

**जीवन में धन-दौलत की प्राप्ति**

वैदिक सभ्यता अभावों, त्रुटियों, निर्धनता, कृपणता इत्यादि के विचारों तथा आख्याओं में तनिक भी विश्वास नहीं रहती। निस्संदेह वैदिक साहित्य आय के साधनों की

पवित्रता अथवा ईमानदारी पर बहुत बल देता है किन्तु यह बात सदा स्मरण रखें कि आर्य लोग धन-धान्य की सम्पन्नता, सुख और आराम के जीवन तथा वैदिक जीवन की जरूरतों की पूर्ति के लिए दिल खोलकर व्यय करने में पूर्व विश्वास रखते थे। उनका आदर्श था कि हम जीवन में परिश्रम करें, धन कमाएं कुछ बचत भी करें और साथ-साथ रिक्तिकरण अथवा खर्च भी होता रहे (स्रोत ४ क)। एक ऋचा स्पष्ट शब्दों में कहती है कि हे प्रजापते! जिन कामनाओं को लेकर हम आपका पूजन करते हैं, वे पूर्ण हों और हम धनैश्वर्य के स्वामी बनें। (स्रोत ४ ख)। इस प्रकार, वेदों में न ही केवल बहुत से सैद्धान्तिक नियमों का उल्लेख है किन्तु कर्मठता से परिपूर्ण जीवन, कमाई करने और सुखमय एवं ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत करने का विधान करते हैं।

**विविध वैदिक उद्देश्य**

विस्तार के भय से समस्त महत्त्वपूर्ण वैदिक उद्देश्यों अथवा मान्यताओं का उल्लेख नहीं किया जा सकता। अतः उनमें से कुछ का संकेत मात्र कर देना युक्तियुक्त होगा :-

**१. दानशीलता एवं अतिथिसत्कार**

आर्थिक तथा अन्न दान एवं आतिथ्यों की आवभगत में वेदों का पूर्ण विश्वास है—यहां तक कि दान देने को तप माना जाता है (स्रोत ५ क, ख, ग) किन्तु यह दान केवल सुपात्र को देना चाहिए ताकि उसका उपयोग शुभकार्यों के लिए हो।

**२. सामाजिक सुव्यवस्था एवं आरोग्यता**

वेद बिगड़े हुए, दुर्व्यवस्थित एवं रोगग्रस्त नागरिकों के समाज की कदापि कल्पना मात्र भी नहीं करते। वैदिक धर्म यह निर्धारित करता है कि हम पूजनीय प्रभु का सदा गुणगान करते हुए अपने जीवन में केवल भली बातों को ही सुनें एवं कल्याणकारक वस्तुओं अथवा दृश्यों को ही देखें। स्वस्थ तथा बलवान् शारीरिक अंगों एवं शरीरों सहित हम ईश्वर प्रदत्त पूर्ण आयु को भोगें (स्रोत १६ क)। ऋग्वेद का संगठन सूक्त निम्न प्रकार के समाज एवं सामाजिक व्यवस्था की परिकल्पना तथा निर्धारण करता है :

१. प्रेम से मिलकर चलो, बोलो सभी ज्ञान वनो।
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी वनो॥
२. हो विचार समान सबके, चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूं बराबर भोग्य था सब नेक हों॥
३. हों सभी के दिल तथा, संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से, जिससे बढ़े सुख-सम्पदा॥

**राष्ट्रीय शिक्षाएं**

महत्त्वपूर्ण बहुमुखी वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना है :

ब्रह्मन्! स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्म तेजधारी।
क्षत्रिय महारथी हों, अरिदल विनाशकारी॥
होवें दुधारू गौवें, पशु अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हो, नारी सुभग सदा ही॥
बलवान सभ्य योद्धा, यजमान पु. होवें।
इच्छानुसार वर्षे, पर्जन्य ताप धोवें॥
फल फूल से लदी हों, औषध अमोघ सारी।
हो योग क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी॥

यजुर्वेद २२.२२

उपर्युक्त राष्ट्रीय गीत सर्वतोमुखी एवं मौलिक है। किसी भी राष्ट्र के सजीव तथा सबल/ऐश्वर्यशाली बने रहने के लिए, केवल प्रार्थना ही वास्तविक रूप में प्रभावकारी नहीं होती, तभी तो वैदिक कर्त्तव्य परायणता पुकार-पुकार कर कहती है कि हम राष्ट्र में (सदा) सबके हितकारी होकर जागरूक रहें, (स्रोत १७ क) इतना ही नहीं बल्कि सभी नागरिक हृष्ट-पुष्ट और स्वस्थ होने चाहिए (स्रोत १७ ख) ताकि क्रियात्मक रूप में राष्ट्र सुयोग्य एवं सशक्त हो।

वैदिक धर्म का प्रभाव इतना विस्तृत एवं अमोघ है कि यदि पूर्णतया उसका वर्णन करूं तो यह लेख और भी लम्बा हो जाएगा। अतः सारांश में इतना लिखना ही पर्याप्त होगा कि इसके कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण नियम निम्नानुसार हैं :

(क) जीवन के कर्त्तव्य-कर्मों को लगन एवं परिश्रम सहित जीवन पर्यन्त करना चाहिए (यजुर्वेद १.६, ४०.२, ऋग्वेद ८.४.७)

(ख) हम सदा पवित्र अथवा शुभ मन वाले हों तथा हमारे कर्म और बल भी कल्याणकारी हों (ऋग्वेद १०.२५.१) तभी तो यजुर्वेद के मन्त्र (३४.१.६) बार-बार कहते हैं कि तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।

(ग) हम संसार में सदा जयशील, अपीड़ित रहें और पृथिवी के क्षति रहित शासक बनें (अथर्ववेद १२.१.११)

(घ) पाप रहित जीवन होना चाहिए तथा हमारी कमाई भी शुद्ध हो (ऋग्वेद १.९७.५.८२.५, यजु० ४०.१६)

(ङ) मन, वाणी और कर्म से सत्यमय व्यवहार पर वैदिक धर्म की अमिट छाप है तथा 'सत्यमेव जयते'। यजुर्वेद के १.५ एवं १९.७७ मन्त्र सत्य के पालन पर बहुत बल देते हैं। ऋग्वेद तो यहां तक निर्धारित करता है कि "सत्यस्य नावः सुकृतम् अपीपरन्" अर्थात् सत्य की नौकाएं सुकर्ता को (भवसागर से) पार लगा देती है (९.७३.१)

**उपसंहार**

उपर्युक्त विवेचन इतना पारदर्शक है कि वैदिक धर्म

के सर्वव्यापी शाश्वत नियम मानव जीवन के लौकिक एवं आध्यात्मिक पक्षों को समूचे रूप में विस्पष्ट प्रस्तुत करता है। यदि इन गुणों को जीवन में क्रियात्मक ढंग से अपनाया जाए तो लोक तथा परलोक दोनों में सुख और आनन्द की उपलब्धि होगी। हमें अपने अन्दर झांक कर देखना चाहिए कि हमारी जिन्दगी में बहुमूल्य किन्तु सुसीमित वर्ष बीतने के साथ-साथ क्या हमने नैतिक एवं आध्यात्मिक तौर पर कोई प्रगति की है। सच्चे जिज्ञासु को अपने समकालीन व्यक्तियों के लिए अपने प्यार को शारीरिक, विभिन्न देशीय, राष्ट्रीय तथा स्थानीय सीमाओं से बहुत पार ले जाना चाहिए। आत्मिक अनुभव की पराकाष्ठा पर पहुंचने के इच्छुक व्यक्ति के लिए समस्त भौतिक सीमाओं अथवा बन्धनों से ऊपर उठना अत्यन्त अनिवार्य है। हमारा भौतिक शरीर तो केवल आधार अथवा नींव है, हमारा स्वामी नहीं। हमें इस शरीर रूपी घोड़ों को अपने ऊपर सवार नहीं होने देना चाहिए। इसके विपरीत उचित तो यह है कि हम इस घोड़े के ऊपर चढ़ें। वेदों के मतानुसार, हमें अपने जीवन में बौद्धिक स्तर से आध्यात्मिक शिखर तक विकसित होना चाहिए ताकि हम केवल विद्वान्, अत्याचारी पुरुष न बनकर रह जाएं, जिनकी दृष्टि सांसारिक लोगों के ऊपर सदा जागरूकता से लगी रहती है। वस्तुतः हमारी आत्मा ही हमारे अन्दर एक प्रकार की परमाणु शक्ति है। अतः आओ हम वैदिक धर्म से सबक सीखें और अपनी आत्मिक शक्ति को घृणा, हिंसा, लोभ, क्रोध, अहंकार, मोह, वासना इत्यादि घटिया भावनाओं को काबू करने में लगावें। हमें पक्का निश्चय करके अपने आत्मिक अस्तित्व तक ऊंचा उठना चाहिए। ऐसा करने के लिए हमें अपने जीवन अथवा कर्मों को सर्वथा पापों से विमुक्त करना होगा। इसके अतिरिक्त हमें विनम्रता परिपूर्ण शान्तमय जीवन व्यतीत करना होगा—सत्यवादिता तप, सम्यक् ज्ञान और ठीक एवं स्वच्छ रोजगार (जीविका) इस जीवन के अनिवार्य अंग होने अत्यावश्यक हैं।

ऐसा करना तब तक बहुत कठिन होगा, जब तक हमें यह विश्वास नहीं हो जाता कि नैतिकता परिपूर्ण आध्यात्मिकता का जीवन धैर्यों के जीवन से अद्वितीय रूप से बढ़िया है। ज्यों हीं हमें ऐसा विश्वास हो जाता है तो हम ऐसे उदात्त जीवन का आनन्द लेना शुरू कर देते हैं। अतः आइए हम वैदिक ऋषियों के बताए मार्ग का अनुसरण करते हुए, अपने दैनिक आचरण में भौतिक एवं नैतिक मान्यताओं का सन्तुलन रखें। यदि हम ऐसा कर पाते हैं, तो शीघ्र ही हमें पता लगेगा कि हमारे अन्दर असीम शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक शक्ति है, जिससे हम इस लोग में ही नहीं अपितु परलोक में भी सफल होंगे।

१ नमो महद्भ्यो नमो अर्भभ्यो, नमो युवभ्यो नम आविनेभ्यः।

यजाम देवान् यदि शक्नवाम, मा न्यायमः संश्मा वृक्षिः देवाः॥ (ऋग्वेद १.२७.१३)

२ क प्रणीतिर् अभ्यावर्तस्व विश्वेभिः सखिभिः सह

अथर्ववेद ७.१०५.१

ख घृणात् स्वादीयो मधुनश्च वोचत। (ऋग्वेद ८.२८.२०)

ग मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्तम्

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे। (यजुर्वेद ३६.१८)

३ क अप नः शोशुचत् अघम् अग्ने शुशुग्ध्या रयिम्!।

अप नः शोशुचत् अघम्। (ऋग्वेद १.८७.१

ख अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् .....(यजुर्वेद ४०.१६)

४ क तयोरिदवसा (तयोः इत् अवसा) वयं सनेम नि च धीमहि।

स्यात् उत प्रश्चम् (ऋग्वेद १.८९.६, यजुर्वेद२५.१२)

ख यत् कामम् ते जुहुमः तन् नो अस्तु

वयं स्याम पतयः रयीणाम् (ऋग्वेद १०.१२१.१०)

५ क त्वमग्ने प्रयतदक्षिणं नरं, वर्मेव स्यूतं परिपासि विश्वतः। स्वादुक्षद्मा यो वसतौ स्योनकृत्, जीवयाणं यजते सोपमा दिवः॥ (ऋग्वेद १.३१.१५)

ख अतिथिदेवो भव (तैत्तिरीय उपनिषद् १.११)

ग दानं तपः। (तैत्तिरीयाण्यक १०.८)

६ क भद्रं कर्मेभिः शृणुयाम देवा, भद्रं पश्येमाक्षभिर यजत्राः। (ऋग्वेद १.८९.८)

स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर, व्यशेमहिदेवहितं यदायुः॥

(यजुर्वेद २५.२१)

ख सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वे, संजानाना उपासते॥

समानो मन्त्रः समितिः समानी, समानं मनः सह चित्तमेषाम्। समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि॥ समानी व आकूतिः, समाना हृदयानि वः। समानमस्तु वो मनो, यथा वः सुसहासति॥ (ऋग्वेद १०.१९१.२-४)

७ क वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः। (यजुर्वेद ९.२३)

ख विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् (यजुर्वेद १८.४८)

चिन्तन-मनन

# अन्य कोई रास्ता नहीं?

❑ भगवान देव 'चैतन्य'

**जीवन** की यह यात्रा पता नहीं कितने युगों से चली और कितने जन्मों तक ऐसे ही चलेगी। यह यात्रा आकस्मिक नहीं है बल्कि इसके पीछे एक महान उद्देश्य है। इसके पीछे एक गहन सार्थकता छुपी है। प्रत्येक व्यक्ति जीवन में शान्ति और एक ऐसा आनन्द चाहता है जो केवल आनन्द ही हो। किसी प्रकार का अभाव न हो दुःख न हो, कष्ट न हो। हो तो परम शान्ति और शाश्वत आनन्द। चाहते तो सभी यही हैं मगर ऐसा होगा कैसे इसका गहन चिन्तन नहीं कर पाते। इतना निश्चित रूप से जाना जा सकता है कि यदि प्यास है तो कहीं न कहीं तृप्ति भी अवश्य है। यह प्यास संकेत कर रही है कहीं न कहीं तृप्ति भी है। यह हमारी दौड़ इस बात का प्रमाण है कि कहीं न कहीं इस दौड़ का अन्त अवश्य हैं जन्म-मरण का चक्कर यह भी बता रहा है कि इसकी पूर्णाहुति भी कहीं न कहीं अवश्य ही है। व्यक्ति निरन्तर इसी चक्कर को समाप्त करने के लिए ही तो दौड़ रहा है। मगर वह मंजिल है कहां? कहां है विश्रान्ति? कहां है शाश्वत शान्ति? इस पर तनिक गंभीरता से चिन्तन करने की आवश्यकता है। थोड़ा सा गहराई में उतरना पड़ेगा। आज तक जिसने भी सत्य को खोजा, शाश्वतता को पाया उसे थोड़ा गहराई में तो उतरना ही पड़ा है। वेद ने हमें मृत्यु से कष्ट से और सब प्रकार के क्लेशों से बचने का मार्ग प्रशस्त किया है। कहा गया है कि बार-बार के इस जन्म मरण के चक्कर और सब प्रकार के कष्ट क्लेशों से छूटने का एक मार्ग है। उस मार्ग के बारे में कहा गया है :-

**वेदाहमेतं पुरुषं महान्तं आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्।**
**तमेव विदित्वाऽति मृत्युमेतिनान्यः पन्था विधतेऽयनाय॥**

(यजु० ३१-१८)

अर्थात् संसार के लोगों यदि आप लोग दुःख, कष्ट, क्लेश और मृत्यु से छूटना चाहते हो तो उस महान, अन्धकार से परे उस दिव्यात्मा परमात्मा को जानो। मृत्यु से छूटने का और कोई मार्ग नहीं है। वेद ने कहा कि केवल एक ही मार्ग है इन सबसे बचने का और वह मार्ग है कि परमात्मा को जानो। अनेक प्रकार की विषय वासनाओं में व्यक्ति सुख शान्ति ढूंढ़ता है मगर सुख मिलता नहीं है, शान्ति मिलती नहीं है, मृत्यु से छुटकारा मिलता नहीं है। हजारों, करोड़ों ही नहीं चाहे अरबों युगों तक भी सांसारिक विषय वासनाओं में आनन्द मिलने वाला नहीं है। इससे तो बल्कि वासनाओं के संस्कार लेकर हम लोग और भी अधिक कष्टों में भटक जाते हैं और भी अधिक योनियों में भटकने का सामान एकत्रित कर लेते हैं। परमात्मा को पाए बिना इनसे निजात मिलने वाली नहीं है। हमारी यह सारी दौड़ निरर्थक सिद्ध हो जाती है। इसे यदि सार्थकता देनी है तो एक ही मार्ग है उस परमात्मा को जाने। योगी अरविन्द जी ने एक स्थान पर बड़ी महत्त्वपूर्ण बात कही है। वह कहते हैं कि यह मत सोचना कि केवल नास्तिक बनने से काम चल जाएगा, नहीं, वे कहते हैं कि परमात्मा को प्राप्त करना हम सबकी मजबूरी हैं जीव मात्र की मजबूरी है उस प्रभु को प्राप्त करना। वे इसका बड़ा ही सुन्दर और सटीक तर्क देते हैं। उनका कहना है कि जीव युगो-युगों से तृप्ति की चाह में भटक रहा है। यह तृप्ति वह कई स्थानों पर रहता है मगर प्यासे का प्यासा ही रह जाता है। श्री अरविन्द का कहना है कि तृप्ति उस परमपिता को प्राप्त करने से ही मिल सकती है। हमारी दौड़ तब तकसमाप्त हो ही नहीं सकती जब तक कि हम परमात्मा को प्राप्त नहीं कर लेते। इस प्रकार परमात्मा को प्राप्त करना हम सबकी मजबूरी है। हमें ईश्वर को प्राप्त करना ही पड़ेगा क्योंकि वहीं जाकर हमें शान्ति मिल सकेगी। वेद भी यही बात कह रहा है। उस परमात्मा को जाने बिना ये जन्म मरण के चक्कर समाप्त नहीं होंगे और न ही हमें कहीं तृप्ति मिल सकती है। हमारी सुख-शान्ति और समस्त सफलताओं का आधार केवल वह परमात्मा ही है। इसीलिए जीव पुकारता है :- **यदग्ने स्यामहं त्वं, त्वं वा या स्या अहम्।**

**स्युष्टे सत्या इहाशिषः।** (ऋ० ८-४४-२३)

हे प्रकाश स्वरूप परमात्मा जब मैं तू हो जाऊं या तू मैं हो जाए तो तेरे इस संसार के सब आशीर्वाद सत्य और सफल हो जाएं।

सब सुखों का, सफलताओं का और समस्त सत्यों को प्राप्त करने का केवल यही मार्ग है कि उस परमात्मा के हो जाएं। मगर उसका हो जाना इतना सहज और सरल नहीं

है। इसके लिए थोड़े तप और त्याग की आवश्यकता है। उसके समीप पहुंचने के लिए कुछ प्रयास करने पड़ेंगे। उसे दिल की गहराईयों से पुकारना पड़ेगा। अपने जीवन की दिशा बदलने की आवश्यकता है। बाहर भागने के स्थान पर भीतर की ओर मुड़ने की जरूरत है। अन्तर्मुखी होने की आवश्यकता है। मन, बुद्धि और कर्म से केवल उसी एक मात्र लक्ष्य की ओर अग्रसर होने की जरूरत है। प्रातः सायं ही नहीं बल्कि प्रतिक्षण उसे ही पुकारने की आवश्यकता है।

**उप त्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया वयम्।**

**नमो भरन्त एमसि॥ (ऋ० १/१/७)**

हे अग्नि स्वरूप परमात्मा हम प्रतिदिन, रात और दिन के समय, बुद्धि व कर्म से नमस्कार की भेंट लाते हुए तेरे समीप आ रहे हैं।

वह परमात्मा आनन्द का भंडार है, उसी के समीप जाकर हमारी प्यास बुझ सकेगी। महर्षि दयानन्द इस सम्बन्ध में बड़ा ही सुन्दर दृष्टान्त देते हैं। वे एक स्थान पर लिखते हैं कि जिस प्रकार सर्दी से ठिठुरता व्यक्ति आग के पास जाकर चैन, सुख और शान्ति प्राप्त करता है वैसे ही सांसारिक दुःखों से त्रस्त व्यक्ति उस परमात्मा के पास जाकर आनन्द और शान्ति को प्राप्त होता है। इसीलिए हमने जो यजुर्वेद का मंत्र प्रस्तुत किया है उसमें कहा गया है कि संसार के लोगों मृत्यु और दुःख से बचने का एक ही रास्ता है कि उस परमात्मा को जान लें। परमात्मा सहज ही मिलने वाला नहीं है। जिस ढर्रे पर जीवन चल रहा है उससे जरा अलग से चलने का प्रयास करना पड़ेगा तब कुछ बात बन सकेगी। उपनिषदों में भीतर के पांच कोशों की चर्चा की गई है। इन कोषों की सिद्धि प्राप्त करके ही उस परमात्मा को जाना जा सकता है। जीवन को गहराई से समझने की आवश्यकता है। सबसे प्रथम कोष है हमारा यह स्थूल शरीर। अन्नमय कोश का यही भाव है। यह स्थूल शरीर ही अन्नमय कोश है शरीर की बात जब हम करते हैं तो समझ लें कि यह आत्मा और परमात्मा से भी मूल्यवान है। इसलिए मूल्यवान नहीं है कि इसमें रहकर हम अनेक प्रकार की विषय वासनाओं की पूर्ति कर सकते हैं॥ मानव शरीर बहुत ही अधिक मूल्यवान है। जो व्यक्ति कौड़ियों के भाव इस जीवन के अमूल्य क्षणों को बर्बाद कर देता है उससे अधिक मूर्ख भला और कौन होगा? इस जीवन का एक-एक श्वास बहुत ही अधिक कीमती है यह मानव का चोला हमें अचानक ही रास्ते में पड़ा नहीं मिल गया है बल्कि इसके पीछे हमारे पुण्य कर्मों की एक बहुत बड़ी श्रृंखला रही है इसलिए इसके महत्त्व को जानना चाहिए और यह भी जानना चाहिए कि इसका महत्त्व है क्या? मानव योनि एक सुअवसर है कि हम इसे प्राप्त करके स्वयं को पहचान तथा स्वयं को पहचानकर परमात्मा को पहचाने। यदि ऐसा नहीं किया तो मानो यह देव दुर्लभ जीवन हमने कौड़ियों के भाव खो दिया। यदि एक बार खो दिया तो यह भी पता नहीं कि फिर यह मानव शरीर हमें कब मिल सकेगा। मिलेगा भी कि नहीं यह भी कुछ ठीक नहीं। एक कदम का भूला हुआ अक्सर हजारों मीलों तक भटक जाता है। एक बार यह जीवन बर्बाद कर दिया तो पता नहीं फिर मिले भी या न मिले। इसलिए उस परमात्मा का लाख-लाख धन्यवाद करना चाहिए कि उसकी कृपा से और अपने संचित कर्मों के आधार पर हमें यह देव दुर्लभ चोला मिला है। जिसने इस चोले का सदुपयोग कर लिया मानो उसने ही इसके महत्त्व को जाना। इस मानव योनि का एक मात्र लक्ष्य है परमात्मा को प्राप्त करना। यदि नहीं किया तो समझें कि एक बहुत बड़ा सुअवसर हमने खो दिया है। एक स्वर्ण अवसर हमें मिला था और हम अपनी नासमझी के कारण उसे खो बैठे। इसलिए बुद्धिमान वही है जो इस चोले का उपयोग परमात्मा की प्राप्ति के लिए करता है। शरीर की महत्ता इसीलिए कही गई है क्योंकि यही द्वार है परमात्मा की गोद में प्रवेश करने का। और भी बहुत सी योनियां हैं मगर उन्हें भोग योनियां कहा गया है। मानव योनि ही कर्म योनि है। कर्म कोई साधारण कर्म नहीं बल्कि महान कर्म इसी योनि में किया जा सकता है और वह महान कर्म है परमात्मा की प्राप्ति। इसलिए यह शरीर बहुत ही संभाल-संभाल कर रखने के योग्य है क्योंकि इसका एक-एक क्षण मूल्यवान है। किसी कवि ने बहुत खूब कहा है—**शरीर माध्यम जलु धर्मसाधनम्**' समस्त धर्मों का साधन यह शरीर ही तो है इसलिए परमात्मा को प्राप्त करना है तो भी इस शरीर को स्वस्थ रखने की बहुत अधिक आवश्यकता है। परमात्मा को लोग बाहर व्यक्तियों द्वारा बनाए गए धर्मस्थानों में खोजने का प्रयास करते रहते हैं जबकि परमात्मा स्वयं बनाए इस शरीर रूपी मन्दिर में ही है। उससे मिलना हो सकेगा अतः इसे झाड़ने पोंछने की बहुत आवश्यकता है शरीर यदि स्वस्थ नहीं है तो हमारी यात्रा रास्ते में ही अधूरी रह जाएगी इसलिए इसकी स्वस्थता पर ध्यान देने की आवश्यकता

है। शरीर न तो बहुत खाने से स्वस्थ बनता है और न ही कम खाने से बल्कि स्वस्थ रहने के लिए कुछ नियमों का अवलम्बन करने की आवश्यकता है। चरक ऋषि ने शरीर की स्वस्थता के मुख्य तीन आधार बताए हैं—आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य।

आमतौर पर लोग आहार पर कोई विशेष ध्यान नहीं देते हैं इसीलिए अस्वस्थ रहकर अनेक प्रकार की बीमारियां मोल लेते हैं। अपने शरीर के बारे में व्यक्ति को बहुत हद तक अपने आप ही पता होता है कि उसे कैसा आहार अनुकूल बैठता है मगर जिह्वा के स्वाद के पीछे भाग वे प्रतिकूल भोजन का सेवन करके अपने ही शरीर को हानि पहुंचाते हैं। भोजन वास्तव में निश्चित समय पर और भूख लगने पर ही खाना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने इस सम्बन्ध में बहुत सार्थक बात कही है। वे कहते हैं कि भूख न लगने पर खाने वाला और भूख लगने पर भी न खाने वाला दोनों ही शरीर के साथ अत्याचार करने वाले हैं। भूख लगने पर भी व्यक्ति को शरीर के अनुकूल और थोड़ा भोजन ही करना चाहिए। ठूंस-ठूंस कर पेट को नहीं भरना चाहिए। रात्रि का भोजन कम से कम सोने से दो घंटे पहले अवश्य ले लेना चाहिए। पूरे दिन भर में केवल दो या तीन बार ही भोजन करना चाहिए तथा बकरी की तरह दिन भर कुछ न कुछ चरते रहने से शरीर को हानि उठानीपड़ती है। मौसमी, फलों, सब्जियों आदि का प्रयोग अनिवार्य रूप से करना चाहिए। सब्जियों को अधिक पकाना और उनको मिर्च मसाला डालकर तलना आदि नहीं चाहिए इससे भी उनके पौष्टिक तत्त्व नष्ट हो जाते हैं। धूम्रपान, मांस, मदिरा आदि के सेवन से दूर रहना चाहिए। अधिक चाय और कॉफी आदि भी शरीर के लिए हानिकारक है। चरक ऋषि ने ही भोजन के बारे में तीन बहुत ही महत्त्वपूर्ण बातें कही हैं। उनका कथन है — जो अपने शरीर के लिए हितकारी हो ऐसा ही भोजन करना चाहिए। स्वाद के लालच में हितकारी भोजन भी अधिक मात्रा में नहीं करना चाहिए बल्कि थोड़ी मात्रा में ही करना चाहिए। साधक को तो इस सम्बन्ध में विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए। किसी साधक ने बहुत अच्छा कहा है कि आधा पेट परम योगी, पौन पेट योगी, पूरा पेट भोगी। कुछ खाली रहने पर ही अपना हाथ पीछे खींच लेना चाहिए। गीता में भी कृष्ण महाराज जी ने भी कहा कहा है— युक्ताहारविहारस्य.....' हमारा आहार भी उचित मात्रा वाला ही होना चाहिए।

चरक ऋषि ने तीसरी बात तो बहुत ही महत्त्वपूर्ण कही है अर्थात् ऋत भुक्। पवित्र अन्न और पवित्र कमाई से घर लाया गया अन्न ही खाना चाहिए। साधारण व्यक्ति इस बात को महत्त्व नहीं देता है मगर यह बहुत ही अधिक महत्त्वपूर्ण बातहै। आज व्यक्तियों के चरित्र बिगड़ गए हैं, समाज और राष्ट्र का चरित्र बिगड़ा है क्योंकि आज पवित्रता-अपवित्रता का जरा सी भी ध्यान नहीं रखा जाता है।

*(शेष अगले अंक में)*

## पावन अपना आर्य समाज

धर्म संस्कृति के उन्नायक थे मनीषि वे ऋषिराज।
पावन सुलभ बना गए भारत के लिए आर्यसमाज॥
जब ज्ञान का विनाश हुआ, फैला चहुंदिशि हाहाकार।
संभवामि युगे-युगे लिए, महापुरुष मनुज अवतार॥
समय पहचान कर निज को पड़े पापों पर बन गाज।
पावन सुलभ बना गए भारत के ऋषि आर्यसमाज॥ १॥
जिस-जिस युग में अधर्म हुए, प्रजा करती त्राहिमाम।
नव-नव ऐसे ही ऋषि आकर, हाथ लिए सभी का थाम॥
संघर्ष किए देशहित के, बना दिया सजग समाज।
पावन सुलभ बना गए भारत के ऋषि आर्यसमाज॥ २॥
पाखंडियों को देते रहे चुनौती व उत्तर दिया मुंहतोड़।
ऐ मानवो, क्यों पाप में डूबे धर्म से लिए मुंह मोड़॥
आओ मेरे मार्ग पर कोई कैसे रहे अज्ञानी आज।
पावन सुलभ बना गए भारत के ऋषि आर्यसमाज॥ ३॥

**स्वामीनाथ शर्मा, बलसाड़**

## पं० सत्यदेव विद्यालंकार का निधन

गुरुकुल कांगड़ी के पुराने निष्ठावान, कर्मठ आर्य नेता स्वातन्त्र्योद्धा दयानन्द संस्थान के सहयोगी श्री पं० सत्यदेव विद्यालंकार का बुधवार १७ जुलाई को ग्रेटर कैलाश पार्ट-१ में ८६ वर्ष की आयु में निधन हो गया। पण्डित सत्यदेव जी का गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की प्रगति में बहुत योगदान रहा। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

# पूजा किसकी और कैसे?

❑ जय प्रकाश शर्मा

**पूजा** प्रायः श्रेष्ठ की ही की जाती है। श्रेष्ठ कौन है? वह है ब्रह्म, परमेश्वर, परमात्मा, शिव, विष्णु, गणेश, राम, कृष्ण आदि तथा पृथ्वी, लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती अनेक देवियां जैसे वैष्णो, शाकुम्भरा, मनसा आदि की पूजा करते हैं किन्तु यथायोग्य पूजा पद्धति नहीं अपितु उनकी पूजा साकार रूप देकर धूप, दीप, पत्र, पुष्प, वस्त्र, भूषण अर्पित कर करते हैं। मैं अपनी ओर से इसके औचित्य पर कुछ नहीं कहूंगा। मैं तो केवल यह बताना चाहता हूं कि इस पूजा पद्धति को अपनाने वाले व्यक्ति प्रायः आद्यशंकराचार्य को अपना परम गुरु मानते हैं। क्या वे उस गुरु के वचन का पालन करते हैं। इसी पर विचार प्रस्तुत करना चाहता हूं। उनके अनुसार परा और अपरा दो मूल तत्त्व हैं। "अपरा" ईश्वर (ब्रह्म) से इतर (भिन्न) जो भी हैं उनकी पूजा पद्धति भिन्न है तथा 'ब्रह्म' पूजा परा पूजा की श्रेणी में आती है। अब यह भी जान लेना उपयुक्त होगा कि देव, देवी, ब्रह्म, विष्णु, शिव, गणेश, लक्ष्मी, दुर्गा आदि कौन हैं। ये परमेश्वर (ब्रह्म) के ही नाम हैं जो गुण संज्ञक हैं। इनको अलग अलग मानना उचित नहीं है जैसे किसी गृहस्थ में व्यक्ति विशेष पति, पुत्र, पिता, भ्राता आदि अनेक रिश्तों से जाना जाता है किन्तु है एकही व्यक्ति। इसी प्रकार ब्रह्म भी अनेक नामों से जाना जाता है। इस सृष्टि का वह परमाधार, पिता, माता, निर्माता, पालनकर्ता, संहारकर्ता, कल्याणकर्ता, सम्पन्नतादाता है। यहां अथर्ववेद के मंत्र १९-७१/१ का प्रसंगवश उद्धरण देना उपयुक्त होगा।

**स्तुतामया वरदा वेद माता प्रचोदयन्ताम पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं, प्रजां, पशुं, कीर्तिं, द्रविणं, ब्रह्मचर्यसम महां दत्वाव्रजत ब्रह्मलोकम॥**

यहां वह सब कुछ देने की प्रार्थना की गई है जिसकी कामना प्रायः सांसारिक मनुष्य करता है। दाता वही कुछ दे सकता है जो उसके पास हो या उसकी सामर्थ्य में हो। अतः ब्रह्म के गुणवाचक भिन्न-भिन्न नामों का आकार देकर पूजा करना आद्यशंकराचार्य वेद व ऋषियों के मतानुसार नहीं है। हां, अपने महापुरुषों, देवियों का स्मरण कर लेना ठीक होगा जिससे हम उनके सद्कार्यों, उपकारों को स्मरण श्रद्धा सहित करते रहें तथा उनके मार्ग का अनुसरण करें। यही उनकी पूजा होगी। इसी प्रकार पितरों (माता-पिता, मातामह-पितामह आदि) का आदर, सम्मान व वस्त्र भोजन से तृप्ति करना उनकी पूजा है। पृथ्वी, जल, आदि ब्रह्म के ही नाम हैं किन्तु भौतिक नाम भी हैं उनकी पूजा उनके ठीक-ठीक ज्ञान प्राप्त कर उनका सदुपयोग करना-कराना ही उनकी पूजा होगी तब वे देव संज्ञक होंगे किन्तु उनको प्रदूषण रहित उर्वरता बनाये रखने के उपाय आवश्यक हैं जिससे वे उपयोगी बने रहें। अस्तु, परा पूजा ब्रह्म (महादेव)की ही सम्भव है। अपरा जो ब्रह्माश्रित है उनको देव कह लेते हैं जैसे जीवित देव, माता, पिता, मातामह, पितामह, आचार्य, अतिथि आदि उनको यथायोग्य अर्घ्य वस्त्र, भोजन यथेप्सु प्रदान करना उनकी पूजा तथा सम्मान है।

दूसरे —देव भौतिक पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र, जल, वायु आदि जिनके यथेष्ठ गुण धर्म का ज्ञान प्राप्त कर उनका सदुपयोग करना कराना वास्तविक पूजा होगी।

तीसरे—पूर्व में हुए महापुरुष जिन्होंने अपने-अपने कार्यों शौर्य से देश व प्रजा का उपकार किया तथा अपना यश और कीर्ति फैलाई उनको स्मरण करने और उनके मार्ग का अनुसरण करना ही उनकी सच्ची पूजा होगी। केवल नाम कीर्तन पूजा नहीं हो सकती और न उससे कुछ लाभ ही होगा। ब्रह्म की पूजा की वर्तमान पद्धति पत्र पुष्प, गंध आदि द्वारा किया जाना आद्य शंकराचार्य को स्वीकार्य नहीं है उन्होंने ही इस पद्धति के विरुद्ध मत व्यक्त किया है। देखें वे क्या कहते हैं—

**१ अखंडे सच्चिदानन्दे, निर्विकल्पैकरूपिणः। स्थितेऽद्वितीय भावेऽस्मिन्कथम् वि धीयते॥ २ पूर्णस्याऽऽवाहनं कुत्र, सर्वा धारस्य चासनम्। स्वच्छस्यपाद्यमर्घ्यम् च शुद्धस्याचमनम् कुतः॥ ३ निर्मलस्यकुतः स्नानम वस्त्रभवि खोदरस्यव्। अगोत्रस्य त्ववर्णस्य कुतस्तस्यो पवतिकम्॥ ४ निर्लेपस्य कुतो गन्धः पुष्पं निर्वासनस्य च। निर्विशेस्यकाभूपा कोऽलङ्कारोनिराकृतेः॥ ५ निरञ्जनस्य किं धूपैर्दीपैर्वा सर्वसाक्षिणः। निजानन्दैकतृप्तस्य नैवेद्यं किं भवेदिह॥ ६ विश्वानन्दीयतृप्तस्य किं ताम्बूल प्रकल्पयते। स्वयं प्रकाशश्चिद्रूपो योऽसावर्कादिभासकः॥ ७ प्रदक्षिणा ह्यनन्तस्ये हृदयद्वयस्य कुतो नतिः। वेद वाक्यैरवेद्यस्य कुतः स्त्रोत्रं विधीयते॥ ८ स्वयं प्रकाशमानस्य कुतो नीराजन विभोः। अन्तर्बहिश्च पूर्णस्य कथमुद्वासनं भवेत्॥ ९ एकमेव परापूजा सर्वावस्थासु सर्वदा।**

**एकबुद्धवद्धया तु देवेश विधेया ब्रह्मवित्तमैः॥**

ब्रह्म की वाणी वेद में ही उपलब्ध है उसमें उपदेश, सर्वज्ञान, सत्कर्म, भौतिक जगत का सदुपयोग आदि का वर्णन है। उनके अनुसार जीवन बना कर चलना उपयुक्त पूजा है। महर्षि दयानन्द का भी शंकराचार्य से इस सम्बन्ध में मतैक्य है। कृपया सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम समुल्लास देखें। ❑

स्वास्थ्य चर्चा

# गोमूत्र ने घातक रोगों से मुक्ति दिलाई

❑ सोहनलाल अग्रवाल 'बागड़िया'

**कई वर्ष** पुरानी बात है ग्रह दशा या किसी पूर्व जन्म के पाप के कारण मैं शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से बीमारियों के चंगुल में फंसता चला गया था। न दिन में शरीर व मन को चैन मिल पाता था, न रात को नींद आ पाती थी। चौबीसों घंटे की चिन्ता ने मेरे शरीर को जर्जर करके रख दिया था। भोजन के बाद सोने का प्रयास करता किन्तु स्वप्नों से घिर जाता।

पूरा शरीर रोगों का अड्डा बन गया था। घुटनों में दर्द रहने लगा। चौबीस घंटे सिर में पीड़ा रहती। पाचन शक्ति नष्ट प्रायः हो चुकी थी। स्मरण शक्ति लुप्त हो रही थी। मानसिक संतुलन बिगड़ जाने से हर समय क्रोध आने से चिड़चिढ़ा रहने लगा था। चिन्ता और चिड़चिढ़ेपन से शरीर का रंग बिल्कुल काला पड़ गया था। तमाम शरीर में खुजली रहने लगी थी।

मैंने शरीर के तमाम अवयवों की डाक्टरी जांच करायी किन्तु कोई भी बीमारी पकड़ में नहीं आयी। आयुर्वेदिक, एलोपैथिक तथा होम्योपैथिक तीनों प्रकार की दवाएं लीं किन्तु रोग का कोई निवारण नहीं कर सकीं। गणेशपुरी (महाराष्ट्र) जाकर गन्धक के पानी में कई दिनों तक स्नान किया किन्तु चर्मरोग पर भी नियंत्रण नहीं पाया जा सका।

निराश होकर मैंने 'हारे को हरिनाम' का सहारा लिया तथा जीवन की अन्तिम संध्या मानकर मैं तीर्थयात्रा के लिए निकल पड़ा। द्वारका, रामेश्वरम की तीर्थयात्रा के बाद बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री आदि की यात्रा करने के बाद ऋषिकेश पहुंचा। वहां एक सज्जन से भेंट हुई जिन्होंने दृढ़ता के साथ कहा— 'आप गोमूत्र का प्रयोग करें। समस्त व्याधियों से पूरी तरह मुक्त हो जायेंगे। उन्होंने मुझे बताया कि चाय के कप के बराबर गोमूत्र लो, उसे कपड़े की आठ तह करके उसमें छान लो। इसे बढ़ाकर पाव-डेढ़ पाव तक कर लेना। कुछ गोमूत्र को धूप में रख दें अगले दिन उसे शरीर पर मलो। फिर देखना कि तमाम रोगों से छुटकारा मिलता जायेगा।

मैंने पहले दिन एक कप गोमूत्र पिया तो मुझे उल्टी हो गई। मैंने दृढ़ संकल्प लेकर दूसरे दिन फिर पिया तो वह पेट में जाकर पच गया। सूर्य की किरणों के सामने रखे गोमूत्र को पूरे शरीर में मला। इस मालिश से शरीर की चमड़ी कड़ी से नरम होने लगा। गोमूत्र ने कुछ ही दिनों में अपना चमत्कार दिखाना शुरू कर दिया। शरीर से कफ निकलना शुरू हो गया। खांसते-खांसते मेरा बुरा हाल हो जाता था। गोमूत्र के सेवन से खांसी भी कम होती गई।

मैंने पारिवारिक चिकित्सक से जांच कराई तो उन्होंने बताया कि आपके स्वास्थ्य में काफी बदलाव है तथा रोगों पर तेजी से नियंत्रण हो रहा है। किन्तु उन्होंने कुछ दिन गोमूत्र सेवन रोक देने का सुझाव दिया। मैं दुविधा में पड़ गया कि क्या करूं? ऐसी स्थिति में परमपूज्य स्वामी श्री रामसुखदास जी महाराज की 'आखिर अन्तिम राम सहारा' सूक्ति का सहारा लिया। मुझे उसी समय महान भागवत संत पूज्य डोंगरे जी महाराज द्वारा गोमाता के दुग्ध तथा गोमूत्र के महत्त्व पर दिए गए प्रवचन की कुछ पंक्तियों ने प्रेरित कर निरन्तर गोमूत्र सेवन करते रहने को प्रेरित किया।

मैं प्रतिदिन गोमूत्र, गोदुग्ध तथा गाय के दूध का दही मट्ठा प्रयोग करने लगा। साथ में हरी सब्जियां व फुलका लेता रहा। एक वर्ष के इस निरन्तर प्रयोग से मेरा शरीर समस्त रोगों से पूरी तरह मुक्त तो हो ही गया मानसिक तनाव, क्रोध तथा अन्य मानसिक व्याधियों से भी गोमाता ने मुझे मुक्ति दिला दी। मैंने यह भी अनुभव किया कि देशी भारतीय गाय का मूत्र विशेष गुणकारी होता है। बच्चों की घुट्टी में यदि गोमूत्र की कुछ बूंदे मिलाकर पिलाएं तो बच्चा अनेक रोगों विशेषकर पेट के विकार से मुक्ति पा लेता है। लगातार गोमूत्र का सेवन करने से रक्त का दबाव स्वाभाविक हो जाता है।

गोमूत्र पेट के समस्त विकारों, लीवर की खराबी को दूर कर शरीर में स्फूर्ति पैदा करता है। गोमूत्र सवेरे खाली पेट सेवन करें तथा उसके बाद एक घंटे तक कुछ न लें।

मैं गोमाता की कृपा से पूरी तरह निरोगी होकर कई वर्षों से अपनी जन्मस्थली बिहार को त्याग कर उत्तर भारत के प्रभाव तीर्थ गढ़मुक्तेश्वर के वृजघाट स्थित मां गंगाके तट पर रहकर साधना में लीन हूं। मेरे पास ही भक्त क्रांतिप्रसाद अग्रवाल (मेरठ वाले) रहते हैं। गंगा मां के स्नान, उसके पावन जल के सेवन, एकान्त में जीवन बिताते समय जो हार्दिक संतोष प्राप्त हो रहा है उसका मैं वर्णन नहीं कर पाता। किन्तु उस समय मुझे हार्दिक वेदना होती है जब मैं गोवंश की नृशंस हत्या किये जाने की छूट तथा गोमांस से विदेशी मुद्रा कमाये जाने की बढ़ती प्रवृत्ति के समाचार सुनता हूं। गोवंश जैसी अमूल्य निधि के साथ यह अत्याचार अविलम्ब बन्द किया जाना चाहिए।

**प्रस्तोता–शिवकुमार गोयल**

# सौ, पांच और एक सौ पांच

□ तेज बहादुर गौतम

द्वैतवन में एक बड़ा सा तालाब था। तालाब के किनारे ऊंचे-ऊंचे छायादार पेड़ थे। आसपास चारों ओर हरियाली ही हरियाली थी। रंग-बिरंगे फूलों की कतार की कतार खड़ी थीं। तालाब की शोभा देखते ही बनती थी।

पाण्डव भी वनवास के दिनों में द्वैतवन में आये। द्रौपदी को यह तालाब बहुत पसन्द आया। युधिष्ठिर से बोली, "महाराज! इस तालाब की शोभा कितनी अच्छी है? क्यों न हम कुछ समय यहीं बितायें?"

नकुल और सहदेव को भी यह स्थान बहुत पसन्द आया और बोले, "हां भैया, कुछ समय यहीं रहेंगे।" युधिष्ठिर ने वहां ठहरने की आज्ञा दे दी। पाण्डवों ने एक कुटी बना ली और वहां रहने लगे।

शकुनि को पता लगा कि पाण्डव द्वैतवन में ठहरे हैं। तुरन्त दुर्योधन के पास गया। कहने लगा, "राजन्! सुना है, आजकल पाण्डव लोग द्वैतवन में ठहरे हुए हैं। चलिये खूब ठाठ-बाट से वहां चलें। सुन्दर-सुन्दर वस्त्र पहिनकर चलें। पाण्डव तो संन्यासियों के से पीले वस्त्र पहिनते हैं। हमें राजसी ठाठ-बाट में देख वे चिड़ेंगे।"

दुर्योधन बोला, "शकुनि! मुझे पाण्डवों को पीले वस्त्र पहिने और फल-फूल खाते देख जैसी खुशी होगी, वैसी सारे पृथ्वी का राजा बनकर भी न होगी। परन्तु वहां जाने की आज्ञा महाराज से किस प्रकार ली जाये? कर्ण तुरन्त बोला, "आजकल हमारी गायों का झुण्ड द्वैतवन में ही है महाराज से गायों की गिनती करने और उन पर निशानी लगाने के लिये आज्ञा ले लेंगे।" महाराज ने पुत्रों के मोह में आकर जाने की आज्ञा दे दी।

दुर्योधन अपने साथ एक बहुत बड़ी सेना लेकर हस्तिनापुर से चला। उसके साथ वे रानियां तथा राजमहल की दूसरी स्त्रियां थीं। बड़ी शान से दुर्योधन का लश्कर द्वैतवन पहुंचा। पहिले तो गायों की गिनती और निशान लगाने का काम पूरा किया। उसके पश्चात् कौरवों के सैनिक आसपास घूमने निकल गये। घूमते-घूमते सभी सैनिक तालाब के पास पहुंचे। तालाब की छटा सबके मन भा गई। महाराज दुर्योधन ने तालाब में नहाने तथा खेलने-कूदने की आज्ञा दे दी। सैनिक तालाब में खेलकूद का प्रबन्ध करने चल दिये। वे तालाब के किनारे आये।

तालाब में पहिले से ही दूसरे देश के राजा चित्रसेन और उसके साथी स्नान कर रहे थे। कौरवों के सैनिकों ने चित्रसेन से कहा, "महाराजाधिराज दुर्योधन तालाब में नहाने आ रहे हैं। आप लोग तालाब खाली कर दीजिये।

यह सुनकर वे चिढ़ गये। राजा चित्रसेन के सैनिकों ने तालाब खाली करने से मना कर दिया। दुर्योधन ने अपने भाइयों को सेना लेकर राजा चित्रसेन को मार भगाने की आज्ञा दे दी। कौरव सेना ने राजा चित्रसेन पर धावा बोल दिया। राजा चित्रसेन बड़ा ही वीर था। उसके सैनिक बड़े अच्छे लड़ाके थे। उन्होंने बड़ी वीरता से कौरवों का सामना किया। घमासान लड़ाई हुई। चित्रसेन के सामने कौरवों की एक न चली। चित्रसेन ने दुर्योधन और उसके भाइयों तथा स्त्रियों को बन्दी बना लिया। कौरवों के बचे-खुचे सैनिक पाण्डवों के पास पहुंचे। युधिष्ठिर को लड़ाई का सारा हाल कह सुनाया। बोले, 'महाराज दुर्योधन को बचाइये। कौरव कुल की लाज रख लीजिये। चित्रसेन दुर्योधन आदि के साथ राज्यलक्ष्मियों को भी पकड़ कर ले जा रहा है।"

बीच ही में भीम बोल पड़ा, "ठीक है, जो काम हमें

## डूब न जाये . . .

अनहोनी के भोग प्रबल हैं,
यह सरकार हुई पिलपिल्ली।
राव चलाते चप्पा-चप्पू,
घातक नदिया बांस न बल्ली।
फिर चुनाव के घाट निकट है,
जन-जोहड़ में हल्लाहल्ली।
तेरह छिद्रों की नौका ये,
डूब न जायें हरदनहल्ली।
राजनीति के सरकण्डों में,
कहां टिकेगी टूटी झल्ली।
धूमकेतु प्रति ग्रहमण्डल पर,
घूम रहा पढ़लो भृगुवल्ली।

भिक्षु दिवस्पुत्र भारथी

बाद में करना पड़ता, उसे चित्रसैन ने अभी कर दिया। दुर्योधन बड़ा दुष्ट है। लगता है, यहां हमें चिढ़ाने आया होगा। सोचा होगा, पाण्डवों को अपने ठाठ-बाट दिखाऊंगा। जो दूसरों को नीचा दिखाने की सोचता है, स्वयं ही नीचा देख जाता है।" भीम दुर्योधन से बहुत ही रुष्ट था। वह अवसर की ताक में था। आज उसे अवसर मिल गया। तीखी वाणी में बोला, "हम तो वनवासी हैं। सर्दी, धूप और गर्मी सहकर दुर्बल हो गये हैं। दुर्योधन हमें इस हाल में देखकर प्रसन्न होना चाहता था। जैसी करनी वैसी भरनी।" भीम क्रोध में थे। युधिष्ठिर ने कहा, "भीम! यह समय कड़वी बातें सुनाने का नहीं है। ये लोग हमारी शरण में आये हैं। हम से सहायता चाहते हैं। शरण आये की सहायता करनी ही चाहिये।"

भीम बोला, "भैया, आप तो धर्मराज हो। इनकी बातों में आ गये। क्या आप भूल गये कि यह दुर्योधन की दुष्टता का ही फल है कि हम वन-वन मारे-मारे फिर रहे हैं? इस पर भी आप कहते हैं कि हमें उसकी सहायता करनी चाहिये। सांप को कितना भी दूध पिलाओ, जब काटेगा तो जहर ही उगलेगा। दुर्योधन सांप है। उसको दण्ड मिलना ही चाहिये। अच्छा है, चित्रसैन ने उसे बन्दी बना लिया है। अब उसका घमण्ड चूर होगा।"

युधिष्ठिर ने कहा, "भीम ऐसा क्यों कहते हो? परिवार वालों में मन-मुटाव हो ही जाता है। लड़ाई-झगड़े भी होते रहते हैं। कभी-कभी उनमें वैर भी ठन जाता है, किन्तु जब बाहर का कोई व्यक्ति उनसे लड़ने आता है तो वे इस अपमान को सहन नहीं करते। कौरव हमारे भाई हैं। हमारा आपस में मतभेद है, झगड़ा है, वैर सही। पर आज जब दूसरे राजा ने कौरवों को बन्दी बना लिया है, राजमहल की लक्ष्मियों को बन्दी बना लिया है, यह हमारे कुल की लाज का प्रश्न है।

"सुनो भीम! आपस की लड़ाई में हम पांच और वे सौ हैं (कौरव सौ भाई थे) और यदि दूसरा हमसे लड़ता है तो हम सौ और पांच, एक सौ पांच हैं। जाओ तुम अर्जुन, नकुल, सहदेव इनके साथ जाओ और अपने भाईयों को छुड़ाकर लाओ। यदि छुड़ाने के लिये लड़ाई भी करनी पड़े तो पीछे नहीं हटना"

अर्जुन, भीम आदि भाई बड़े भाई की आज्ञा मान युद्ध की तैयारी करने लगे। वे जाकर चित्रसेन से बलपूर्वक दुर्योधन को छुड़ा लाये। ❑

## वैदिक मूल्य पीढ़ीगत दरारों को पाटने में सहायक : हिन्दुजा

विश्व प्रसिद्ध कैंब्रिज विश्वविद्यालय के प्रांगण में वैदिक ऋचाओं की गूंज ने इंग्लैंड के इस अलबेले नगर का वातावरण ही बदल दिया। अवसर था इस ऐतिहासिक विश्वविद्यालय के देवज्ञ विद्या विभाग द्वारा आयोजित एक वैदिक सम्मेलन का आयोजन। विद्यार्थियों और हिन्दू परम्परा के जिज्ञासुओं से खचाखच भरे सभागृह में पूरे इंग्लैंड से आने वाले हिन्दू परम्परा के विद्वान और अध्येता उपस्थित थे।

आज की विषमताओं और अंतर्विरोधों से भरे युग में हिन्दू जीवन परम्परा और हिन्दुत्व की अवधारणा को सुख की कुंजी बताते हुए अनेक विद्वानों ने सम्मेलन को संबोधित किया। वक्ताओं में ब्रिटेन के विश्वविद्यालयों के वैदिक विद्वान सम्मिलित थे, जिनमें बारबिक विश्वविद्यालय के डा० नेसबिट, ल्यूबिन विश्वविद्यालय के डा० केलवार्ट, लैकेस्टर विश्वविद्यालय के डा० स्मिथ और लीड्स विश्वविद्यालय के डा० नौट अग्रणी हैं। अनेक विद्वानों ने 'हिन्दू परम्परा में युवा और युवापन' को अपने कथन का केन्द्र बनाया।

कैंब्रिज विश्वविद्यालय का वैदिक विद्या संकल्प धरम हिन्दुजा वैदिक शोध संस्थान के साथ इस तरह से अंतरराष्ट्रीय आयोजनों के द्वारा लगातार पश्चिमी जगत् में वैदिक परम्परा की अलख जगा रहा है।

धरम हिन्दुजा वैदिक शोध संस्थान ने कैंब्रिज विश्वविद्यालय के साथ-साथ न्यूयार्क और नई दिल्ली में भी अपने केन्द्र स्थापित किये हैं। लंदन स्थित हिन्दुजा परिवार द्वारा स्थापित इन संस्थानों के प्रति स्थानीय जनता और भारतवंशीय समुदाय में गहरी ललक देखी जा रही है। सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए श्री धरम हिन्दुजा वैदिक शोध संस्थान के प्रेरक श्री श्रीचंद हिन्दुजा ने कहा, "आज के माता-पिता और बच्चों के बीच बढ़ती हुई दूरी को वैदिक परम्परा की समझ पाट सकती है। राम और कृष्ण का उदाहरण इसका जीवंत प्रमाण है। आज के युग में मानवीय मूल्यों का जिस तरीके से ह्रास हुआ है, उसको देखते हुए हमें अपनी सांस्कृतिक जड़ों की ओर लौटना अनिवार्य सा लग रहा है आज के युवा के लिए जरूरी है कि वह आध्यात्मिकता और तकनीकी प्रगति में संतुलन स्थापित करके चले।"

श्री हिन्दुजा वैदिक शोध संस्थान कैंब्रिज विश्वविद्यालय की सहायता से विदेशी और भारतवंशीय युवकों को यह आधार प्रदान करने की कोशिश कर रहा है।

श्री हिन्दुजा ने यह भी कहा कि "उस युग के युवकों ने यांत्रिक-भौतिक विकास और आध्यात्मिक विकास के बीच संतुलन बनाये रखा था।" उन्होंने शैक्षणिक जगत से यह अपील की कि वह ऐसी सुविधाएं उपलब्ध कराएं और ऐसे वांछित पाठ्यक्रमों को प्रस्तुत कराएं जिससे 'युवकों की आवश्यकताओं को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की जा सके।'

# आन्तरिक वस्त्रों में अग्रणी-ग्रोवर सन्स

आजकल के इस कम्प्यूटर युग में महिलाओं की इच्छाओं के साथ-साथ उनकी आवश्यकताओं में भी अनेक परिवर्तन हुए हैं। कल की सुविधाएं आज की जरूरत बन गई हैं इस तरह महिलाओं के रहन-सहन में आधुनिक क्रांति आई है। लेकिन रेडीमेड वस्त्रों में पहला क्रांतिकारी परिवर्तन आज से करीब १०० साल पहले ही हो गया जब फ्रांस के हरनाम रेडशेली ने पैरिस में ब्रेजियर का आविष्कार किया था। तब से आज तक में ब्रेजरी उद्योग में अनेक परिवर्तन हुए हैं। आज से लगभग तीस वर्ष पूर्व महिलाओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए चमन लाल ग्रोवर के नाम से अंतरराष्ट्रीय स्तर के ब्रा एवं पैंटीज का उत्पादन शुरू किया।

ग्रोवर सन्स के ब्रा एवं पैंटिज सादे डिज़ाइनों के साथ-साथ एक से बढ़कर एक फैंसी, डिज़ाइनों में उपलब्ध हैं। जो सूती, रूबिया, टेरीकाट, कैमारिक तथा विभिन्न सिंथेटिक कपड़ों तथा नायलान लैस के कपड़ों से बनाई जाती हैं। दिल्ली के प्रसिद्ध व्यापारिककेन्द्र करोल बाग के ग्रोवर सन्स के डायरेक्टर राकेश ग्रोवर ने एक भेंट में बताया कि ग्रोवर सन्स द्वारा बनाए जा रहे स्पर्श शालिनी, सरिता ब्रा एवं पैंटीज की फैंसी रेंज के सभी प्रांतों के हर वर्ग की महिलाओं के फैशन के अनुसार आधुनिक डिजाइन में बनाए जाते हैं।

# समाचार दर्शन

## लन्दन में आर्य समाज की १२१ वीं जयन्ती

१६ जून १९९६ को लन्दन के इंग्लिश टाउन हाल के विशाल सभागार में आयोजित एक भव्य समारोह में ग्रेट ब्रिटेन की सभी आर्य समाजों तथा विभिन्न हिन्दू संगठनों के प्रतिनिधियों ने युग पुरुष महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित की। समारोह का आयोजन कांग्रेस आफ आर्य समाज ऐब्रोड तथा डी० ए० वी० एजूकेशन सोसाइटी यू० के० के तत्त्वावधान में किया गया। कार्यक्रम ध्वजारोहण से प्रारम्भ हुआ जिसमें आर्य समाज लन्दन की वेदपाठ ग्रुप तथा अन्य बहनों ने ध्वजगान तथा संगठन सूक्त का पाठ किया। समारोह के संचालक श्री गिरीश चन्द्र खोसला ने सी.ए.एस.ए. का परिचय देते हुए बताया कि सार्वदेशिक सभा के आशीर्वाद से विदेशी प्रतिनिधि सभाओं का यह संगठन पिछले ३ वर्षों से भारत से बाहर की आर्य संस्थाओं को एक सूत्र में पिरोने के लिये परिश्रम कर रही है जिससे की सभी सभाएं एकमंच पर एकत्रित होकर अपने अनुभव, समस्याएं, प्रचार कार्यों पर विचार करते हुए सामूहिक योजना बना सकें, तथा सबका आपस में सम्पर्क रहते हुए अपने-अपने स्थानों पर आर्य समाज का कार्य सुचारु रूप से करें। इसी योजना के अन्तर्गत सी.ए.एस.ए. के प्रतिनिधि मंडल ने गत वर्ष पूर्वी अफ्रीका, दक्षिणी अफ्रीका तथा ब्रिटेन की सभी समाजों का दौरा किया तथा लगभग ४० बैठकों में भाग लिया।

डी० ए० वी० सोसाईटी के प्रधान श्री रोशन लाल भंडारी ने प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए बताया कि शीघ्र ही ब्रिटेन में डी० ए० वी० की गतिविधियों को आगे बढ़ाया जाएगा। श्री मदन मोहन शर्मा, आर्य समाज बरमिंघम के प्रधान श्री चन्द्रकान्त प्रिंजा, आर्य समाज कावेन्ट्री के मंत्री श्री रमेश ओबराय, वैदिक कल्चर के प्रधान श्री यशपाल गुप्ता ने अपनी-अपनी संस्थाओं का परिचय देते हुए गतिविधियों तथा भावी कार्यक्रमों के बारे में बताया। सी.ए.एस.ए. के प्रचार मंत्री श्री चमन लाल गुप्ता ने अपने प्रभावशाली भाषण में बताया कि आर्य समाज तथा हिन्द की संस्थाओं में बहुत भ्रान्तियां फैली हुई हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हिन्दुओं की रक्षा तथा उन्नति के लिये अपना बलिदान दे दिया। कुछ स्वार्थी लोग व्यर्थ में आपस में वैमनस्य फैला रहे हैं। करतल ध्वनि के मध्य श्री गुप्ता ने कहा कि आर्य समाज तथा अन्य हिन्दू संस्थाएं एक कैंची के दो फाल की तरह है तथा हम वेद की कील से जुड़े हैं। केवल पूजा पद्धति की बात को लेकर हम कभी अलग नहीं हो सकते बाकी सब कार्यक्रम हमारे एक हैं तथा हमें मिलकर कार्य करना होगा। अधिवेशन में वैदिक वक्ताओं ने विभिन्न विषयों पर अपने विचार रखे तथा कहा कि इन विचारों को शीघ्र ही कार्यान्वित होना चाहिए। अन्त में युवा कार्यक्रम में नीरज पाल का भाषण, अन्नपूर्णा मिश्रा का गायन तथा नेहा ढढवाल का नृत्य प्रस्तुत किया गया जिसे बहुत सराहा गया।

## अमृत महोत्सव में बालेश्वर अग्रवाल का अभिनन्दन

देश के जानेमाने पत्रका, देश की पहली हिन्दी संवाद समिति 'हिन्दुस्थान समाचार' के संस्थापक-सम्पादक, अन्तराष्ट्रीय सहयोग परिषद् के महासचिव तथा अग्रोहा विकास परिषद् आदि दर्जनों संस्थाओं के माध्यम से विगत ४५ वर्षों से समाज सेवा के लिए समर्पित बालेश्वर अग्रवाल का उनके जीवन के ७५ वर्ष पूर्ण होने पर 'अमृत महोत्सव' मनाकर हार्दिक अभिनन्दन किया गया।

धर्म भवन, साउथ एक्सटेंशन नई दिल्ली में आयोजित 'अमृत महोत्सव' समारोह में उन्हें राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के वरिष्ठ व वयोवृद्ध कार्यकर्ता श्री बसन्तराव ओकने शॉल ओढ़ाकर आशीर्वाद दिया। दिल्ली विधान सभा के अध्यक्ष चरती लाल गोयल; पूर्व सांसद श्री कृष्ण मोदी, सांसद के०आर० मलकानी, वेद प्रकाश गोयल तथा समाजसेवी लाला रामेश्वर दास गुप्त ने उन्हें तिलक लगा माल्यार्पण कर ७५ हजार रुपए की थैली भेंट की। श्री बालेश्वर अग्रवाल ने जब उन्हें प्रदत्त ७५ हजार रुपए एक न्यास बनाकर सेवा कार्यों में लगाए जाने की घोषणा की तो वहां उपस्थित पत्रकार, साहित्यकार तथा समाजसेवी प्रसन्नता से आह्लादित हो उठे।

इस अवसर पर देश के जानेमाने पत्रकार तथा जागरण के प्रधान सम्पादक श्री नरेन्द्र मोहन ने कहा कि वे सन् १९५४ से छात्रावस्था से बालेश्वर जी से पत्रकारिता की प्रेरणा लेते रहे हैं। वे मेरे पिताश्री (लाल पूरनचन्द गुप्ता) के अनन्य सहयोगी रहे हैं। इसलिए मैं उन्हें 'पूज्य चाचा जी' की तरह आदर देता रहा हूं। बालेश्वर जी की पत्रकारिता का आदर्श राष्ट्रभक्ति तथा राष्ट्र सेवा रहा है।

***दयानन्द संस्थान के कार्यों में सहयोगी श्री अग्रवाल जी के प्रति हमारी शुभकामनाएं।—सं०***

# जिसके घर में वेद नहीं वह हिन्दू का घर नहीं

## (परमात्मा की अमर वाणी)

# चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

**लागत मूल्य १२००/-रुपये**
**अभी लेने पर ९००/-रुपये में**

[मन्त्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित]

२३×३८ से०मी० साइज में, पृष्ठ २२००
बढ़िया सुनहरी जिल्दें। वजन लगभग ८ किलो

श्रेष्ठ बढ़िया पेपर पर २४००रु० अब १८०० रु० में प्राप्त करें

आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा 1/2 धन अवश्य भेजें।

पं० राकेशरानी अध्यक्ष **दयानन्द संस्थान**
**वेद मन्दिर** महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, इब्राहीमपुर, दिल्ली-३६

सम्पर्क कार्यालय : २२८६, आर्य समाज मार्ग, करोल बाग,
नई दिल्ली-११०००५ दूरभाष-५७२४७४१

जन-ज्ञान (मासिक) वेद मंदिर महात्मा-वेदभिक्षुः सेवाश्रम लेखरामनगर (इब्राहीमपुर) पो.आ. मुखमेलपुर, दिल्ली-110036

श्रावण सम्वत्—2053
अगस्त 1996

Posted at N.D. PSD or
Date 5 & 6-Delhi Postal
Registration No. DL-11185/96
R.N. 10719.65

## प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

| | | |
|---|---|---|
| 1. | चारों वेदों का हिन्दी भाष्य | मूल्य 1200 रू. |
| 2. | सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं. विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड) | 101 रू. |
| 3. | वेद-ज्योति चारों वेदों के चुने हुये 100-100 मन्त्रों की व्याख्या) | 30 रू. |
| 4. | वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मन्त्रों की व्याख्या) | 50 रू. |
| 5. | सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या) | 50 रू. |
| 6. | भारत के वीर बच्चों की कहानियां | 6 रू. |
| 7. | संस्कार विधि (सजिल्द) | 30 रू. |
| 8. | सरस्वतीन्द्र जीवन (महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र) | 50 रू. |
| 9 | महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन परिचय) | 10 रु० |
| 10 | धर्म का सार (धर्म का रहस्य बताने वाली कथाएं) | 6 रु० |
| 11 | स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (जीवन परिचय) | 4 रु० |
| 12. | वादक सम्पात्त | 151 रू. |
| 13. | धर्म का मार्ग (धर्म के दस लक्षणों की सरल व्याख्या) | 6 रू. |
| 14. | योगासन | 4 रू. |
| 15. | योग और ब्रह्मचर्य | 6 रू. |
| 16. | Concept of God | 50 रू. |
| 17. | श्रीमद्दयानन्द प्रकाश | 50 रू. |
| 18. | Light of Truth | 80 रू. |
| 19. | प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री) | 10 रू. |
| 20. | वैदिक गीता का सरल हिन्दी भाष्य | 50 रू. |
| 21. | संक्षिप्त महाभारत | 50 रू. |
| 22. | संक्षिप्त रामायण | 15 रू. |
| 23. | ऋग्वेद-शतकम | 6 रू. |
| 24. | वैदिक सान्ध्य गीत | 6 रू. |
| 25. | गायत्री मन्त्र का चार्ट, हिन्दी व्याख्या सहित दोनों ओर पत्ती लगा, कम से कम दस प्रति मंगायें | 3 रू. |

100 से अधिक साहित्य पर कमीशन 15 प्रतिशत 300 से अधिक लेने पर 20 प्रतिशत तथा 500 से अधिक लेने पर 25 प्रतिशत होगा। आदेश के साथ चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

## हिन्दू धर्म रक्षक साहित्य बांटिये

| | | |
|---|---|---|
| 1. | मोपला (उपन्यास) - वीर सावरकर | 6.00 रू. |
| 2. | क्या आप सारा भारत दारूल इस्लाम बनने देंगे ? | 1.00 रू. |
| 3. | हिन्दुओं को चेतावनी - वेदभिक्षुः | 1.00 रू. |
| 4. | भारत के मुसलमानों का क्या करें ? - वेदभिक्षुः | 1.00 रू. |
| 5. | हम सब हिन्दू हैं - वीर सावरकर | 1.00 रू. |
| 6. | पोस्टर दो प्रकार के | 2.00 रू. |
| 7. | इस्लाम में क्या है ? - "राकेश रानी; | 1.00 रू. |
| 8. | इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियाँ- -जहीर नियाजी | 1.00 रू. |
| 9. | हिन्दू जागो! देश बचाओ | 1.00 रू. |
| 10. | इस्लाम - एक परिचय | 1.00 रू. |
| 11. | A Challange to the Christian Faith | 50 पैसे |
| 12. | पोप की सेना का भारत पर हमला -वेदभिक्षुः | 1.00 रू. |
| 13. | पादरियों को चुनौती | 1.00 रू. |
| 14. | बाईबल की चुनौती | 1.00 रू. |
| 15. | क्या ईसा खुदा का बेटा था ? | 1.00 रू. |
| 16. | और पादरी भाग गया | 1.00 रू. |
| 17. | Christianity Unmasked | 2 रू. |
| 19. | हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ? | 1.00 रू. |
| 20. | क्या भारत का एक और विभाजन होगा ? | 1.00 रू. |
| 21. | हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का संदेश | 1.00 रू |
| 22. | हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा। | 1.00 रू. |
| 23. | जनज्ञान का 'सावरकर विशेषांक' | 6 रू. |
| 24. | जनज्ञान का 'क्रान्तिदूत विशेषांक' | 6 रू. |

"हिन्दू धर्म रक्षक" साहित्य की 1000 पुस्तकें मंगाने पर 50 प्रतिशत और 500 पुस्तकें मंगाने पर 25 प्रतिशत कमीशन है। प्रत्येक आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा कम से कम चौथाई धन अग्रिम भेजें।

व्यवस्थापक - दयानन्द संस्थान
2286-आर्य समाज मार्ग, नई दिल्ली-5